दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

jaipurtimes.org
twitter.com/JaipurTimes2
dainikjaipurtimes
youtube.com/c/JaipurTimes
instagram.com/jaipurtimesjt

वर्ष : 10 | अंक : 17 | ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 | जयपुर, गुरूवार 6 फरवरी, 2025 | ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 | ■ मूल्य : 1.5 रुपए | ■ पृष्ठ : 8+2

विकास भी-विरासत भी' की अवधारणा के साथ काम कर रही राज्य सरकार

मंदिर राजस्थान की सनातन संस्कृति की आत्माः सीएम

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि मंदिर सनातन संस्कृति की आत्मा हैं। धार्मिक आस्था के प्रतीक होने के साथ-साथ मंदिर हमारी सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना के भी प्रमुख केन्द्र हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर काम कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल ने शर्मा बुधवार को जालोर के नरसाणा में श्री दुदेश्वर महादेव मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मंदिरों ने भारतीय परंपराओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित करने का काम किया है। उन्होंने नरसाणा में भव्य दुदेश्वर महादेव मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई दी और कहा कि यहां भोले भंडारी महादेव की कृपा बरसेगी और यह मंदिर एक महत्वपूर्ण आस्था स्थल के रूप में उभरकर सामने आएगा।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सनातन संस्कृति को मिली नई ऊर्जा

मुख्यमंत्री ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सक्षम नेतृत्व से देश में सनातन संस्कृति को एक नई ऊर्जा मिली है। प्रधानमंत्री 'विकास भी-विरासत भी' की अवधारणा को आत्मसात करते हुए चल रहे हैं। उनके नेतृत्व में 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद अयोध्या में भव्य मंदिर में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा, भव्य काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन में महाकाल कॉरिडोर, सोमनाथ मंदिर के विकास कार्य और केदार घाटी का पुनर्निर्माण हुआ है।

सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के लिए सरकार कर रही निरंतर काम। सीएम शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में हमारी सरकार प्रदेशभर में मंदिरों व आस्था स्थलों के विकास कार्य करवा रही है। हमारी सरकार वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना के तहत श्रद्धालुओं को अयोध्या, पशुपतिनाथ, काठमांडू व अन्य तीर्थस्थलों की यात्रा करवा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की ओर से खाटूश्याम मंदिर के लिए 100 करोड़ रुपये के कार्य, पूंछरी का लौठा में विकास कार्य, 600 मंदिरों में विभिन्न अवसरों पर विशेष साज-सज्जा और आरती कार्यक्रम, पुष्कर अजमेर में ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर सहित आस्थाधामों के लिए सौंदर्यीकरण और आधारभूत सुविधाओं के कार्य करवाए जा रहे हैं।

राज्य सरकार ने प्रदेश के विकास का रोडमैप किया तैयार÷

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश के विकास के लिए रोडमैप तैयार किया है। ईआरसीपी, यमुना जल समझौता, देवास परियोजना जैसे निर्णयों से जहां पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा रहा है। वहीं, प्रदेश को बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से लगातार एमओयू किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के युवाओं को पांच वर्ष में चार लाख सरकारी नौकरी देकर युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। पेपरलीक प्रकरणों पर सख्त कार्यवाही करते हुए भर्ती परीक्षाएं अब पारदर्शिता के साथ आयोजित हो रही हैं। उन्होंने कहा कि महिला, युवा, मजदूर और किसानों के हित के लिए राज्य सरकार कार्य कर रही है। हमने संकल्प पत्र में किए गए 50 प्रतिशत से अधिक वादे पूरे कर लिए हैं तथा प्रत्येक वादे को पूरा करने के लिए हम कृतसंकल्पित हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री ने दुदेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली व सुख-समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर सांसद लुंबाराम चौधरी सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, संत व बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

पेपरलीक पर कांग्रेस सरकार को जमकर कोसा

एक लाख युवाओं को इस साल देंगे सरकारी नौकरी : मुख्यमंत्री भजनलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर भीनमाल(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार दोपहर को भीनमाल पहुंचे। जहां उन्होंने नरसाणा स्थित प्रसिद्ध श्री दूदेश्वर महादेव मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में हिस्सा लिया। साथ ही सभा को संबोधित किया। इस दौरान सीएम ने पूर्ववर्ती सरकार पर पेपर लीक को लेकर निशाना साधा। इस दौरान सीएन ने युवाओं को नौकरी और किसानों के हित में काम करने का भरोसा दिया।

पेपर लीक को लेकर गहलोत सरकार पर निशाना

सीएम ने कहा कि%पहले आए दिन पेपर लीक हो जाते थे। पिता विश्वास करता था। बेटा-बेटी उन्हें विश्वास दिलाते थे कि परीक्षा में पास होकर उनके सहयोग में काम करेंगे। मगर 19 में से 17 पेपर लीक करके युवाओं के सपनों को बर्बाद करने का काम किया तो कांग्रेस की सरकार ने किया। आपने देखा होगा कि एक साल में एक भी पेपर आउट नहीं हुआ। नौकरियों को लेकर सीएम ने कहा कि%हमने कहा कि हम एक साल में एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी देने का काम करेंगे। हमने 60 हजार नौकरी अब तक दे दी हैं। 15 हजार अगले महीने तक दे देंगे। जुलाई तक एक लाख युवाओं को नौकरी देने का काम किया जाएगा। सीएम की जालोर सिरोही सांसद लुंबाराम चौधरी ने अगुवानी की। सीएम ने कहा कि मैं आप की तरह ही गांव से निकलकर आया हूं। गांव की माता-बहनों की पीड़ा को भी जानता हूं। मेरे किसानों की पीड़ा को भी जानता हूं। युवाओं की पीड़ा को भी जानता हूं। मैं गरीब की पीड़ा को भी जानता हूं।

सरकार सभी वादों को पूरा करेगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने वादों को पूरा करते हैं, उसी तरह उनकी सरकार भी अपने सभी वादों को पूरा करेगी। केंद्र से मिलने वाली प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अतिरिक्त राज्य सरकार भी किसानों को लाभ प्रदान करेगी। महिलाओं के कल्याण पर विशेष ध्यान देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा-सरकार महिलाओं और बहनों के जीवन स्तर में सुधार के लिए विशेष कार्यक्रम चलाएगी। उन्होंने भारतीय सनातन संस्कृति की महत्ता पर भी प्रकाश डाला और कहा कि मंदिर हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को आस्था और संस्कृति से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दोपहर 2÷40 पर हेलिकॉप्टर से कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। जहां सांसद लुंबाराम चौधरी और पूर्व जिला अध्यक्ष श्रवण सिंह ने उनका स्वागत किया। आयोजन में बड़ी संख्या में लोग मौजूद हैं। आयोजन में बड़ी संख्या में लोग मौजूद हैं। इस दौरान सीएम के साथ मंच पर पूनासा महंत बाबूगिरी महाराज, गजीपुरा महंत प्रेम भारती महाराज, भाडू महंत शिवगिरी महाराज, जालौर सिरोही सांसद लुंबाराम चौधरी, विधायक डॉ समरजीत सिंह, पूर्व विधायक नारायण सिंह देवल, सांवलाराम देवासी, भाजपा प्रदेश महामंत्री, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष श्रावणसिंह राव, जिला प्रमुख राजेश राणा, भाजपा जिलाध्यक्ष जसराज पुरोहित, मोहनलाल सुथार, विजय सिंह, रमेश राजपुरोहित, टीकमसिंह राणावत, बलवत सिंह, महेंद्र बोहरा, ओम प्रकाश माली मौजूद रहे।

एक्जिट पोल

दिल्ली में भाजपा फतह, ढह गया आप का किला

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल फिर से सरकार बना पाएंगे या भाजपा लंबे समय बाद देश की राजधानी में सत्ता हासिल करेगी या फिर कांग्रेस कोई बड़ा उलटफेर करेगी... दिल्ली में विधानसभा चुनाव का मतदान समाप्त होने के बाद अब सभी के मन में यहीं सवाल घूम रहा है। दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों पर 5 फरवरी को शाम 6 बजे तक मतदान हुआ। मतदान के बाद अब काउंटिंग का इंतजार है. दिल्ली विधानसभा चुनाव का नतीजा 8 फरवरी को आएगा। उससे पहले दिल्ली में मतदान समाप्त होते ही अलग-अलग सर्वे एंजेसियों ने एग्जिट पोल जारी किया है। इन एग्जिट पोल में संभावित नतीजों को लेकर चौंकाने वाले संकेत सामने आए हैं।

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 एग्जिट पोल:

दिल्ली विधानसभा चुनाव के पर एजेंसियों के एग्जिट पोल आ गए हैं। जिसमें भाजपा और आम आदमी पार्टी में कांटे की टक्कर बताई जा रही है। हालांकि लीड भाजपा के खाते में दिखाया जा रहा है। मैट्रिज के एग्जिट पोल में आप को 32-37 सीटें बताई जा रही है। जबकि भाजपा को 35-40 सीट मिलने का अनुमान जताया जा रहा है। वहीं कांग्रेस को 0-1 सीट का अनुमान बताया जा रहा है। वहीं पीपुल्स इनसाइट के एग्जिट पोल में आप को 25-29 तो भाजपा को 40-44 सीटों पर जीतने का अनुमान लगाया गया है. पीपुल्स इनसाइट ने भी कांग्रेस को 0-1 सीट का अनुमान जताया है। बात पीपुल्स प्लस की करें तो उसने आप को 10-19 सीट, भाजपा को 51-60 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। पीपुल्स प्लस ने कांग्रेस ने जीरो सीट का अनुमान जताया है। पीपुल्स पल्स का अनुमान यदि सच हुआ तो 27 साल के लंबे इंतजार के बाद भाजपा दिल्ली की सत्ता में वापसी कर सकती है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के एग्जिट पोल में अब दो और सर्वे एजेंसी का अनुमान सामने आ गया है। अभी तक सामने आए 5 सर्वे एजेंसियों के एग्जिट पोल में लगभग सभी में भाजपा को बढ़त दिखाई गई है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 का एग्जिट पोल

इससे पहले 2020 में दिल्ली में हुई विधानसभा चुनाव के समय एग्जिट पोल कितना सही था, अब इसे भी देख लेते हैं. 2020 में सभी एजेंसियों ने आप को बहुमत मिलता दिखाया था एक्सिस माय इंडिया ने आप को सबसे ज्यादा 59-68 सीटें मिलने का अनुमान लगाया था।

जबकि जन की बात, न्यूज एक्स नेटा और इंडिया न्यूज नेशन ने आप को 55 सीटें मिलने की भविष्यवाणी की थी। जब नतीजे सामने आए तो आम आदमी पार्टी ने 70 में से 62 सीटों पर जीत दर्ज की। ऐसे में कहा जा सकता है कि 2020 में सर्वे एजेंसियों ने जनता का मूड तो भांप लिया था, लेकिन आप की मिलने वाली बड़ी जीत का अनुमान लगाने में विफल रहे।

16वीं विधानसभा का तीसरा सत्र

जिलों के मुद्दे पर सदन में संग्राम! विधानसभा की कार्यवाही दो बार करनी पड़ी स्थगित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान विधानसभा में आज जिलों व संभाग को

निरस्त करने पर चर्चा नहीं होने के कारण जमकर हंगामा हुआ। इस दौराम दो बार सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी और दो बार ही विधानसभा अध्यक्ष ने अपनी व्यवस्था बदली। अब गुरुवार को इस मुद्दे पर सदन में चर्चा होगी।जिले और संभाग खत्म करने के मुद्दे को विधानसभा में उठाने की अनुमति देकर वापस लेने से नाराज कांग्रेस विधायकों ने आज सदन में जमकर हंगामा किया। दरअसल शून्य काल में पहले स्पीकर वासुदेव देवनानी ने जिले और संभाग खत्म करने के मुद्दे को पर्ची के माध्यम से सुरेश मोदी को उठाने की अनुमति दे दी थी। संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने इसका विरोध किया। जोगाराम ने तर्क दिया कि जिले संभाग खत्म करने का मुद्दा हाईकोर्ट में विचार दिन है, कोर्ट में विचार दिन किसी भी मुद्दे की विधानसभा में चर्चा नहीं कराए जाने की परंपरा रही है। ऐसे में आज इन पर चर्चा नहीं कराई जानी चाहिए। लेकिन नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जुली ने कहा कि केवल दो ही जिलों का मामला कोर्ट में है बाकी जिलों का मामला कोर्ट में नहीं है।उन दो का हम यहां पर जिक्र नहीं करेंगे बाकी जिलों पर चर्चा करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।पक्ष विपक्ष में विवाद होता देख विधानसभा अध्यक्ष ने पर्ची पर बोलने की अपनी अनुमति वापिस लें ली। देवनानी ने कहा कि शून्यकाल के बाद चेम्बर में चर्चा करने के बाद इस पर फैसला करेंगे। यह सुनकर विपक्ष के विधायको ने नाराजगी जताते हुए हंगामा किया जिसके बाद स्पीकर दे 15 मिनट के लिए कार्रवाई स्थगित कर दी। विधानसभा की कार्यवाही जब फिर से शुरू हुई तो स्पीकर ने अपनी व्यवस्था बदल दी और कहा कि अब 7 फरवरी को इस मुद्दे पर आधे घंटे की विशेष चर्चा होगी लेकिन प्रतिपक्ष ने अपना विरोध जारी रखा और कांग्रेस के विधायक वेल में नारेबाजी करते रहे। कुछ देर बाद विधानसभा अध्यक्ष ने फिर से सदन के कार्यवाही स्थगित कर दी इसके बाद कारवाई जब फिर से शुरू हुई तो अध्यक्ष ने व्यवस्था दी की गुरुवार को कांग्रेस के दो विधायकों सुरेश मोदी और रामकेश मीणा को स्थगन प्रस्ताव पर बोलने की अनुमति देता जाएगी।

सदन में पक्ष-विपक्ष में हुई नोकझोंक

जयपुर(कासं.)। 16वीं विधानसभा का तीसरा सत्र जारी है। ऐसे में आज सदन में पक्ष और विपक्ष में नोकझोंक हुई। अभिभाषण पर बहस के दौरान शांति धारीवाल और मदन दिलावर में नोक-झोंक हुई। धारीवाल ने 450 स्कूल बंद करने के आरोप लगाए। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने जवाब देते हुए कहा कि एक भी स्कूल बंद नहीं किया है। धारीवाल जी, आप अपनी गलती सुधारिए। इस पर नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने दखल दिया। आसन पर मौजूद सभापति फूल सिंह मीना से कहा कि इस तरह अभिभाषण पर बहस में मंत्री बीच-बीच में टोका-टाकी ना करें। आसान से सभापति ने श्रीचंद कृपलानी के बोलने के दौरान टोकने का जिक्र किया। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि वह हम दोनों के बीच का मामला था।

गमछा हिलाने से ना ही सरकार बनती है... ना ही ईआरसीपी, शेखावत ने डोटासरा पर कसा तंज

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत आज जोधपुर प्रवास पर रहे। दिल्ली से

केन्द्रीय मंत्री शेखावत फ्लाइट से जोधपुर पहुंच। जोधपुर एयरपोर्ट पर भाजपा के नवनिर्वाचित शहर जिलाध्यक्ष राजेन्द्र पालीवाल एवं देहात जिलाध्यक्ष त्रिभुवन सिंह भाटी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने केन्द्रीय मंत्री शेखावत का भव्य स्वागत किया।

दिल्ली में बीजेपी की जीत का किया दावा

इस दौरान केंद्रीय मंत्री शेखावत ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि दिल्ली में दस साल की अमावस्या की रात का आज निर्णायक दिन है। मैंने हरियाणा व महाराष्ट्र को लेकर भी कहा था, ऐसे में आज कह रहा हू कि डायरी में लिख लो, दिल्ली में भाजपा आने वाली है। पूर्ण बहुमत से सरकार बना रही है और आप की सरकार जाने वाली है।

गोविन्द सिंह डोटासरा पर कटाक्ष

कांग्रेस को लेकर कहा कि जब-जब देश भारत ने दुनिया में अपना प्रभाव बढाया, तब-तब कांग्रेस ने अशोभनीय टिप्पणी की।

बुरे फंसे कांग्रेस के युवराज

राहुल गांधी पर राष्ट्र गौरव केअपमान का आरोप, परिवाद दाखिल

जयपुर टाइम्स

बरेली(निसं.)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ बरेली के एमपी-एमएलए कोर्ट में राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम के तहत परिवाद दाखिल किया गया है। कोर्ट 15 फरवरी को तय करेगा कि मामला सुनने योग्य है या नहीं। राहुल गांधी ने पिछले महीने कांग्रेस मुख्यालय के उद्घाटन के दौरान विवादित बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि हमारी लड़ाई सिर्फ आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) और भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) से नहीं बल्कि इंडियन स्टेट यानी भारत से है। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि अगर आप समझ रहे हैं कि हमारी लड़ाई भाजपा और आरएसएस से है, जो आप समझ नहीं पा रहे। हमारी लड़ाई विचारों की लड़ाई है। आज सभी एजेंसियों को सिर्फ यह काम दिया गया है कि कैसे

विपक्षी नेताओं को जेल में डाला जाए। उन्होंने चुनाव आयोग पर भी सवाल उठाते हुए कहा था कि चुनाव आयोग को भी निष्पक्ष होने की जरूरत है। परिवार दाखिल करने वाले अधिवक्ता वीरेंद्र गुप्ता व अन्य का कहना है कि राहुल गांधी का बयान संविधान और देश को अपमानित करने वाला है। उनके बयान से देश की एकता और अखंडता को ठेस पहुंची है। अब एमपी-एमएलए कोर्ट 15 फरवरी को तय करेगा कि परिवार सुनने योग्य है या नहीं।

हरियाणा निकाय चुनावों में भाजपा की जीत तयः डॉ. सतीश पूनिया

नगर निगमों के लिए अलग-अलग संकल्प पत्र जारी करेगी पार्टी

जयपुर टाइम्स

चंडीगढ़(एजेंसी)। हरियाणा में नगर निकाय चुनाव और संगठनात्मक विषयों को लेकर बुधवार को पंचकूला स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय ÷पंचकमल÷ में कोर ग्रुप की बैठक आयोजित की गई। बैठक में भाजपा ने फैसला लिया कि नगर निगम और नगर परिषद के चुनाव पार्टी सिंबल पर लड़ेगी। इस रणनीति पर चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि ट्रिपल इंजन की सरकार बनने से हरियाणा विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा। बैठक में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया, प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली, राष्ट्रीय सचिव ओम प्रकाश धनखड़, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, सांसद सुभाष बराला, मंत्री कृष्ण बेदी, संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा, प्रदेश महामंत्री डॉ. अर्चना गुप्ता,

वरिष्ठ भाजपा नेता रामबिलास शर्मा, सुनीता दुग्गल और पूर्व मंत्री डॉ. कमल गुप्ता समेत अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

निकाय चुनाव में भाजपा की मजबूती से तैयारी

बैठक के बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भाजपा नगर निगम और नगर परिषद के चुनाव सिंबल पर लड़ेगी। उन्होंने बताया कि मेयर और चेयरमैन का चुनाव डायरेक्ट होगा, जिसके लिए उम्मीदवारों से आवेदन मांगे गए हैं। उन्होंने कहा कि 11 फरवरी से नामांकन प्रक्रिया शुरू होगी और इसके लिए जिला स्तर पर कमेटियां बनाई जाएंगी, जो प्रत्याशियों के नामों को अंतिम रूप देंगी। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि चुनाव प्रचार और संकल्प पत्र को लेकर विस्तृत चर्चा हुई है। जल्द ही जिलों में चुनाव संकल्प समिति, संचालन समिति और अन्य समितियों का गठन होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा प्रदेश सरकार ने बीते 10 वर्षों में जनकल्याण के कई कार्य किए हैं और जनता एक बार फिर भाजपा पर भरोसा जताएगी।

भाजपा की जीत तय

भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया ने कहा कि नगर निकाय चुनाव में भाजपा की जीत तय है। उन्होंने कहा कि भाजपा नगर निगमों के लिए अलग-अलग संकल्प पत्र जारी करेगी, जिससे जनता को पार्टी की योजनाओं और विकास कार्यों की पूरी जानकारी मिलेगी।

नगरपालिका चुनाव पर विचार कर रही भाजपा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि प्रदेश में चार नगर परिषद और आठ नगर निगमों में चुनाव होने हैं। उन्होंने कहा कि नगरपालिका प्रधान का चुनाव भी सिंबल पर लड़ने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 6 और 7 फरवरी को जिला भाजपा कार्यालयों पर कमेटियां बैठेंगी, जो 8 फरवरी तक प्रत्याशियों के नामों का पैनल तैयार करेंगी। 9 फरवरी को प्रदेश कोर कमेटी प्रत्याशियों के नामों पर अंतिम निर्णय लेगी। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा विकास के नाम पर वोट मांगेगी और कांग्रेस हमारे लिए कोई चुनौती नहीं है। उन्होंने कहा कि ट्रिपल इंजन सरकार बनने से हरियाणा में विकास की गति तेज होगी।

राजधानी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
6 फरवरी, 2025

प्रादेशिक परिवहन कार्यालय में काली पट्टी बांधकर किया गया विरोध प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

अलवर(**निसं.**)। दिनांक 02.02.2025 को पुलिस अधीक्षक, धौलपुर सुमित मेहरड़ा द्वारा राजकीय ड्यूटी पर कार्यरत परिवहन विभाग के दो परिवहन निरीक्षकों को अकारण हिरासत में लेने एवं वर्दीधारी परिवहन निरीक्षकों के साथ अनुचित व्यवहार करने के बावजूद राज्य सरकार द्वारा पुलिस अधीक्षक, धौलपुर के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं करने के कारण दिनांक 05.02.2024 को प्रादेशिक परिवहन कार्यालय, अलवर के समस्त अधिकारी एवं कार्मिकों द्वारा विरोध प्रदर्शित करते हुए काली पट्टी बांधकर राजकार्य सम्पादित किया गया। साथ ही कार्यालय के समस्त परिवहन निरीक्षकगण द्वारा पुलिस अधीक्षक, धौलपुर के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही नहीं किए जाने तक सामुहिक अवकाश पर रहने का निर्णय लिया गया है, जिससे कार्यालय के लाईसेंस, वाहन पंजीयन, राजस्व अर्जन इत्यादि संबंधी कार्य प्रभावित हुए हैं।

ग्राम पंचायत न्याना में किसान रजिस्ट्री शिविर हुआ प्रारम्भ, तीन दिवसीय कैम्प में सर्वर डाउन के चलते शिविर हुआ बाधित

जयपुर टाइम्स

गोविन्दगढ़(**निसं.**)। कस्बे में ग्राम पंचायत न्याना में कृषि विभाग एवं राजस्व विभाग की और से किसान रजिस्ट्री शिविर लगाया गया। तहसील दार राजेश यादव ने बताया कि तीन दिन तक लगने वाले इस शिविर में किसानों की यूनिक आईडी बनाई जाएगी और इस यूनिक कार्ड को आधार से लिंक किया जाएगा जिससे किसान की जमीन संबंधी ब्यौरा उस यूनिक कार्ड से जुड़ जाएगा। जिससे किसानों को समय समय पर मिलने वाली जानकारी मोबाइल के माध्यम से मिल जाएगी और किसानों को दी जाने वाली राशि भी यूनिक आईडी के माध्यम से खाते में जमा हो सकेगी। इस यूनिक कार्ड के बनने से किसान को अपने काम के लिए जगह जगह नहीं भटकना पड़ेगा और आसानी से पूरा डाटा एक जगह ही उपलब्ध रहेगा। इस शिविर में किसानों को अपना आधार कार्ड तथा आधार से लिंक मोबाइल फोन, जमाबंदी की त्वरित नकल लेकर आनी हे जिससे रजिस्ट्री कार्ड बनाने में आसानी रहेगी और कार्य भी शीघ्र ही संपन्न हो सकेगा। इस शिविर में पशु चिकित्सा विभाग, जलदाय विभाग, विद्युत विभाग, राजस्व विभाग सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। शिविर में पहले दिन सर्वर डाउन होने के चलते धीमी गति से कार्य हुआ।

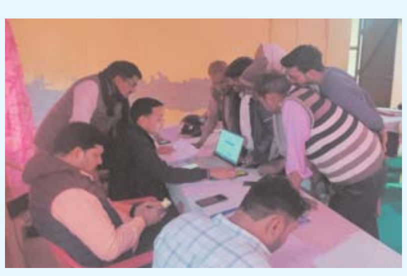

अधीक्षण अभियन्ता ने उमरैण का दौरा कर जनसुनवाई व निरीक्षण किया

जयपुर टाइम्स

अलवर(**निसं.**)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग एनसीआर वृत अलवर के अधीक्षण अभियन्ता दिनेश कुमार वर्मा ने बुधवार को उपखण्ड कार्यालय

उमरैण में आमजन की पेयजल संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु जनसुनवाई एवं फील्ड विजिट किया। जनसुनवाई में उमरैण कस्बे से 4 परिवाद प्राप्त हुए जिनमें ग्राम भूगोर में चालू नलकूपों में पानी की आवक क्षमता कम होने से ग्राम में पानी की समस्या उत्पन्न होने व ग्राम उमरैण में पाइप लाइन लिकेज तथा मिलकपुरियों की ढाणी में हैण्डपम्प खराब होने के परिवार प्राप्त हुए जिसमें पाइप लाइन लिकेज व खराब हैण्डप प की मरम्मत कर परिवादों का निस्तारण किया गया तथा ग्राम धर्मपुरा में जल जीवन मिशन योजना के अन्तर्गत लंबित विद्युत कनेक्शन व ग्राम भूगोर के परिवाद का निस्तारण हेतु अधिशाषी अभियन्ता, सहायक अभियन्ता एवं कनिष्ठ अभियन्ता को नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इसके उपरान्त उन्होंने पाइप्ड जल योजना उमरैण का निरीक्षण किया। जल योजना पर जल सप्लाई नियमित रूप से की जा रही है इसके साथ ही जल जीवन मिशन योजनान्तर्गत कराये जा रहे कार्यों में विभागीय प्रचलित मापदण्डों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण कार्य कराये जाने तथा आगामी ग्रीष्म ऋतु में पेयजल सप्लाई व्यवस्था को सुचारू बनाये रखने के लिए जनसुनवाई व निरीक्षण करने के निर्देश दिये।

केंद्रीय मंत्री ने किया 'अलवर टाइगर मैराथन' के रूट का निरीक्षण, लिया व्यवस्थाओं का जायजा

आमजन से अधिकाधिक सहभागिता की कि अपील

जयपुर टाइम्स

अलवर(**निसं.**)। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री तथा अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने सांसद खेल उत्सव के तहत 9 फरवरी को आयोजित होने वाली अलवर टाइगर मैराथन' के रूट का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। केंद्रीय मंत्री यादव ने प्रताप ऑडिटोरियम, भवानी तोप से शांतिकुंज की तरफ की सड़क से होते हुए कटी घाटी से अहिंसा सर्किल, परशुराम सर्किल (घोड़ा फेर का चौराहा) से वापिस प्रताप ऑडिटोरियम पर समाप्ति स्थल व अन्य खेल प्रतियोगिता के आयोजन स्थल इंदिरा गांधी स्टेडियम का प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों की टीम के साथ निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि मैराथन रूट पर साफ-सफाई, मोबाइल टॉयलेट, बैरिकेटिंग व यातायात व्यवस्था, मेडिकल टीम मय एम्बुलेंस इत्यादि व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। उन्होंने इस दौरान पुलिस अधीक्षक को पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था रखने हेतु पर्याप्त पुलिस जाप्ते की व्यवस्था के निर्देश दिए। उन्होंने जिलेवासियों से अपील की है कि अलवर सांसद खेल उत्सव, अलवर का उत्सव है। इसमें सभी सहभागी बने। उल्लेखनीय है कि अलवर सांसद खेल उत्सव के तहत 9 फरवरी को अलवर टाइगर मैराथन' आयोजित होगी, 6 फरवरी को छठी मील सिरमोल रोड जहरखेडा स्थित माउंट लिटेरा जी स्कूल में क्रिकेट का सेमीफाइनल (पुरूष और महिला) आयोजित होगा, 7 फरवरी को इसी स्थान पर क्रिकेट का फाइनल (पुरूष और महिला) आयोजित होगा तथा इंदिरा गांधी स्टेडियम में ग्रुप गेम्स (पुरूष और महिला) भी आयोजित होंगे, 8 फरवरी को ग्रुप गेम्स, एथलेटिक्स और कुश्ती का फाइनल (पुरूष और महिला) का समापन समारोह आयोजित होगा जिसमें खिलाडियों को पुरस्कार वितरण किए जाएंगे। इस दौरान जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला, पुलिस अधीक्षक संजीव नैन, एडीएम प्रथम मुकेश कायथवाल, यूआईटी सचिव सुश्री धीगदे स्नेहल नाना, नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका, विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता सुधीर पाण्डे, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता, पीडब्ल्यूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह, जलदाय विभाग अधीक्षण अभियंता रमेश चन्द सैनी एवं जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता, बन्नाराम मीणा, संजय नरूका, अरुण जैन, दीपक गर्ग सहित

जिला कलक्टर ने किया शिविर का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(**निसं.**)। जिला कलक्टर किशोर कुमार ने खैरथल एवं मुंडावर स्थित मातोर में आयोजित फार्मर रजिस्ट्री शिविरों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने वहां मौजूद किसानों से संवाद कर उन्हें सरकारी योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। जिला कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिविर में समुचित व्यवस्थाएं बनाए रखें ताकि इसका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने किसानों से अपने परिचित किसानों को शिविर के बारे में जानकारी देने की अपील करते हुए बताया कि किसान रजिस्ट्री, एग्रीस्टैक परियोजना के तहत कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की एक पहल है। कृषक विवरण, उसके द्वारा धारित कृषि भूमि का विवरण, प्रत्येक कृषि भूखण्ड के जीपीएस निर्देशांक, उस पर बोई गई फसलों का विवरण आदि को डिजिटल रूप में संकलित किया जाकर, प्रदेश के प्रत्येक किसान को 'आधार' आधारित एक 11 अंकों की एक यूनिक आईडी (विशिष्ट किसान आईडी) आवंटित की जाएगी, जिससे किसान डिजिटल रूप से अपनी पहचान प्रमाणित कर सकेंगे।

उन्होंने बताया कि फार्मर रजिस्ट्री शिविरों में निर्धारित तिथियों को प्रातः 9-30 बजे से सायं 5-30 बजे तक अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं. उन्होंने बताया कि शिविर में किसान आईडी तैयार करने के साथ साथ प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना, मुख्यमंत्री आरोग्य आयुष्मान योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, मंगला पशु बीमा योजना, पशु टीकाकरण, पशु चिकित्सा एवं उपचार सहित पशु पालन विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, ग्रामीण सहित अन्य विभागों की योजनाओं से भी किसानों को लाभांवित किया जा रहा है।

दो दिवसीय कंपनी बाग में पीएनबी का होम लोन एक्सपो होगा आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(**निसं.**)। पंजाब नेशनल बैंक द्वारा 7 व 8 फरवरी 2025 को दो दिन कंपनी बाग अलवर में होम एक्सपो का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में मंडल प्रमुख गिरिवर कुमार अग्रवाल ने जानकारी दी कि बैंक द्वारा अलवर व भिवाड़ी में इस प्रकार के होम एवं एमएसएमई लोन एक्सपो आयोजित किया जा रहे हैं। ताकि ग्राहकों को एक ही छत के नीचे बिल्डर व प्रोजेक्ट चयन के साथ आवास ऋण की बैंक से मौके पर ही सैद्धांतिक अथवा पूर्ण स्वीकृति स्वीकृति भी प्राप्त हो सके।

एक्सपो में अलवर के प्रमुख बिल्डर, कार डीलर, सूर्यघर (सौर ऊर्जा) डीलर भी सम्मिलित होंगे।

एक्स्पो में प्रमुख कार डीलर द्वारा अपने लेटैस्ट मॉडल्स का प्रदर्शन भी किया जाएगा व मौके पर अतिरिक्त छूट भी प्रदान की जाएगी। सोलर रुफ़टॉप की बढ़ती मांग के चलते इनके डीलर द्वारा भी आकर्षक छूट दी जाएगी।

अग्रवाल ने बताया कि अलवर में अपने घर का सपना पीएनबी करेगा साकार। एक्सपो में अलवर के अतिरिक्त भिवाड़ी, तिजारा, बहरोड़, कोटपुतली, खैरथल, दौसा, लालसोट इत्यादि क्षेत्र से प्राप्त आवास ऋण, कार ऋण व सूर्यघर सोलर प्रोजेक्ट की लीड्स पर विचार कर सैद्धांतिक अथवा पूर्ण स्वीकृति दी जाएगी। उन्होंने अलवर नगर के सभी ग्राहकों व गणमान्य नागरिकों से इस एक्सपो में एक बार अवश्य विजिट करने की अपील की। इस एक्स्पो में सभी विजिटर्स के लिए निशुल्क स्वास्थ्य जांच परीक्षण की भी व्यवस्था की गयी है।

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में जिला पर्यावरण समिति की बैठक आयोजित

जिले में एडवेंचर ट्यूरिज्म शुरू करने के प्रस्ताव होंगे तैयार पर्यावरण संरक्षण हेतु समन्वित प्रयास करने के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

अलवर(**निसं.**)। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता जिला पर्यावरण समिति की बैठक आयोजित हुई जिसमें उन्होंने जिले में वायु गुणवत्ता में सुधार, कचरे के समुचित निस्तारण आदि की समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

जिला कलक्टर ने वन विभाग सहित संबंधित अधिकारी को निर्देश दिये कि समन्वित प्रयास कर जिले में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करें जिसके धरातल पर बदलाव भी नजर आएं। उन्होंने डीएफओ अलवर को निर्देश दिये कि सिलीसेढ झील को वैटलैंड (रामसर) के रूप में अधिसूचित कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही

करें। उन्होंने निर्देश दिये कि सरिस्का टाइगर रिजर्व को प्लास्टिक फ्री टाइगर रिजर्व बनाने हेतु कार्य योजना बनाए।

उन्होंने निर्देश दिये कि सरिस्का अभयारण्य में आरएसआरटीसी के माध्यम से ये व्हीकल यथाशीघ्र शुरू करावे। उन्होंने यूआईटी सचिव को सिलीसेढ झील व अन्य उपयुक्त स्थानों को चिन्हित कर एडवेंचर ट्यूरिज्म को प्रारम्भ करने हेतु प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने जिले की वायु गुणवत्ता में सुधार हेतु विभागों द्वारा की जा रही कार्यवाही आदि की समीक्षा कर निर्देश दिये कि विभागीय फण्ड के साथ-साथ एनकेप के फण्ड का इसमें समुचित उपयोग करें।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव सोनी ने किया उपकारागृह किशनगढ़बास का निरीक्षण

उपकारागृह में जहां मिली कमियां उन्हें पूरी कराए जाने के दिए दिशा-निर्देश

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष, (जिला एवं सेशन न्यायाधीश), अलवर हरेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार बुधवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव (अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश) मोहनलाल सोनी के द्वारा अलवर उपकारागृह, किशनगढ़बास एवं लीगल एड क्लिनिक उपकारागृह किशनगढबास का निरीक्षण किया

गया। निरीक्षण के दौरान 173 विचाराधीन बंदी निरूद्ध पाए गए एवं इसके अतिरिक्त 4 बंदियों का तारीख पेशी पर जाना बताया गया।

निरीक्षण के दौरान सोनी द्वारा बंदियों से वार्ता की जाकर उनसे निःशुल्क विधिक सहायता के विषय में जानकारी प्रदान की गई। मौके पर 02 बंदियों द्वारा अपने प्रकरण में पैरवी हेतु अधिवक्ता का नहीं होना बताया गया, जिसके संबंध में मौके पर ही उनका विधिक सहायता का आवेदन भरवाया जाकर आवश्यक कार्यवाही के निर्देश प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त मौके पर 02 बंदियों को बुखार होना पाया गया, जिस हेतु सोनी द्वारा महावीर प्रसाद, मेल नर्स-प्प् को इसके संबंध में आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए।सोनी द्वारा बंदियों से वार्ता की जाकर उनके प्रकरण की वर्तमान स्थिति, पैरवी हेतु अधिवक्ता तथा उनके केस की आगामी तारीख पेशी के संबंध में दी गई। सभी बंदीजन से पूछताछ की गई और उन्हें आवश्यक जानकारी से अवगत करवाया गया। इसके साथ ही अनेक जानकारियां मिली ओर जहां कमियां पाई वहां संबंधित अधिकारी को निर्दे श दिए गए।

केंद्रीय मंत्री ने ली प्रशासनिक अधिकारियों की समीक्षा बैठक

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री तथा अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने सर्किट हाउस में प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक लेकर अलवर जिले व संसदीय क्षेत्र अलवर में आगामी ग्रीष्म ऋतु के मद्देनजर पेयजल व्यवस्था, साफ-सफाई, केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं की प्रगति, बजट घोषणाओं की क्रियान्विति एवं अलवर सांसद खेल उत्सव के समापन कार्यक्रमों की तैयारी की समीक्षा कर अधिकारियों को निर्देशित किया। केंद्रीय मंत्री यादव ने अलवर जिले व संसदीय क्षेत्र में आगामी ग्रीष्म ऋतु के दृष्टिगत पेयजल आपूर्ति की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि पेयजल समस्या के समाधान हेतु तत्कालीन प्रकृति एवं दीर्घकालीन प्रकृति की कार्य योजना बनाकर इसे तत्काल प्रभाव से अमल में लाएं, ताकि आमजन को गर्मी के मौसम में किसी भी प्रकार की पेयजल संबंधी असुविधा का सामना ना करना पडे।

जन-जन को जल, जंगल और जमीन बचाने का संदेश देती प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की जलग्रहण यात्रा का भव्य शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(**निसं.**)। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 (वाटरशेड विकास घटक) के तहत जलग्रहण यात्रा का भव्य शुभारंभ खैरथल-तिजारा जिले में जिला कलक्टर किशोर कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। यह यात्रा वर्षा जल संग्रहण, मिट्टी बचाव और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन जागरूकता को बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू की गई है। राष्ट्रीय स्तर पर इस यात्रा का शुभारंभ केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया। जिला स्तर पर खैरथल-तिजारा में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 2000 ग्रामीणों, विद्यार्थियों, एनएसएस और स्काउट सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान जल योद्धा बनने और गांव को जल संकट से मुक्त करने की शपथ, जल संरक्षण और भूमि सुधार में

उत्कृष्ट कार्य करने वाले 15 कार्यकर्ताओं और भामाशाहों का सम्मान, स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी और इब्तिदा संस्था के कृषि तकनीक मॉडल का अवलोकन, राष्ट्रीय स्तर के शुभारंभ कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। ग्राम नंगली ओझा में जोहड़ जीर्णोद्धार कार्य का भूमि पूजन किया गया। इसके साथ ही बड़े जोहड़ जीर्णोद्धार कार्य का वर्चुअल लोकार्पण किया गया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में जल एवं भूमि संरक्षण पर निबंध और स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। ग्रामवासियों ने चारागाह भूमि में पौधारोपण और जोहड़ में श्रमदान कर अपनी प्रतिबद्धता दिखाई।

यात्रा का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ

जिला कलक्टर किशोर कुमार ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की वाटरशेड यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा 5 फरवरी 2025 से शुरू होकर 8 अप्रैल 2025 तक चलेगी।

खैरथल-तिजारा जिले की पंचायत समिति तिजारा व मुण्डावर के 34 गांवों में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना संचालित है। योजना के तहत वर्षा जल संग्रहण के लिए एनीकट, अमृत सरोवर, जोहड़, फार्म पोंड और मिट्टी के बांध बनाए जा रहे हैं। भूमि कटाव रोकने और चारागाह विकास के लिए पौधारोपण किया जा रहा है।

कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला कलक्टर शिवपाल जाट, संयुक्त निदेशक जलग्रहण विकास विभाग जयपुर सुशीला यादव, अधीक्षण अभियंता नरेंद्र सिंह मौथू, अधिशासी अभियंता क्षत्रपाल सहित कई जनप्रतिनिधिगण एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

जयपुर में किसान रजिस्ट्री शिविरों का शुभारंभ, किसानों को मिली 11 अंकों की विशिष्ट पहचान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(निसं.)। जयपुर जिले में बुधवार को किसान रजिस्ट्री शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें किसानों को 11 अंकों की विशिष्ट किसान आईडी प्रदान की गई। शिविर के पहले ही दिन किसानों में रजिस्ट्रेशन को लेकर जबरदस्त उत्साह देखा गया। जिला कलक्टर डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी के निर्देश पर इन शिविरों में किसानों की सुविधा के लिए व्यापक इंतजाम किए गए।

पहले दिन 3,417 किसानों की ई-केवाईसी पूरी

पहले ही दिन 3,417 किसानों की ई-केवाईसी की गई, 981 किसानों का भूमि सत्यापन और 946 किसानों का एनरोलमेंट किया

गया। इसके साथ ही किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ भी दिया गया।

स्वास्थ्य और पशुपालन योजनाओं का लाभ

शिविर में 1,530 किसानों का गैर-संचारी बीमारियों का उपचार किया गया, 1,212 किसानों को आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए और 1,000 से अधिक किसानों के स्वास्थ्य की जांच की गई। 188 किसानों को प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना का लाभ मिला। पशुपालन योजनाओं के तहत 452 किसानों को मंगला पशु बीमा योजना का लाभ दिया गया, 2,583 पशुओं का टीकाकरण और 1,000 से अधिक पशुओं का उपचार किया गया।

राजधानी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
6 फरवरी, 2025

सबको बीम अभियान के तहत 'बीमा रथ' को दिखाई हरी झंडी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। सबको बीमा अभियान-2047 के तहत बुधवार को जिला कलेक्ट्रेट जयपुर से बीमा रथ को रवाना किया गया। जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने बीमा रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस दौरान भारतीय प्रशासनिक सेवा के नवनियुक्त 18 प्रशिक्षु अधिकारी भी मौजूद रहे।

राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के संयुक्त निदेशक राकेश मीणा ने बताया कि बीमा रथ का संचालन सबको बीमा अभियान के तहत जयपुर जिले में आमजन के बीच प्रचार प्रसार एवं जन जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

बीमा रथ को हरी झंडी दिखाने के दौरान बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में शिरकत कर रहे अतिथियों एवं आमजन को बीमा रथ की उपयोगिता एवं बीमा प्रक्रिया के साथ-साथ बीमा से होने वाले लाभ की जानकारियों से रूबरू करवाया।

रोजगार सहायता शिविरः 331 युवाओं को मिला अवसर, 14 को मिला नियुक्ति पत्र

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। कौशल, रोजगार एवं उद्यमिता विभाग के तत्वावधान में बुधवार को कानोडिया पी.जी. महिला महाविद्यालय में एक दिवसीय रोजगार सहायता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में निजी क्षेत्र

की 28 कंपनियों ने भाग लिया, जहां कुल 331 अभ्यर्थियों को नौकरी व प्रशिक्षण का अवसर मिला।

शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने युवाओं को कौशल विकास और व्यावहारिक शिक्षा पर जोर देने की सलाह दी। इस दौरान 14 अभ्यर्थियों को मौके पर ही नियुक्ति पत्र सौंपे गए, जिससे शिविर का महत्व और अधिक बढ़ गया।

237 अभ्यर्थियों का कंपनियों में प्रारंभिक चयन

94 युवाओं को कौशल प्रशिक्षण हेतु चयनित किया गया मुख्यमंत्री युवा संबल योजना सहित अन्य योजनाओं की जानकारी दी गइ। करियर काउंसलिंग सत्र में विशेषज्ञों ने स्वरोजगार और नौकरी के टिप्स दिए। महिला महाविद्यालय की निदेशक रश्मि चतुर्वेदी और प्राचार्या डॉ. सीमा अग्रवाल ने छात्रों को अपने लक्ष्य निर्धारण और भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित किया। इस अवसर को छात्रों ने रोजगार प्राप्ति का सुनहरा अवसर बताया।

कंवरपुरा गांव को पंचायत बनाने की मांग को लेकर विधायक उपखण्ड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

चाकसू(निसं)। चाकसू उपखंड क्षेत्र के पंचायत समिति कोटखावदा के गांव कंवरपुरा को नई ग्राम पंचायत बनाने के लिए लोगों ने चाकसू विधायक रामवतार बैरवा एवं चाकसू उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सोपा। वहीं लोगों ने ज्ञापन में बताया कि गांव कंवरपुरा गांव वर्तमान समय में

बड़ोदिया पंचायत के अंतर्गत आता है लेकिन कंवरपुरा गांव के आसपास 4 से 5 ढाणियों में लगभग 2500 से 3000 के लगभग आबादी है ऐसे में क्षेत्रीय गांव कंवरपुरा के आसपास ढाणियां होने के कारण नई ग्राम पंचायत गठित करने करने की मांग को लेकर चाकसू विधायक और उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया।

डॉ. मामासाहेब जगदाले की 122वीं जयंती पर सम्मान समारोह

राज्यपाल ने पद्म विभूषण माशेलकर और काकोडकर को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। महाराष्ट्र के बार्शी में श्री शिवाजी शिक्षण प्रसारक मंडल बार्शी के संस्थापक कर्मवीर डॉ. मामासाहेब जगदाले की 122वीं जयंती के अवसर पर भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने पद्म विभूषण रघुनाथ माशेलकर और पद्म विभूषण श्री अनिल काकोडकर को कर्मवीर डॉ. मामासाहेब समाज परिवर्तन गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया। राज्यपाल ने कहा कि जो समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करते हैं, वही सच्चे सम्मान के हकदार होते हैं। उन्होंने डॉ. माशेलकर के पॉलिमर विज्ञान और नवाचार में योगदान और अनिल काकोडकर के परमाणु ऊर्जा व रक्षा क्षेत्र में अतुलनीय सेवाओं की सराहना की।

बागडे ने डॉ. मामासाहेब के योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्होंने गरीब और जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा के लिए श्री शिवाजी बोर्डिंग की स्थापना की और संपूर्ण जीवन समाज सेवा व शिक्षा को समर्पित किया। उनके आदर्श आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक हैं।

समारोह में संस्था के अध्यक्ष शितोले जयंत कुमार ने सभी का स्वागत किया और संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। राज्यपाल ने डॉ. मामासाहेब के विचारों को अपनाने और समाज के प्रति योगदान देने का आह्वान किया।

सूखे एवं खराब नलकूपों को जल जीवन मिशन के तहत प्राथमिकता से दुरुस्त कराया जाएगा : चौधरी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैया लाल चौधरी ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार द्वारा शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र में सूखे एवं खराब नलकूपों को जल जीवन मिशन के तहत प्राथमिकता से दुरुस्त कराया जाएगा। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य द्वारा इस सम्बन्ध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र में कुल 43 नलकूप ख़राब पाए गए। इस सम्बन्ध में राज्य सरकार द्वारा 3400 किमी की केसिंग पाइपलाइन के लिए लगभग 96 लाख रूपये की स्वीकृति जारी कर दी गई है। इसके साथ ही राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा के तहत 05 नलकूपों की स्वीकृति भी जारी कर दी गई है। उन्होंने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार द्वारा ये सभी कार्य प्राथमिकता से पूरे कर लिए जाएंगे। चौधरी ने सदन को अवगत कराया कि शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र में जल जीवन मिशन योजना के तहत 83 योजनाओं में 142 नलकूप स्वीकृत हैं। इनमें से 26 नलकूप सूखे पाए गए हैं। इसके लिए जल जीवन मिशन के तहत 76 संशोधित योजनाओं में 163 नलकूप स्वीकृत है एवं 12 सूखे नलकूपों को आवश्यकता के आधार पर संवेदकों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही कर दुरुस्त कराया जाएगा।इससे पहले विधायक मनीष यादव के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र शाहपुरा में विभिन्न पेयजल योजनाओं के अंतर्गत वर्तमान में 22 नलकूप सूखे हैं। जिनमें से 01 नलकूप के विरूद्ध नवीन नलकूप स्वीकृति उपरांत निर्मित करवाया जा चुका है एवं 04 नलकूपों के विरूद्ध नवीन नलकूपों के निर्माण की स्वीकृतियां जारी की जा चुकी है एवं जिनका कार्य प्रगति पर है। इनका शहर/ग्रामवार विवरण उन्होंने सदन के पटल पर रखा। उन्होंने जानकारी दी कि शेष 17 नलकूपों में से शहरी क्षेत्र के 07 नलकूपों के विरूद्ध नवीन नलकूपों के निर्माण हेतु स्वीकृतियां तकनीकी उपादेयता भू-जल उपलब्धता एवं वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर जारी की जानी प्रस्तावित है तथा ग्रामीण क्षेत्र में जल जीवन मिशन अंतर्गत स्वीकृत योजनाओं में नवीन नलकूप स्वीकृत होने के कारण ग्रामीण क्षेत्र के 10 सूखे नलकूपों के विरूद्ध नवीन नलकूप स्वीकृत किया जाना विचाराधीन नहीं है।

शुभम गोरा ने 38वें नेशनल गेम्स में वूशू में जीता गोल्ड, उद्योग विभाग में हर्ष

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। उद्योग एवं वाणिज्य विभाग में कनिष्ठ सहायक पद पर कार्यरत शुभम गोरा ने 38वें नेशनल गेम्स में वूशू प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर विभाग और प्रदेश का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि पर अतिरिक्त आयुक्त श्री एस. एस. शाह सहित अन्य अधिकारियों ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दीं।

उद्योग भवन में आयोजित सम्मान समारोह में गोरा का माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर शाह ने कहा कि यह गोल्ड मेडल विभाग के लिए गर्व की बात है और इससे अन्य कर्मचारियों व युवाओं को खेलों में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि विभाग आगे भी खेलों को प्रोत्साहन देगा और खिलाड़ियों को अनुकूल माहौल प्रदान करेगा। इस अवसर पर विभाग के अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी गोरा को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विश्वकर्मा फायर स्टेशन पर नवनिर्मित उच्च जलाशय का हुआ लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर के विश्वकर्मा फायर स्टेशन में नवनिर्मित उच्च जलाशय का लोकार्पण बुधवार को महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर एवं अग्निशमन शाखा के चैयरमेन श्री पारस जैन के कर कमलों द्वारा किया गया।

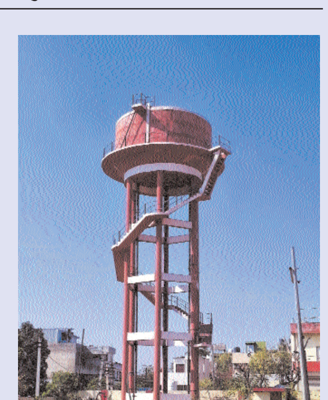

महापौर ने भांकरोटा अग्निकांड में कार्य करने वाले अग्निशमन कर्मियों को भी शाबाशी दी।

इस अवसर पर पार्षद एवं चैयरमेन श्री लक्ष्मण नूनीवाल, डॉ. मीनाक्षी शर्मा सहित अग्निशमन शाखा के अधिकारी, कर्मचारी मौजूद रहे।

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक संपन्न, प्रदेश को स्वच्छ बनाने पर जोर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर की अध्यक्षता में बुधवार को शासन सचिवालय स्थित पंचायती राज भवन में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजना की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में पंचायती राज राज्य मंत्री ओटाराम देवासी सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे। दिलावर ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश को स्वच्छता के क्षेत्र में अग्रणी बनाना है, जिससे यह मिसाल बन सके। उन्होंने सभी जिलों को मिशन का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के हर गांव को साफ-सुथरा और स्वच्छ बनाना प्राथमिकता है।

बैठक में राजसमंद एवं बीकानेर जिलों में किए गए नवाचारों की सराहना की गई और अन्य जिलों को भी अपनी भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार नवाचार करने के लिए प्रेरित किया गया। प्लास्टिक कचरे के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करते हुए प्लास्टिक उपयोग कम करने की अपील की गई।

इससे पूर्व शासन सचिव एवं पंचायती राज आयुक्त डॉ. जोगा राम ने जिलेवार प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। बैठक में मिशन निदेशक सलोनी खेमका, अतिरिक्त आयुक्त बृजेश चंदोलिया, जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, विकास अधिकारी तथा सरपंचगण वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े।

मंत्री ने स्वच्छता गतिविधियों में पिछड़े जिलों को अतिशीघ्र सुधार के निर्देश देते हुए कहा कि गांवों में नियमित सफाई अभियान चलाकर प्रदेश को स्वच्छ बनाने का संकल्प साकार करें।

नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूक्मणी रियाड के निर्देश पर सतर्कता शाखा की कार्रवाई, 19,500 रुपये कैरिंग चार्ज वसूला, 4 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूक्मणी रियाड के निर्देशानुसार बुधवार को सतर्कता शाखा ने अस्थाई अतिक्रमण हटाने की बड़ी कार्रवाई की। उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में झालाना डूंगरी, सत्कार शॉपिंग सेंटर, गणेश जी मंदिर, सूतमील कॉलोनी और निवारू रोड पर अभियान चलाया गया। इस दौरान 19,500 रुपये कैरिंग चार्ज वसूला गया और 4 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया।

उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ यह कार्रवाई की गई। मौके पर अतिक्रमणकारियों को समझाइश दी गई और मौखिक रूप से चेतावनी दी गई कि भविष्य में अतिक्रमण दोबारा न किया जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि पुनः अतिक्रमण पाया गया तो भारी जुर्माना या कठोर कार्रवाई की जाएगी। सतर्कता शाखा की इस कार्रवाई के दौरान क्षेत्र में सड़क और फुटपाथ से अवैध रूप से लगाए गए ठेले, टेंट, कुर्सियां और अन्य सामान जब्त किया

गया। यह सामान नगर निगम के गोदाम में जमा कराया गया। आयुक्त रूक्मणी रियाड ने सतर्कता शाखा को क्षेत्र में नियमित गश्त करने और अतिक्रमण के खिलाफ प्रभावी कदम उठाने के निर्देश दिए। इस कार्रवाई से स्थानीय निवासियों में नगर निगम की सक्रियता को लेकर सकारात्मक संदेश गया है।

नगर निगम ग्रेटर की सतर्कता शाखा ने स्पष्ट कर दिया है कि शहर को अतिक्रमण मुक्त रखने के लिए आगे भी ऐसी कार्रवाइयां जारी रहेंगी।

नगरीय विकास कर एवं विज्ञापन शुल्क की शत-प्रतिशत वसूली हेतु लगाये जा रहे है कैम्प, दूसरे दिन में 46 लाख 27 हजार से अधिक का राजस्व किया प्राप्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं)। नगरीय विकास कर एवं विज्ञापन शुल्क की शत-प्रतिशत वसूली के लिये फरवरी माह में जोनवार वार्डवाईज कैम्प आयोजित किये जा रहे है जिसकी शुरूआत 3 फरवरी से की गई। पहले दिन वार्डवार शिविर से 41 लाख 11 हजार से अधिक का राजस्व वसूल किया तथा दूसरे दिन 46 लाख 27 से अधिक का राजस्व वूसल किया गया। उपायुक्त राजस्व प्रथम अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि प्रतिदिन एक या दो वार्डो के संयुक्त कैम्प रखे जा रहे है। कैम्प का समय प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक अथवा कार्य समाप्ति तक रहेगा। कैम्प स्थल पर सम्पूर्ण राजस्व टीम व स्पैरो टीम उपस्थित रहेगे। बुधवार को जगतपुरा जोन वार्ड नं. 105 वार्ड नं. 105 पार्षद कार्यालय के पास, झोटवाड़ा जोन के वार्ड नं. 46, 47 मार्बल मंडी चौराहा गोकुलपुरा, मालवीय नगर जोन के वार्ड नं. 125,129 एस 05 आदिनाथ नगर गेट नं. 2 जेडीए पार्क, मानसरोवर जोन के वार्ड नं. 55, 66 तेजाजी का चौक भांकरोटा, मुरलीपुरा जोन के वार्ड नं. 15, 16 जोन कार्यालय सामुदायिक केन्द्र मुरलीपुरा, सांगानेर जोन के वार्ड नं. 90 घनश्याम बगरेट स्टेडियम सांगानेर एवं विद्याधर नगर जोन के वार्ड नं. 21, 22 टाइम स्कवायर मॉल विद्याधर नगर में कैम्प आयोजित किये गये।उन्होंने बताया कि जगतपुरा जोन में 2 लाख 7 हजार 151 रूपये, झोटवाड़ा जोन में 7 लाख 24 हजार 56 रूपये, मालवीय नगर जोन में 20 लाख 64 हजार 932 रूपये, मानसरोवर जोन में 7 लाख 52 हजार 154 रूपये, मुरलीपुरा जोन में 5 लाख 20 हजार 48 रूपये, सांगानेर जोन में 1 लाख 80 हजार 82 रूपये एवं विद्याधर नगर जोन में 1 लाख 79

हजार 234 रूपये का राजस्व प्राप्त किया। उपायुक्त राजस्व प्रथम अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि नगरीय विकास कर एवं विज्ञापन शुल्क की वसूली हेतु 3 फरवरी से वार्डवार शिविर लगाये जा रहे है। संपतिधारक निर्धारित दिनांक से अपने वार्ड के कैम्प में उपस्थित होकर राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त छूट का लाभ लेकर मौके पर ही नगरीय विकास कर, गृहकर एवं विज्ञापन शुल्क जमा करा सकते है, विशेष जानकारी के लिए टोल फ्री नं. 18005728545 पर सम्पर्क कर सकते है, बकाया गृहकर की सम्पूर्ण राशि जमा कराने पर मूल गृहकर की राशि पर 50 प्रतिशत छूट तथा पेनल्टी पर 100 प्रतिशत छूट दी गयी है वर्ष 2007-2008 से 2010-11 तक के बकाया नगरीय विकास कर में ब्याज पेनल्टी पर 100 प्रतिशत छूट के साथ-साथ मूल राशि पर भी 50 प्रतिशत छूट दी गई है। वर्ष 2011-12 से 2023-24 तक बकाया नगरीय विकास कर की राशि जमा कराने पर पेनल्टी पर 100 प्रतिशत छूट दी गई है।

गुरूवार को यहां लगेगे कैम्पः-

गुरूवार को जगतपुरा जोन के वार्ड नं. 106, 107 गोल्डसुख मॉल नन्दपुरी बाईपास के पास जगतपुरा, झोटवाड़ा जोन के वार्ड नं. 45, 48 अंलकार कॉलेज के बाहर कनकपुरा, मालवीय नगर जोन के वार्ड नं. 125, 129 एस 05 आदिनाथ नगर गेट नं. 2 जेडीए पार्क, मानसरोवर जोन वार्ड नं. 84, 85 द्वारका दास पुरोहित पार्क अग्रवाल फार्म, मुरलीपुरा जोन वार्ड नं. 18 सरस डेयरी प्रताप नगर चौराहा, सांगानेर जोन के वार्ड नं. 93 घनश्याम बगरेट स्टेडियम सांगानेर एवं विद्याधर नगर जोन में वार्ड नं. 23, 24 में 16 नं. बस स्टेण्ड पंजाब नेशनल बैंक पर कैम्प आयोजित किये जायेगे।

संपादकीय .....

अमेरिका-चीन में पुनः शुरू हुए व्यापार युद्ध का कारोबारी लाभ आखिर कैसे उठाएगा भारत?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हम भारतीयों के मनोमस्तिष्क में इसलिए हमेशा बसे रहते हैं कि उन्होंने आपदा को अवसर में बदलने का हुनर दिखलाया-सिखलाया-बतलाया है। इस हेतु राष्ट्रीय जज्बे को जिस शानदार-जानदार तरीके से उन्होंने प्रदर्शित किया-करवाया है, उसने हम सबको उनका मुरीद बना दिया है। वैश्विक महामारी कोरोना के पहले, कोविड-19 के दौरान और उसके बाद भी उन्होंने दुनियावी त्रासदी/पारस्परिक संघर्षों-संकटों को जितना सकारात्मक तरीके से लिया है, उससे भारत पुनः विश्वगुरू बनने की ओर अग्रसर है। उनके नेतृत्व में भारत अब याचक कम, दाता ज्यादा नजर आता है।

यही वजह है कि समावेशी व्यापार प्रचलन स्थापित-संचालित-नियंत्रित करने में विश्व व्यापार संगठन यानी डब्ल्यूटीओ की विफलता के बाद दुनिया के देशों में मचे व्यापार युद्ध मतलब टैरिफ वॉर से उतपन्न होने वाले द्विपक्षीय कारोबारी आपदा को तीसरे पक्ष हेतु अवसर में बदलने के लिए भारत के लिए क्या संभावनाएं हैं और उसकी क्या रणनीति होनी चाहिए, इस विषय पर हम यहां चर्चा करेंगे। क्योंकि आर्थिक मामलों के जानकारों का मानना है कि अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध भारतीय निर्यातकों के लिए फायदेमंद हो सकता है।

समझा जाता है कि अमेरिका-चीन जैसे दो बड़े देशों के इस अप्रत्याशित कदम से अमेरिकी बाजार में भारतीय निर्यात बढ़ने की उम्मीद है। वहीं, आंकड़ा जन्य अनुभव बताता है कि ट्रंप के पहले कार्यकाल (2016-2020) के दौरान जब अमेरिका ने चीनी चीजों पर टैरिफ लगाया था, तो उस दौरान भारत चौथा सबसे बड़ा फायदा पाने वाला देश था। इसलिए विशेषज्ञों का कहना है चीन से आयात पर अमेरिका की ओर से टैरिफ लगाए जाने से भारत को अमेरिका में निर्यात के लिए बहुत अवसर मिलेंगे। क्योंकि टैरिफ लगाए जाने से चीन से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर असर पड़ेगा।

बताया जाता है कि इससे अमेरिकी बाजार में उनके सामान की कीमतें बढ़ जाएंगी। इससे अमेरिकी खरीदार उच्च लागत से बचने के लिए वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं की तलाश करेंगे। इससे भारत को फायदा होगा। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 1 फरवरी 2025 को एक इग्जेक्युटिव आदेश पर हस्ताक्षर किए। जिसमें मेक्सिको से आने वाले सामानों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया। वहीं, कनाडा से आने वाले सामानों पर भी 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया। जबकि, कनाडा के ऊर्जा संसाधनों पर 10 प्रतिशत टैरिफ ही लगाने की घोषणा की गई। इस ऑर्डर में ही चीन से आयात पर भी 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने की बात थी, जिससे चीन बौखला गया।

अलबत्ता, अमेरिका के जवाब में चीन ने भी कुछ अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ लगा दिया है। उसके इस जवाबी कदम के साथ ही दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार युद्ध शुरू हो गया है।

आर्थिक विकास दर को 8 प्रतिशत से ऊपर ले जाने के हो रहे हैं प्रयास

विश्व के कुछ देशों में सत्ता परिवर्तन के बाद आर्थिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हुए दिखाई दे रहे हैं। विशेष रूप से अमेरिका में राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प विभिन्न देशों को लगातार धमकी दे रहे हैं कि वे इन देशों से अमेरिका में होने वाले आयात पर कर की दर में वृद्धि कर देंगे। दिनांक 4 फरवरी 2025 से कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले उत्पादों के आयात पर 20 प्रतिशत एवं चीन से होने वाले आयात पर 10 प्रतिशत का आयात कर लगा दिया है। वैश्विक स्तर पर उक्त प्रकार की उथल पुथल के अतिरिक्त रूस यूक्रेन युद्ध जारी ही है एवं कुछ समय पूर्व तक हमास इजराईल युद्ध भी चलता ही रहा था। वैश्विक स्तर पर उक्त विपरीत परिस्थितियों के बीच भी भारत, अपनी आर्थिक विकास दर को कायम रखते हुए, विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है। हां, वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम दो तिमाहियों में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर गिरकर 5.2 प्रतिशत एवं 5.3 प्रतिशत क्रमशः के आसपास रही है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। यदि भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है तो आगे आने वाले दो दशकों तक आर्थिक विकास दर को 8 प्रतिशत से ऊपर रखना आवश्यक होगा। अतः केंद्र सरकार द्वारा भारत की आर्थिक विकास दर को इस वित्तीय वर्ष की दो तिमाहियों में दर्ज की गई लगभग 5.3 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर को 8 प्रतिशत से ऊपर ले जाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

अभी हाल ही में केंद्र सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन ने लोक सभा में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए केंद्रीय बजट पेश किया है। इस बजट के माध्यम से ऐसे कई निर्णय लिए गए हैं जिससे देश की आर्थिक विकास दर पुनः एक बार 8 प्रतिशत से ऊपर निकल जाए। दरअसल, आज देश में उत्पादों की मांग को बढ़ाना अति आवश्यक है जो पिछले कुछ समय से लगातार कम होती दिखाई दे रही है। इसके लिए आम नागरिकों के हाथों में अधिक धनराशि उपलब्ध रहे, ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं। जैसे, आयकर की सीमा को वर्तमान में लागू सीमा 7 लाख रुपए प्रतिवर्ष से बढ़ाकर वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 12 लाख रुपए प्रतिवर्ष कर दिया गया है। साथ ही, आय पर लगने वाले कर की दर को भी बहुत कम कर दिया गया है। इस प्रकार लगभग 1 करोड़ मध्यमवर्गीय करदाताओं को लगभग 1.10 लाख रुपए तक प्रतिवर्ष का अधिकतम लाभ होने जा रहा है। इस राशि से विभिन्न उत्पादों का उपभोग बढ़ेगा एवं देश की आर्थिक विकास दर में तेजी दिखाई देगी। हालांकि इससे केंद्र सरकार के बजट पर एक लाख करोड़ रुपए का भार पड़ेगा। परंतु, फिर भी बजटीय घाटा वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5.8 प्रतिशत से घटकर वित्तीय वर्ष 2025-26 में 5.4 प्रतिशत रहने की सम्भावना व्यक्त की गई है। अतः देश की वित्तीय स्थिति को सही दिशा दिए जाने के सफल प्रयास हो रहे हैं।

विनिर्माण के क्षेत्र को गति देना भी आज की आवश्यकता है। राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन भी चलाए जाने का प्रस्ताव है। आज देश में एक करोड़ से अधिक सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योग हैं जो 7.5 करोड़ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कर रहे हैं एवं भारत के कुल उत्पादन में 36 प्रतिशत का योगदान दे रहे हैं तथा देश से होने वाले विभिन्न उत्पादों के निर्यात में भी 45 प्रतिशत की भागीदारी इन उद्योगों की रहती हैं। कुल मिलाकर भारत आज अपनी इन कम्पनियों को वैश्विक स्तर पर ले जाना चाहता है। भारत में आज निर्यात प्रोत्साहन मिशन को चालू किया जा रहा है ताकि भारत की कम्पनियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले। इसी प्रकार भारत को वैश्विक स्तर पर खिलौना उत्पादन के केंद्र के रूप में विकसित किये जाने के प्रयास भी किये जा रहे हैं। केवल एक दशक पूर्व भारत में खिलौनों का शुद्ध आयात होता था आज भारत खिलौनों का शुद्ध निर्यातक देश बन गया है। पिछले 10 वर्षों में भारत में खिलौनों के निर्यात में 200 प्रतिशत की वृद्धि एवं खिलौनों के आयात में 52 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई है। भारत ने 15 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि के खिलौनों का निर्यात किया है।

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का योगदान लगभग 5 प्रतिशत है। विशेष रूप से वाराणसी, श्री अयोध्या धाम, उज्जैन एवं महाकुम्भ, प्रयागराज में पर्यटकों के लिए विकसित की गई आधारभूत सुविधाओं के बाद इन सभी शहरों की पहचान धार्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में पूरे विश्व में कायम हुई है। आज आध्यात्म की ओर पूरा विश्व ही आकर्षित हो रहा है अतः भारत में अन्य धार्मिक केंद्रों को भी इसी तर्ज पर विकसित किया जाना चाहिए जिससे विभिन्न देशों के नागरिक भी इन धार्मिक स्थलों पर आ सकें एवं जिससे देश के धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिल सके। वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 2,541 करोड़ रुपए की राशि का आबंटन किया गया है जबकि वित्तीय वर्ष 2024-25 में 850 करोड़ रुपए की राशि आबंटित की गई थी। भारतीय पर्यटन उद्योग का आकार 25,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का है, जो कि बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। उत्तर पूर्व के राज्यों से लेकर जम्मू एवं कश्मीर तक 50 नए पर्यटन केंद्र विकसित किए जा रहे हैं। यह ऐसे पुराने पर्यटन केंद्र हैं जिनकी पहचान कहीं खो गई है। अब इन पर्यटन केंद्रों पर आधारभूत सुविधाओं को विकसित किये जाने की योजना बनाई जा रही है। इन केंद्रो पर पहुंच को आसान बनाने के उद्देश्य से यातायात के साधनों का विकास किया जाएगा, सर्वसुविधा सम्पन्न होटलों का निर्माण किया जाएगा, एवं इन स्थलों पर अन्य प्रकार की समस्त सुविधाएं पर्यटकों को उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही, भारत में मेडिकल पर्यटन को भी बढ़ावा दिया जा सकता है क्योंकि विकसित देशों की तुलना में भारत में विभिन्न बीमारियों का उच्चस्तरीय इलाज बहुत ही सस्ते दामों पर उपलब्ध है। और फिर, भारतीय नागरिकों के डीएनए में ही सेवा भावना भरी हुई है, अतः इन देशों के नागरिकों को भारत में इलाज कराने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर मेडिकल पर्यटन का आकार 13,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। अतः भारत में मेडिकल पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के करोड़ों नए अवसर निर्मित किए जा सकते हैं।

इसी प्रकार भारत में सुरक्षा के क्षेत्र में भी अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। भारत अभी तक अपनी सुरक्षा सम्बंधी आवश्यकताओं के लिए सुरक्षा उपकरणों का बड़ी मात्रा में आयात करता रहा है। परंतु, पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान का स्पष्ट असर अब दिखाई देने लगा है और भारत आज मिसाईल सहित कई सुरक्षा उपकरणों का निर्यात करने लगा है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए केंद्र सरकार के बजट में सुरक्षा क्षेत्र के लिए 4.92 लाख करोड़ रुपए की भारी भरकम राशि का आबंटन किया गया है, साथ ही, पूंजीगत खर्चों में भी सुरक्षा क्षेत्र के लिए 2 लाख करोड़ रुपए के बजट का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। इसी प्रकार, देश में अधोसंरचना को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से पूंजीगत खर्चों को भी 11.20 लाख करोड़ रुपए के स्तर पर रखा गया है। साथ ही, सरकारी उपक्रमों एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियां भी अपने पूंजी निवेश को बढ़ाने का प्रयास यदि करती हैं एवं विदेशी कम्पनियों द्वारा किए जाने वाले विदेशी निवेश को मिलाकर पूंजीगत मदों पर खर्चे को 15 लाख करोड़ रुपए की राशि तक ले जाया जा सकता है। इसके लिए देश में ईज आफ डूइंग बिजनेस को अधिक आसान बनाना होगा एवं पुराने कानूनों को हटाकर उद्योग मित्र कानून बनाए जाने की आवश्यकता है। चूंकि विश्व के कई देशों, विशेष रूप से विकसित देशों, में प्रौढ़ नागरिकों की संख्या लगातार बढ़ रही है अतः इन देशों में युवाओं की संख्या में कमी के चलते विभिन्न संस्थानों में कार्य करने वाले नागरिकों की कमी हो रही है। अतः भारत को पूरे विश्व में कौशल से परिपूर्ण युवाओं के केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

– प्रहलाद सबनानी

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

समसामयिक

राहुल गांधी की देश-विरोधी बचकानी राजनीति

एक बार फिर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को नीचा दिखाने के इरादे से ऐसा बयान दिया है जो भारत की साख को आघात लगाने वाला है बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता को ध्वस्त करने वाला है। राहुल गांधी किस तरह गैर जिम्मेदाराना बयान देने में माहिर हो गए हैं, यह इस कथन से फिर सिद्ध हुआ कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर इसलिए बार-बार अमेरिका जा रहे थे, ताकि भारतीय प्रधानमंत्री को डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया जाए। राहुल गांधी मोदी-विरोध में कुछ भी बोले, यह राजनीति का हिस्सा हो सकता है, लेकिन वे मोदी विरोध के चलते देश-विरोध में जिस तरह के अनाप-शनाप दावे करते हुए गलत बयान देते हैं, वह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता एवं बचकानेपन को ही दर्शाता है। आखिर कब राहुल एक जिम्मेदार एवं विवेकवान प्रतिपक्ष के नेता बनेंगे?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से राजनीति से हटकर भी गहरे व्यक्तिगत आत्मीय मित्रवत संबंध है, इसलिये उनका शपथ ग्रहण समारोह में बुलाने पर किसी तरह का संदेह नहीं हो सकता। लेकिन इस बात को लेकर राहुल के बयान पर हैरानी होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि लोकसभा में संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने राहुल गांधी की इस विचित्र बात पर आपत्ति जताई, बल्कि विदेश मंत्री जयशंकर ने भी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि वह ऐसी बात कहकर भारत की छवि खराब करने का काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राहुल गांधी के झूठ का उद्देश्य राजनीतिक हो सकता है, लेकिन ऐसे झूठे, भ्रामक एवं गुमराह करने वाले बयान से भारत की छवि को गहरा नुकसान हुआ है। यह तय है कि विदेशी मंत्री के प्रतिवाद का राहुल गांधी की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है। ऐसी मिथ्या बातें करके वे प्रधानमंत्री पर हमला करने का कोई अवसर नहीं चुकते। वह प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी को कोई महत्व नहीं देते। आखिर यह किसी से छिपा नहीं कि वह उनके खिलाफ तू-तड़ाक वाली अशालीन एवं अमर्यादित भाषा का उपयोग करते रहे हैं। विडंबना यह है कि इस आदत का परित्याग वह नेता प्रतिपक्ष का पद हासिल करने के बाद भी नहीं कर पा रहे हैं। समस्या केवल यह नहीं कि वह प्रधानमंत्री पद की गरिमा की परवाह नहीं करते। समस्या यह भी है कि वह प्रायः ऐसी बचकानी बातें कर जाते हैं, जो राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल होती हैं या दूसरे देशों से संबंधों पर बुरा असर डालती हैं।

राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष हैं और उन्होंने अन्य सांसदों की ही तरह देश की अखंडता और एकता की रक्षा करने की शपथ ली थी, लेकिन उनके द्वारा समय-समय पर दिये गये वक्तव्य एवं टिप्पणियां पूरी तरह से राष्ट्र विरोधी है। ऐसा लगता है कि राहुल गांधी भारत विरोधी अलगाववादी समूह के नेता बनने की राह पर अग्रसर हैं और उनका इरादा भारत की एकता, अखंडता और सामाजिक सद्भाव को नष्ट करना और देश को गृहयुद्ध की ओर धकेलना है। इस तरह राहुल गांधी द्वारा देश में विभाजन के बीज बोने के प्रयास निंदनीय ही नहीं, घोर चिन्तनीय है। सत्ता के लालच में कांग्रेस एवं उनके नेता देश की अखंडता के साथ समझौता और आम आदमी के भरोसे को तोड़ने से बाज नहीं आ रहे हैं। राहुल के बयानों से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी लड़ाई सिर्फ भाजपा और आरएसएस से नहीं, बल्कि भारत से है। राहुल गांधी अक्सर भारत राष्ट्र अर्थात भारत के संविधान यानी आंबेडकर के संविधान के खिलाफ विषवमन करते दिखाई देते हैं। गांधी परिवार की 'मुंह में राम और बगल में छुरी' वाली कहावत जनता के सामने बार-बार आती रही है। आंबेडकर के अस्तित्व को नकार कर भारत के संविधान को बदलने के बाद गांधी परिवार देश का विभाजन, दुश्मन देश के नेताओं एवं शक्तियों के सपनों का टुकड़ों वाला भारत चाहता है। आखिर राहुल गांधी और कांग्रेसी किस बात के लिए संविधान की प्रति लेकर चलते हैं? इस तरह एक गैर जिम्मेदार और बचकाने नेता का लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होना क्या देश का दुर्भाग्य नहीं है? राहुल गांधी को गंभीर आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है।

राहुल गांधी अपने आधे-अधूरे, तथ्यहीन एवं विध्वंसात्मक बयानों को लेकर निरन्तर चर्चा में रहते हैं। उनके बयान हास्यास्पद होने के साथ उद्देश्यहीन एवं उच्छृंखल भी होते हैं। राहुल ने पहले भी बातों-बातों में यह कहा था कि चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया है। वह देश के प्रमुख विपक्षी दल के नेता हैं। सरकार की नीतियों से नाराज होना, सरकार के कदमों पर सवाल उठाना उनके लिए जरूरी है। राजनीतिक रूप से यह उनका कर्तव्य भी है। लेकिन चीन के साथ उनकी सहानुभूति अनेक प्रश्नों को खड़ा करती है। ऐसे ही सवालों में आज तक इस सवाल का जवाब भी नहीं मिला कि आखिर राजीव गांधी फाउंडेशन को चीनी दूतावास से चंदा लेने की जरूरत क्यों पड़ी? वह यह नहीं बताते कि 2008 में अपनी बीजिंग यात्रा के दौरान सोनिया गांधी और उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी से समझौता क्यों किया था? इतना ही नहीं, जब राहुल गांधी राफेल विमान सौदे में कथित दलाली खोज लाए थे, तो यहां तक कह गए थे कि खुद फ्रांस के राष्ट्पति ने उन्हें बताया था कि दोनों देशों में ऐसा कोई समझौता नहीं, जो राफेल विमान की कीमत बताने से रोकता हो। उनके इस झूठ का खंडन फ्रांस की सरकार को करना पड़ा था। डोकलाम विवाद के समय वह भारतीय विदेश मंत्रालय को सूचित किए बिना किस तरह चीनी राजदूत से मुलाकात करने चले गए थे। जब इस मुलाकात की बात सार्वजनिक हो गई तो उन्होंने यह विचित्र दावा किया कि वह वस्तुस्थिति जानने के लिए चीनी राजदूत से मिले थे। क्या इससे अधिक गैरजिम्मेदाराना हरकत और कोई हो सकती है?

राहुल गांधी के गैरजिम्मेदाराना बयानों से यही पता चलता है कि उन्हें न तो प्रधानमंत्री की बातों पर यकीन है, न रक्षा मंत्री की और न ही विदेश मंत्री की। यह भी स्पष्ट है कि उन्हें शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर भी भरोसा नहीं। ध्यान रहे, वह सर्जिकल और एयर स्ट्राइक पर भी बतूके सवाल खड़े कर चुके हैं। उनकी कार्यशैली एवं बयानबाजी में अभी भी बचकानापन एवं गैरजिम्मेदाराना भाव ही झलकता है।

–ललित गर्ग

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

राहुल गांधी किस तरह गैर जिम्मेदाराना बयान देने में माहिर हो गए हैं, यह इस कथन से फिर सिद्ध हुआ कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर इसलिए बार-बार अमेरिका जा रहे थे, ताकि भारतीय प्रधानमंत्री को डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया जाए। राहुल गांधी मोदी-विरोध में कुछ भी बोले, यह राजनीति का हिस्सा हो सकता है, लेकिन वे मोदी विरोध के चलते देश-विरोध में जिस तरह के अनाप-शनाप दावे करते हुए गलत बयान देते हैं, वह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता एवं बचकानेपन को ही दर्शाता है। आखिर कब राहुल एक जिम्मेदार एवं विवेकवान प्रतिपक्ष के नेता बनेंगे?

दिल्ली चुनाव विश्लेषण

एमएसटी के भरोसे आप और भाजपा तो जीरो फैक्टर से पार पाने की जुगत में कांग्रेस

दिल्ली में कई दिनों से चल रही राजनीतिक दलों की भागदौड़ बुधवार मतदान के बाद समाप्त हो गई। 8 फरवरी शनिवार को नतीजे आएंगे। परिणाम में इस बार एमएसटी का पूरा प्रभाव दिखेगा। भाजपा एम फैक्टर (मोदी फैक्टर) से सत्ता में आने की उम्मीद बनाए हुए है तो आम आदमी पार्टी एस मतलब एसएसपी मॉडल (शिक्षा, स्वास्थ्य और पानी) और टी अर्थात् टीना (देयर इज नो अल्टरनेटिव) के दम पर सत्ता वापसी का दावा कर रही है। कांग्रेस के लिए सत्ता पर काबिज होने से पहले जीरो फैक्टर से उभरना सबसे बड़ी चुनौती है। परिणाम आने तक सबके द्वारा अपने-अपने हिसाब से गोटियां सेट की जायेंगी ताकि कुछ कमापेशी हो तो उसकी पूर्ति कर कुर्सी की लालसा पूरी की जा सके। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों के लिए इस बार 699 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। परिणाम किसके पक्ष में रहेंगे, इस बारे में कुछ भी कहना अभी उपयुक्त नहीं रहेगा।

इस बार का चुनाव कुछ हटकर हुआ है। एक-दूसरे को नीचा दिखाने में किसी के भी द्वारा कमी नहीं छोड़ी गई है। फ्री की रेवड़ियां से मतदाताओं को लुभाने का प्रयास सबके द्वारा किया गया हैं। आम आदमी पार्टी जहां अपने कार्यो और टीना फैक्टर (देयर इज नो अल्टरनेटिव) और एसएसपी(शिक्षा, स्वास्थ्य और पानी)मॉडल से वापसी की उम्मीद में है, वहीं बीजेपी एम फैक्टर (मोदी फैक्टर) और यमुना मैया (यमुना नदी) के सहारे शीशमहल, भ्रष्टाचार, यमुना सफाई, पेयजल आदि मुद्दों पर दिल्ली में अपना वनवास खत्म करना चाह रही है। कांग्रेस के लिए दिल्ली चुनाव डूबते को तिनके का सहारा की तरह है। राजनीति के वेंटीलेटर पर लेटी कांग्रेस के लिए दिल्ली का परिणाम किसी संजीवनी से कम नहीं होगा। दिल्ली की राजनीति अपने आप में अलग है। यहां जो दिखता है वो कई बार होता नहीं। और जो होता है, वो अप्रत्याशित होता है। एक्जिट पोल पर यकीन करना बेमानी है। यही एक्जिट पोल(सर्वेक्षण) कई बार उम्मीदों से एक्जिट(बाहर) कर जाता है। एक बात तो इस बार तय है कि दिल्ली में इस बार जो होगा वो ऐतिहासिक होगा। आम आदमी ने साथ दिया तो आम आदमी पार्टी को चौथी बार सत्ता में आना तय है। इसके विपरीत हवा ने रुख बदला तो 27 वर्ष बाद भाजपा की लॉटरी निकल सकती है। कांग्रेस चुनाव में अपनी जीत का अलग ही एंगल देख रही है। आप और भाजपा की कड़ी टक्कर कांग्रेस को फायदा दिलाएगी। दिल्ली चुनाव में सबसे ज्यादा जोर यदि कोई पार्टी लगा रही है तो वह है भारतीय जनता पार्टी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर भाजपा सरकार के महान धुरंधर दिन-रात एक किए हुए हैं। भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों समेत उनके सिपहसालारों की फौज द्वारा भी घर-घर संपर्क साधने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी गई है। केजरीवाल के यमुना में जहर के बयान के बाद तो भाजपा फुल फॉर्म में है। बीजेपी को उम्मीद है कि लोकसभा चुनाव में जितना वोट उसे मिला था अगर वही इस बार मिल गया तो आम आदमी पार्टी को सत्ता से बाहर करने का उनका सपना इस बार पक्का पूरा हो जायेगा। पूर्व समय में तीन योजना लगातार सत्ता संभालने वाली कांग्रेस भी इस बार सत्ता वापसी की उम्मीद बनाए हुए है। बाकी दिल्ली के मतदाता पिछली दो योजना से उन्हें जीरो से ऊपर आने ही नहीं दे रहे। इस बार जिस तरह से कांग्रेस ने चुनाव लड़ा है, उससे इस बार कांग्रेस की उम्मीदों को पंख लग सकते हैं। भारत जोड़ो यात्रा से राहुल गांधी ने कांग्रेस को मजबूत करने में पूरी मेहनत की है। जिसका कांग्रेस को फायदा भी हुआ है। हरियाणा में तो कांग्रेस लगभग सत्ता में वापसी कर ही चुकी थी। बेबाक बोलों ने सारी हवा बदल दी। दिल्ली चुनाव में इस बात का पूरा ध्यान रखा जा रहा है कि हरियाणा की तरह दिल्ली में कोई लापरवाही न हो। ठीक इनके विपरीत आम आदमी पार्टी इस बार का चुनाव अलग ही तरीके से लड़ रही है। विपक्ष द्वारा शराब घोटाला या भ्रष्टाचार आदि मुद्दे पर घेरे जाने का तोड़ निकाला हुआ है। आतिशी को सत्ता सौंप केजरीवाल ने यह मैसेज देने का काम किया है कि आम आदमी पार्टी सिर्फ केजरीवाल के भरोसे नहीं है। बड़े नेताओं की रैलियां और उनके जरिए बनाए गए नैरेटिव को भी केजरीवाल ने अपने ऊपर प्रभावी नहीं होने दिया। भाजपा और कांग्रेस के हमले पर केजरीवाल उनसे सीएम फेस का बार-बार सवाल उठा चटकारे लेने में कमी नहीं छोड़ रहे। टीना फैक्टर तो आम आदमी पार्टी के लिए हथियार से कम नहीं है। पार्टी नेता अपने प्रचार में इसे पूरा इस्तेमाल कर रहे हैं। न भाजपा और न ही कांग्रेस ने केजरीवाल के सामने बतौर मुख्यमंत्री उम्मीदवार किसी चेहरे को प्रोजेक्ट किया है। कुछ भी हो दिल्ली इस बार नया इतिहास लिखेगी। केजरीवाल चौथी बार सत्ता में आए तो यह भी एक रिकॉर्ड होगा कि कोई दल लगातार चौथी बार सत्ता में आए। भाजपा का जितना भी कम ऐतिहासिक नहीं होगा। 27 वर्ष बाद भाजपा सत्ता में वापसी करेंगी। कांग्रेस जीत गई तब भी इतिहास ही लिखा जाएगा। सत्ता में तो वापसी होगी साथ भी आने वाले अन्य चुनावों के लिए संजीवनी मिल जाएगी। परिणाम ईवीएम में बंद हो गया है। वास्तविक परिणाम तो 8 फरवरी को पता लगेगा। इतने अपनी-अपनी जीत के जयघोष लगते रहेंगे। यह पक्का तय है कि इस बार परिणाम अप्रत्याशित हो होगा।

लेखक; सुशील कुमार 'नवीन'

हिसार ,96717 26237 लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार है। दो बार अकादमी सम्मान से भी सम्मानित हैं।

स्वास्थ्य जयपुर टाइम्स

गुरूवार
6 फरवरी, 2025

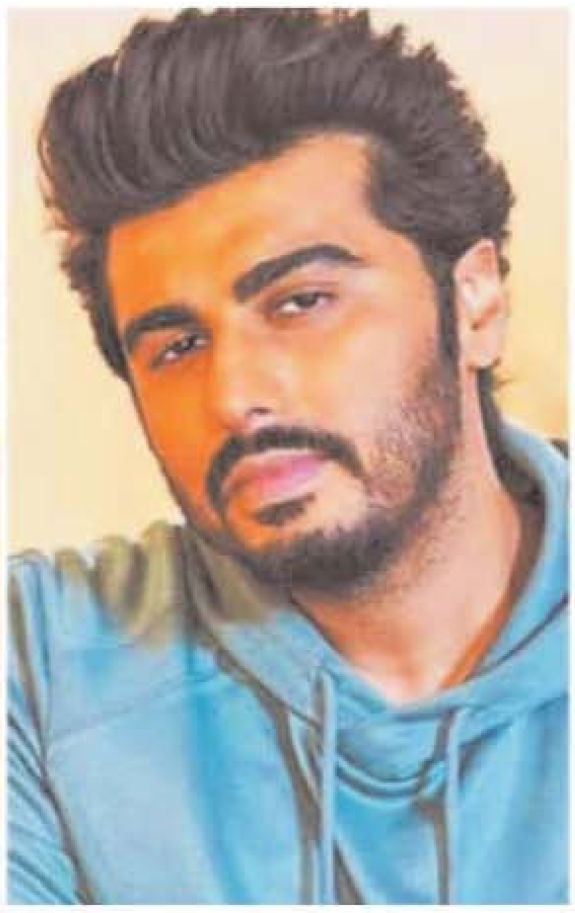

रकुल प्रीत संग काम को लेकर बोलीं भूमि

एक ही फिल्म में दो अभिनेत्रियां काम नहीं कर सकतीं...

भूमि पेडनेकर ने मेरे हसबैंड की बीवी फिल्म में रकुल प्रीत सिंह के साथ काम करने को लेकर अपनी राय साझा की है। उन्होंने बताया कि एक ही फिल्म में दो अभिनेत्रियां काम नहीं कर सकती हैं ये गलत नरेटिव है। बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर ने अपनी आगामी फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी में रकुल प्रीत संग काम करने को लेकर अपने विचार साझा किए हैं। उन्होंने कहा कि एक ही फिल्म में दो अभिनेत्रियां काम नहीं कर सकतीं ये बिल्कुल गलत नरेटिव है। बता दें इस फिल्म में भूमि पेडनेकर और रकुल प्रीत सिंह एक साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आने वाली हैं। फिल्म में अर्जुन कपूर भी मुख्य किरदार में हैं। भूमि ने बॉलीवुड फिल्मों में दो अभिनेत्रियों के एक साथ काम करने को लेकर अपनी टिप्पणी दी है।

कॉमेडी फिल्म को लेकर कही ये बात

उन्होंने कहा, आमतौर पर महिला कलाकारों को कॉमेडी फिल्में करने का मौका नहीं मिलता। मुझे कॉमेडी फिल्में देखना बहुत पसंद है। इस फिल्म में दोनों महिला कलाकारों ने कॉमेडी को आगे बढ़ाया है, जैसा कि आप 90 के दशक में नंबर वन सीरीज की फिल्मों में देखते थे, जिसमें अभिनेत्रियां कॉमेडी करती थीं। इसलिए, हमने भी कुछ ऐसा ही किया है।

रकुल प्रीत सिंह के लिए बोलीं भूमि

भूमि ने रकुल प्रीत सिंह के साथ फिल्म करने को लेकर भी अपनी बात सामने रखी। उन्होंने कहा, वह मेरी बहन जैसी हैं। उसकी शादी मेरे सबसे अच्छे दोस्त जैकी भगनानी से हुई है और अब वह मेरी सबसे करीबी दोस्तों में से एक बन गई है। यह कहा जाता है कि दो अभिनेत्रियां एक साथ असुरक्षित हैं, हालांकि ये सच नहीं है और यह कुछ ऐसे पुरुषों द्वारा शुरू किया गया होगा जो खुद सुरक्षित नहीं हैं। हमारे बीच कुछ भी गलत नहीं है, बल्कि हमने फिल्म की शूटिंग में पूरी मस्ती की।

सामंथा से लेकर शरवरी तक, बॉलीवुड में इस अभिनेत्रियों के एक्शन का बजता है डंका

बॉलीवुड जगत अपनी अलग-अलग कहानियों और शानदार फिल्मों के कारण चर्चा में बना रहता है। फिल्मी जगह की अभिनेत्रियां भी अक्सर अपनी अलग तरह की फिल्मों के कारण चर्चा में रहती हैं। राज एंड डीके की सीरीज 'रक्त ब्रम्हांड' में सामंथा रुथ प्रभु एक बार फिर अपने एक्शन अवतार में नजर आएंगी। सामंथा इस सीरीज में आदित्य रॉय कपूर के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। आइए आपको बताते हैं ऐसी कुछ अभिनेत्रियों के बारे में जो अपनी एक्शन फिल्मों के कारण चर्चा में रहीं। सामंथा रुथ प्रभु अपनी फिल्म रक्त ब्रम्हांड के कारण चर्चा में हैं। इससे पहले वे ओटीटी पर रिलीज हुई फिल्म सिटाडेल हनी बनी में अपने एक्शन अवतार में नजर आई थीं। सामंथा इस सीरीज में वरुण धवन के साथ एक्शन सीक्वेंस करती नजर आई थीं।

प्रियंका चोपड़ा

बॉलीवुड से हॉलीवुड में जाकर अपने करियर की अलग बुलंदी हासिल करने वाली प्रियंका चोपड़ा भी अपनी एक्शन फिल्मों के कारण चर्चा में रहती हैं। वे डॉन 2 (2011), अग्निपथ (2012) और कृष 3 (2013) में नजर आ चुकी हैं।

शरवरी

शरवरी को फिल्म मुंज्या में देखा गया था। वे अब अपनी फिल्म अल्फा के कारण चर्चा में हैं। इस फिल्म में शरवरी का एक्शन अवतार नजर आ सकता है।

आलिया भट्ट

फिल्म अल्फा में शरवरी के साथ आलिया भट्ट भी नजर आने वाली हैं। आलिया इससे पहले जिगरा में भी अपना एक्शन अवतार नजर आ चुकी हैं।

दिशा पटानी

बॉलीवुड अभिनेत्री दिशा पटानी को भी उनके एक्शन अवतार के कारण जाना जाता है। वे इससे पहले बागी 2 (2018), मलंग (2020), कल्कि 2898 एडी (2024) फिल्मों में एक्शन सीन कर चुकी हैं।

करीना कपूर खान

करीना कपूर भी बॉलीवुड में कई एक्शन फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। साल 2009 में रिलीज हुई फिल्म कुर्बान एक एक्शन थ्रिलर फिल्म है। इसमें करीना ने अवंतिका नाम की प्रोफेसर का रोल किया है। गब्बर इज बैक भी करीना के करियर की अहम थ्रिलर फिल्मों में से एक है।

अभिनेत्री से राइटर बनीं हुमा कुरैशी

अभिनेत्री हुमा कुरैशी ने अपनी अभिनय काबिलियत से खूब तारीफें बटोरी हैं। अब बतौर लेखक भी उन्होंने अपना सफर शुरु किया है। उन्होंने अपनी पहली किताब लॉन्च की है। अभिनय की दुनिया में अपनी प्रतिभा साबित करने के बाद हुमा कुरैशी ने अब लेखन की दुनिया में कदम रखा है। हाल ही में उन्होंने अपनी पहली किताब जेबा: एन एक्सीडेंटल सुपरहीरो लॉन्च की है। हुमा ने जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में यह किताब रविवार को लॉन्च की। इस दौरान अभिनेत्री ने बतौर लेखक अपनी यात्रा पर भी बात की।

कोविड की वजह से ठप हुईं योजनाएं

हुमा कुरैशी ने अपनी किताब लिखने की यात्रा को लेकर कहा कि शुरुआती योजना कहानी को फिल्म में बदलने की थी, लेकिन कोविड-19 महामारी ने उन योजनाओं को रोक दिया। हुमा ने कहा, मैंने 2019 में किताब लिखना शुरू किया था। 10-20 पेज लिखने के बाद मैंने इसे कुछ लोगों को दिखाया और सभी ने कहा कि यह एक अच्छा आइडिया है। ईमानदारी से कहूं तो जब मैंने इसे लिखना शुरू किया था, तो मेरा आइडिया इस पर एक फिल्म या कोई टेलीविजन शो बनाने का था, इसलिए मैंने उसी तरह से यह काम किया। फिर कोविड महामारी आ गई, इसलिए जो भी योजनाएं थीं, वे सब ठप हो गईं।

बोलीं- मैंने कई लोगों से लिखने को कहा

हुमा ने आगे कहा, फिर मैंने सोचना शुरू किया कि क्या मुझे इस पर एक स्क्रिप्ट लिखनी चाहिए या इसे एक ग्राफिक उपन्यास में बदलना चाहिए। मैंने इसे खुद लिखने के लिए काफी देरी की। मैंने कई लोगों से लिखने के लिए कहा, लेकिन वे सभी वापस आए और कहा कि आपको इसे लिखना होगा, क्योंकि केवल आप ही इसे लिख सकती हैं। और फिर मुझे लगभग दो साल लग गए और जो कुछ भी मैंने उस समय महसूस किया, मैं उसे किताब में बहुत ईमानदारी से पिरो पाई हूं।

दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं

हुमा कुरैशी ने राइटिंग को एक दिलचस्प अनुभव बताया। हुमा ने कहा, मुझे लगता है कि यह एक भावनात्मक प्रक्रिया थी। हुमा ने आगे कहा, मैं यह सलाह देती हूं कि अगर कोई किसी भी तरह की चिंता से जूझ रहा है, उसे लिखना चाहिए। यह किसी भी बात को पन्नों पर उतारने का एक शानदार तरीका है। हुमा ने बताया कि उन्के फिल्मी करियर ने किताब को शेप देने में किस तरह मदद की? हुमा के मुताबिक, मुझे लगता है कि किसी भी कलाकार के जीवन में दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं- सफलता और असफलता। सफलता से व्यक्ति बहुत कम सीखता है और असफलता से बहुत कुछ सीखता है। मुझे लगता है कि फिल्म इंडस्ट्री के पिछले दस साल मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। आप लोगों ने मेरी सफलता देखी है। मेरे अच्छे और बुरे दिन देखे हैं।

हैलो, मैं आमिर खान बोल रहा हूं, प्लीज आइएगा जरूर, जन्मदिन पर जुटेंगी पत्नियां और प्रेमिकाएं

साल 2025 को यादगार बनाने के आमिर खान के पास और भी दस बहाने हैं। उनके बेटे जुनैद की सिनेमाघरों में रिलीज हो रही पहली फिल्म 'लवयापा' को लेकर उनके परिवार में खासा उत्साह है।

हैलो, मैं आमिर खान बोल रहा हूं। आपको अपने जन्मदिन की पूर्व संध्या पर न्योता भेज रहा हूं। प्लीज, आइएगा जरूर! हिंदी सिनेमा के सितारों को अपने मोबाइल फोन पर जल्द ही ये आवाज सुनने को मिलने वाली है। कुछ को तो इसके बारे में पता चल ही चुका है क्योंकि सितारों की तारीखें बुक करने के लिए कम से कम दो-तीन महीने पहले से योजनाएं बनाना जरूरी होता है। आमिर 14 मार्च को 60 साल के हो जाएंगे और इस आंकड़े को छूने से पहले वह फिल्म जगत के उन सारे लोगों को शुक्रिया अदा करना चाहते हैं जिन्होंने उन्हें यहां तक पहुंचने में किसी न किसी तरह मदद की।

मोहम्मद आमिर हुसैन खान उर्फ आमिर खान अपने समय के दिग्गज फिल्म निर्माता ताहिर हुसैन के बेटे हैं। उनके चाचा नासिर हुसैन हिंदी सिनेमा के कामयाब फिल्म निर्देशक रहे। चचेरे भाई मंसूर खान ने आमिर को लेकर बतौर हीरो उनकी पहली फिल्म 'कयामत से कयामत तक' बनाई और उनकी आखिरी फिल्म 'लाल सिंह चड्ढा' का निर्देशन किया उनके लंबे समय तक सहायक रहे अद्वैत चंदन ने। अद्वैत अब आमिर के बेटे जुनैद की फिल्म 'लवयापा' का भी निर्देशन कर रहे हैं। 24 मार्च 1965 को जन्मे आमिर को भारत सरकार पद्मश्री और पद्म भूषण से सम्मानित कर चुकी है।

लखनऊ में आलोक नाथ-श्रेयस तलपदे के खिलाफ एफआईआर दर्ज

धोखाधड़ी से जुड़ा है मामला

लखनऊ के गोमती नगर पुलिस स्टेशन में एक्टर आलोक नाथ और श्रेयस तलपदे पर एफआईआर दर्ज की गई है। एक्टर्स पर कुछ निवेशकों के करोड़ रुपये ठगने का आरोप है। जानिए क्या है पूरा मामला। हाल ही में लखनऊ के गोमती नगर पुलिस स्टेशन में एक क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी के सदस्यों समेत 7 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। इन लोगों में एक्टर आलोक नाथ और श्रेयस तलपदे भी शामिल हैं। एफआईआर में कहा गया है कि इन लोगों ने 45 निवेशकों से 9.12 करोड़ रुपये ठगे हैं।

लखनऊ के अलावा हरियाणा में भी मामला दर्ज

सिर्फ लखनऊ ही नहीं हरियाणा के सोनीपत में भी कुछ दिन पहले बॉलीवुड एक्टर आलोक नाथ और श्रेयस तलपदे के खिलाफ एक मामला दर्ज हुआ है। इन दो कलाकारों के अलावा 11 और लोगों पर मल्टी लेवल मार्केटिंग घोटाले का आरोप है और उन पर पुलिस में मामला दर्ज किया गया था। यह मामला एक कोऑपरेटिव सोसाइटी से जुड़ा है, जिसमें कई लोगों से करोड़ों रुपए लेकर कुछ लोग गायब हो गए। यह कोऑपरेटिव सोसाइटी पिछले छह साल से लोगों से पैसे वसूल रही थी लेकिन जब लोगों ने अपने पैसे वापस मांगे तो इसके संचालक फरार हो गए।

श्रेयस-आलोक ने किया था प्रचार

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार एक्टर आलोक नाथ और श्रेयस तलपदे ने इस कोऑपरेटिव सोसाइटी की निवेश योजनाओं का प्रचार किया है। इस कोऑपरेटिव सोसाइटी के प्रोग्राम में सोनू सूद भी चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए।

कई जगह कारोबार करती है ये कंपनी

एफआईआर में हिसाब से ह्यूमन वेलफेयर क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी नाम की एक संस्था है, जिसने 16 सितंबर 2016 को हरियाणा और लखनऊ समेत कई राज्यों में अपना काम शुरू किया था। यह सोसायटी मध्य प्रदेश के इंदौर में रजिस्टर्ड थी और मल्टी स्टेट कोऑपरेटिव सोसाइटी एक्ट के तहत काम कर रही थी। इस सोसायटी ने निवेशकों को फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) और रेकरिंग डिपॉजिट (आरडी) योजनाओं में इंवेस्ट करने का ऑफर दिया जाता है, उन्हें अच्छी ब्याज दरों का लालच दिया जाता था। इस कंपनी की लगभग 250 से ज्यादा ब्रांच हैं। लेकिन इस कंपनी ने बाद में लोगों से धोखाधड़ी की, उनके पैसे लेकर गायब हो गए। इस कोऑपरेटिव सोसायटी से जुड़े एक एजेंट विपुल ने बताया कि उन्होंने 1,000 से अधिक खाते खोले हैं लेकिन इनमें से किसी भी खाते में अब तक पैसे नहीं आए हैं। इस सोसायटी की 250 से अधिक शाखाएं थीं और करीब 50 लाख लोग इससे जुड़े हुए थे।

अभिजीत भट्टाचार्य ने उदित नारायण को कहा खिलाड़ी दोस्त, यूजर बोले- बड़े चालाक हो

मशहूर गायक उदित नारायण हाल ही में एक लाइव कॉन्सर्ट के दौरान अपनी महिला प्रशंसकों को चूमते दिखे। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ। इसके बाद उदित नारायण को आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। इस पर उदित नारायण सफाई भी दे चुके हैं। इस बीच उनके दोस्त व लोकप्रिय गायक अभिजीत भट्टाचार्य ने इस पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने मजेदार अंदाज में टिप्पणी करते हुए उदित नारायण को खिलाड़ी कहा है।

मेरा खिलाड़ी दोस्त, लव यू...

अभिजीत भट्टाचार्य ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक वीडियो शेयर किया है। इसमें वे और उदित नारायण परफॉर्म करते नजर आ रहे हैं और गाना है मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी। इस वीडियो को शेयर करते हुए अभिजीत ने कैप्शन में हैशटैग के साथ लिखा है, ये खिलाड़ी मैं अनाड़ी। इसके अलावा उन्होंने कमेंट करते हुए लिखा है, मेरा खिलाड़ी दोस्त, सिक्सर पर सिक्सर, लव यू।

यूजर बोले- ऐसा दोस्त दुश्मन को भी न मिले

अभिजीत के इस वीडियो और उदित नारायण को खिलाड़ी कहे जाने पर नेटिजन्स उन्हें ट्रोल कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, टाइम पर गाना लगाया, बड़े चालाक हो आप। एक यूजर ने लिखा, भगवान ऐसा दोस्त किसी दुश्मन को भी न दे। एक अन्य यूजर ने लिखा है, कैसे दोस्त हो आप? वीडियो पोस्ट करने के लिए क्या टाइमिंग चुनी है। एक यूजर ने लिखा, वीडियो और मकसद।

अब अपनी हॉबी को ही बना सकते हैं करियर ऑप्शन

आज के समय में जॉब करना आसान नहीं रह गया है। यह काम तब और मुश्किल हो जाता है, जब किसी का प्रोफेशन और हॉबी अलग-अलग हो। जिसके कारण आजकल कई लोग जॉब तो कर रहे हैं , लेकिन वे उन जॉब्स से खुश नहीं हैं। पैसा कमाने के लिए जॉब करना और अपने पैशन को फॉलो करके उसमें आगे जाना दोनों बहुत अलग बात हैं। फिर चाहे उसमे पैसे थोड़े कम क्यों न हो।

फोटोग्राफी, राइटिंग, म्यूजिक, डांस, सिंगिंग, कुकिंग, पेंटिंग समेत कई ऐसी हॉबी होती हैं, जिन्हे आप फुल टाइम करियर में बदल सकते हैं। सोचिये जो काम आपको सबसे ज्यादा पसंद है और आपकी हॉबी है, उसे आप अलग से समय निकाल कर करते हैं, अगर इसी हॉबी को अपना प्रोफेशन बना लें तो कितना अच्छा रहेगा। अगर आप भी अपनी हॉबी को करियर का रूप देना चाहते हैं, तो यहां पर दिए गए 7 टिप्स को फॉलो कर सकते हैं।

सबसे पहले रिसर्च करें

अपनी हॉबी को प्रोफेशन में बदलने के लिए सबसे पहले जो काम आपको करना है वो है रिसर्च। किसी भी हॉबी के बारे में आपको पूरी जानकारी होनी चाहिए। आपको पता लगाना है कि क्या आपकी हॉबी फुल टाइम करियर बना सकती है या नहीं। उसमें जॉब और करियर के क्या अवसर हैं और उस क्षेत्र में कितने लोग काम कर रहे हैं और कितने अनुभव की जरूरत पड़ती है।

सही फीडबैक लें

कोई भी व्यक्ति अपने काम को जज नहीं कर सकता और न ही आपका परिवार या दोस्त आपकी इसमें मदद कर सकते हैं। किसी भी काम को शुरू करने से पहले गाइडेंस के लिए जरूरत होती है एक अनुभवी प्रोफेशनल की जो आपका मेंटर बने। हमेशा याद रखें कि काम शुरू करने से पहले अपनी हॉबी के बारे में अपने मेंटर से ईमानदार फीडबैक लेना बिल्कुल ना भूलें।

शुरू से शुरुआत करें

यह बात पहले ही अपने मन में बैठा लें कि जब आप कोई करियर स्विच करेंगे तो हो सकता है कि आपको नीचे से ही शुरू करना पड़े। आप अपनी जॉब में फिलहाल ऊंची पोस्ट पर हों, लेकिन आपको नये करियर में नीचे से ही शुरू करना होगा। इसलिए अपनी तैयारी पहले से ही पूरी कर लें।

पुरानी स्किल्स का इस्तेमाल

आपके पुराने और नये करियर में भले ही कोई समानताएं न हों। लेकिन फिर भी हर जगह से हम कुछ न कुछ स्किल्स तो सीखने को मिलती ही हैं। ऐसी कई स्किल होती हैं, जो हर फील्ड में काम आती हैं। जैसे अगर आप किसी कंपनी के सेल्स डिपार्टमेंट में काम कर रहे हैं और पेंटिंग में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो आपकी मार्केटिंग स्किल यहां भी काम आएगी। इसलिए ध्यान रखें कि सभी स्किल का इस्तेमाल अपने नये करियर में करें।

अपनी फील्ड के एक्सपर्ट बनें

अपनी हॉबी में करियर बनाने से पहले आप उस फील्ड से जुड़े लोगों से संपर्क बनाएं। अपनी नॉलेज और स्किल्स को बढ़ाएं, एक अच्छा नेटवर्क बनाएं। यह आपको आगे बढ़ने में मदद करेगी। आपको उस फील्ड में सबसे बेहतर बनाने की कोशिश करें।

अपने काम को मोनेटाइज करें

प्रूफ ऑफ कंसेप्ट एक बिजनेस टर्म है जिसका इस्तेमाल उन उद्यमियों के द्वारा किया जाता है जो फंडिंग की तलाश में होते हैं। आपको भी अपने लिए फंडिंग का इंतजाम करना चाहिए। क्योंकि किसी भी काम के लिए आर्थिक सुविधा बहुत जरूरी है। अगर वह नहीं रहेगा तो आप आगे भी नहीं बढ़ पाएंगे। इसलिए अपने काम से पैसे कमाने की कोशिश करें। आप चाहे तो आपकी स्किल को ऑनलाइन सिखा सकते हैं, एक्सपर्ट लेक्चर ले सकते हैं। या फिर खुद की वर्कशॉप भी लगा सकते हैं।

इस तरह बदले अपने पैशन को प्रोफेशन में

जब आपके मन में अपने पैशन को प्रोफेशन बनाने का विचार आए तो सबसे पहले अपने सभी हॉबी की लिस्ट बनाएं। मान लीजिये आपकी तीन हॉबी हैं। आपको लिखने का शौक हैं, फोटोग्राफी और पेंटिंग का भी शौक है। अब एक- एक हॉबी पर विचार कीजिए और उसके साथ कुछ दिन जी कर देखें। इससे आपको अपने आप ही मालूम हो जायेगा कि किस काम को लेकर आप ज्यादा बेहतर हैं और वह कार्य करते हुए आपको ज्यादा खुशी मिलती है।

सफलता के लिए हमेशा याद रखें...

किसी भी कार्य की सफलता के लिए भावना अच्छी होनी चाहिए। कार्य को प्रारम्भ करने के पीछे हमारा भाव क्या है। हम क्या करना चाहते हैं इसका महत्व है। सफलता के लिए भगवान का सुमिरन कर कार्य करें। भगवान का ध्यान कर किए जाने वाले कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। केवल परिश्रम से कुछ नहीं होता। कुछ लोग भगवान की असीम कृपा से कम परिश्रम में भी सफलता की ऊंचाइयों को छू लेते हैं। संतों ने सफलता के 3 मंत्र बताए। पहला भगवान का स्मरण, दूसरा धैर्य तथा तीसरा परमार्थ की भावना जुड़ी होनी चाहिए।

प्रत्येक मंदिर बाहर से स्वच्छ होना चाहिए और भीतर से पवित्र होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति भी बाहर से स्वच्छ और भीतर से पवित्र होना चाहिए। फिर कोई लम्बी साधना करने की जरूरत नही। मां त्रिस्तरीय काम करती है। सृष्टि को उत्पन्न करती है, उसका परिपालन और उसका संघार करती है। अम्बा के 3 स्तर हैं, स्त्री शरीर अम्बा का ही अंश है। ऐसा मानकर उसका 3 स्तर पर सम्मान करना चाहिए। कन्या का सम्मान, धर्मपत्नी का सम्मान और मां का सम्मान। आनंद की अंतिम सीमा आंसू हैं। हम सबका जीवन फल होना चाहिए प्रेम। सत्य शायद हम चूक जाएं। करुणा छूट जाए लेकिन प्रेम बना रहे। यह जीवन का फल है।

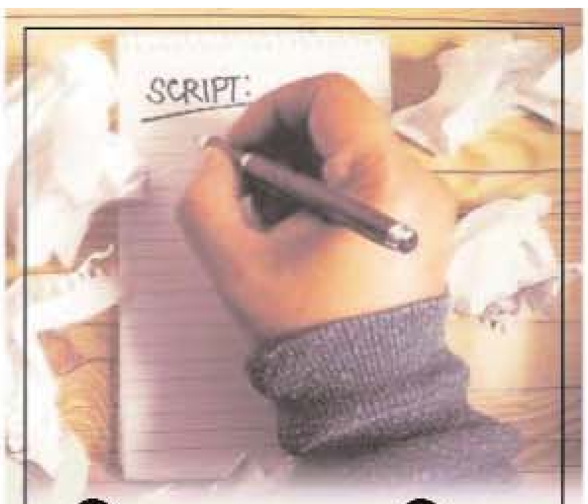

स्क्रिप्ट राइटिंग में करियर

यदि आप लेखन में दक्षता रखते हैं और आपको किताबें पढने में भी गहरी रुचि है तो स्क्रिप्ट राइटर के तौर पर आप अपने शौक को करियर का रूप भी दे सकते हैं। जो युवा लिखने-पढने के साथ मानवीय संवेदनाओं को पकड़ कर अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते हैं उनके लिए भी इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं।

कार्यक्षेत्र

विज्ञापनों के लिए स्क्रिप्ट राइटर्स की सेवाएं विशेष तौर पर ली जाती हैं। अक्सर विज्ञापनों में ऐसे शब्दों या पंक्तियों का इस्तेमाल किया जाता है जो लोगों की जुबान पर चढ़ जाती हैं। ये सब स्क्रिप्ट राइटर के दिमाग की ही उपज होते हैं। ऐसी रोचक बातों को जिंगल्स कहा जाता है।

बेशक स्क्रिप्ट राइटर का काम सिर्फ जिंगल लिखना ही नही होता बल्कि और कई चीजें हैं जो स्क्रिप्ट राइटर करते हैं लेकिन अधिकतर की शुरूआत जिंगल्स से ही होती है। जाहिर है कि स्क्रिप्ट राइटिंग कहानियां और कविताएं लिखने से कुछ अलग होता है क्योंकि स्क्रिप्ट में लिखी गई हर बात का फिल्मांकन किया जाता है इसीलिए लेखक को यह सोचकर लिखना पड़ता है कि उसके द्वारा लिखी गई स्क्रिप्ट पढ़ी नहीं देखी जाएगी।

कौशल

इसमें क्षेत्र में करियर बनाने के लिए छात्रों में रचनात्मकता का होना आवश्यक है। कम शब्दों में आपको उत्पादों की विशेषताओं को उपभोक्ताओं तक पहुंचाना होता है। विज्ञापनों के लिए ऐसी जिंगल्स की रचना करनी पड़ती है कि सुनते या पढ़ते ही वह ग्राहक के जेहन में आ जाए। वैसे कोई डिग्री कोर्स तो नहीं होता पर ये जर्नलिज्म के अंतर्गत आता है।

कल तक विज्ञापन ग्राहकों की संतुष्टि के लिए बनाए जाते थे लेकिन आज जो विज्ञापन आ रहे हैं वे ग्राहकों के संतोष के साथ उसकी खुशी और मनोरंजन को भी महत्व दे रहे हैं। मानवीय भावनात्मक पक्षों को छूते विज्ञापन न सिर्फ देर तक याद रहते हैं बल्कि मन पर भी गहरा असर छोड़ते हैं।

जिस भी भाषा में आप स्क्रिप्ट राइटिंग करना चाहते हैं उसका गहन ज्ञान आपको होना चाहिए। आपको अधिक से अधिक पुस्तकों को भी पढ़ना चाहिए ताकि आपको विभिन्न लेखकों की शैली की जानकारी भी प्राप्त हो सके। साथ ही फिल्मों तथा धारावाहिकों की स्क्रिप्ट पर गौर करने की आदत भी डाल लें। इसके बाद आप स्क्रिप्ट लेखन में हाथ आजमाएं।

योग्यता

स्क्रिप्ट राइटिंग में सबसे अहम जरूरत रचनात्मकता की होती है जो पूर्णत- व्यक्ति की विश्लेषण और कल्पना क्षमता पर आधारित होती है लेकिन फिर भी इसके लिए पत्रकारिता का कोर्स कर लिया जाए तो बेहतर होता है। किसी भी विषय में 12वीं कक्षा पास करने के बाद पत्रकारिता में ग्रैजुएशन कर सकते हैं। जो छात्र ग्रैजुएशन कर चुके हैं वे किसी प्रतिष्ठित संस्थान से पत्रकारिता में एम.ए. भी कर सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
एमिटी स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, नई दिल्ली
इंडियन इंस्टी. आफ मास कम्युनिकेशन नई दिल्ली
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश
माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

लाभदायक करियर इमेज कंसल्टिंग

भारत में लगातार बढ़ती जा रही प्रतिस्पर्धा की वजह से अपनी इमेज मैनेज करना भी एक अहम जरूरत बन चुकी है। अधिक से अधिक लोग अब इस जरूरत को महसूस कर रहे हैं जिस वजह से देश में इमेज कंसल्टैंट की सेवाओं की मांग में काफी इजाफा देखने को मिल रहा है।

इमेज कंसल्टिंग के तहत लोगों को अपने भीतर छुपी क्षमताओं को निखारने और साथ ही साथ उन क्षमताओं को सभी के समक्ष प्रदर्शित करने के लिए अपनी अपीयरैंस (दिखावट) के प्रबंधन हेतु मार्गदर्शन किया जाता है। इमेज कंसल्टिंग के तहत लोगों को परिधान पहनने व तैयार होने के ढंग, बॉडी लैंग्वेज, शिष्टाचार एवं सॉफ्ट स्किल्स के बारे में शिक्षित किया जाता है। इमेज कंसल्टैंट व्यक्तिगत रूप से तथा समूह में कोचिंग प्रदान करते हैं। वे किसी एक व्यक्ति अथवा कम्पनियों को अपनी सेवाएं देते हैं। वे लोगों के लिए मुक्त कार्यशाला भी आयोजित करते हैं। इस क्षेत्र से जुड़े कार्यों में पर्सनल शॉपिंग, यूनिफॉर्म डिजाइन, इमेज मैनेजमैंट, पॉलिसी डिजाइन, स्टाइलिंग आदि भी शामिल हैं। भारत में लगातार बढ़ती जा रही प्रतिस्पर्धा की वजह से अपनी इमेज मैनेज करना भी एक अहम जरूरत बन चुकी है। अधिक से अधिक लोग अब इस जरूरत को महसूस कर रहे हैं जिस वजह से देश में इमेज कंसल्टैंट की सेवाओं की मांग में काफी इजाफा देखने को मिल रहा है।

यह ऐसा करियर है, जिसमें व्यक्ति अन्य लोगों के विकास का मुख्य सहयोगी बनता है तथा अन्य लोगों को और अधिक सफल बनाने से उसे सफलता मिलती है। यह क्षेत्र उन महिलाओं को करियर बनाने का दूसरा मौका देता है जिन्होंने कुछ समय के लिए अपने पहले करियर को छोड़ रखा हो। इमेज कंसल्टिंग बिजनैस इंस्टी. भारत में इमेज कंसल्टैंसी की शिक्षा तथा प्रशिक्षण देने वाला अग्रणी संस्थान होने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी एक प्रतिष्ठित संस्थान है। यह संस्थान इमेज कंसल्टिंग एवं बिजनैस प्रोग्राम संबंधी अनोखे पेशेवर कोर्स करवाता है। इस संस्थान की डायरैक्टर सुमन अग्रवाल भारतीय उपमहाद्वीप की वरिष्ठतम इमेज कंसल्टैंट मानी जाती हैं। उनकी कहानी भी एक उत्तम प्रेरणा स्रोत है। उन्हें कॉलेज की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ी थी परंतु आज वह एक सफल उद्यमी तथा इस संस्थान की डायरैक्टर हैं, जिसकी स्थापना उन्होंने 2009 में की। यूनाइटेड किंगडम स्थित फैडरेशन ऑफ इमेज प्रोफैशनल इंटरनैशनल द्वारा उन्हें इमेज मास्टर अवार्ड से नवाजा गया जिससे वह भारतीय उपमहाद्वीप में सर्वाधिक वरिष्ठ इमेज कंसल्टैंट बन गई। इमेज कंसल्टिंग में पहनावे के महत्व पर वह कहती हैं, ''80 प्रतिशत से अधिक संवाद दृश्य होता है और पहनावा इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब भी आप किसी से मिलते हैं तो व्यक्ति का सबसे अधिक ध्यान सामने वाले के पहनावे पर ही जाता है। हालांकि यह बताना जरूरी है कि पहनावे के संबंध में कौशल एक इमेज कंसल्टैंट के पास होता है, वह सर्वश्रेष्ठ फैशन डिजाइनर समेत किसी अन्य पेशेवर के पास नहीं हो सकता है। महत्व बढ़िया परिधानों का नहीं होता, बल्कि उस संदेश का होता है जो आप अपने पहनावे से सामने वाले को देना चाहते हैं। सही पहनावे को सुनिश्चित बनाने के लिए व्यक्ति को अपने काम, लक्ष्यों एवं मौके का ध्यान रखने के अलावा आकर्षक दिखने के लिए अपने शारीरिक ढांचे, रंग-रूप, चेहरे के आकार आदि पर भी गौर करना पड़ता है।'' उनके अनुसार इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए यह एक उत्तम एवं बेहद लाभदायक करियर साबित हो सकता है।

पत्राचार शिक्षा से बदलती युवाओं की तकदीर

आज सभी विषयों में ग्रैजुएशन तथा मास्टर डिग्री कोर्स के अलावा अनेक सर्टीफिकेट कोर्स एवं डिप्लोमा भी पत्राचार माध्यम से दूरस्थ शिक्षा के रूप में उपलब्ध हैं। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों को सभी संबंधित विषयों का बुनियादी ज्ञान प्रदान करना होता है। अधिकतर पत्राचार पाठ्यक्रम विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जाते हैं और इनमें सभी विषय-विधाओं के 10+2 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

कुछ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में प्रवेश एक चयन परीक्षा के माध्यम से दिया जाता है। पत्राचार शिक्षा ने हमारे देश की शिक्षा प्रणाली में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन ला दिया है। पत्राचार माध्यम से अध्ययन करने वाले छात्रों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न आधुनिक तकनीकों का सहारा भी दिया जा रहा है। उपग्रह संचार, लो पावर ट्रांसमीटर्स की सहायता एवं सूचना सुपर-हाइवेज के माध्यम से देश भर में शिक्षा का प्रसार हो रहा है।

देश में अनेक मुक्त विश्वविद्यालय तथा उससे भी अधिक नियमित विश्वविद्यालय तथा कई अन्य संस्थाएं दूरस्थ अध्ययन कार्यक्रम चलाते हैं। दूरस्थ शिक्षा पद्धति कई श्रेणियों के शिक्षार्थियों, विशेष रूप से देरी से पढ़ाई शुरू करने वालों, जिन व्यक्तियों के घर के पास उच्चतम शिक्षा साधन नहीं है, सेवारत व्यक्तियों और अपनी शैक्षिक योग्यताएं बढ़ाने के इच्छुक व्यक्तियों को लाभ प्रदान कर रही है। मुक्त विश्वविद्यालय ऐसे लचीले पाठ्यक्रम विकल्प देते हैं जिन्हें वे छात्र ले सकते हैं जिनके पास कोई औपचारिक योग्यता नहीं है किन्तु अपेक्षित आयु (प्रथम डिग्री पाठ्यक्रमों के लिए 18 वर्ष) के हो चुके हैं और लिखित प्रवेश परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुके हैं। ये पाठ्यक्रम छात्र अपनी सुविधानुसार भी ले सकते हैं। विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा केंद्र न्यूनतम पात्रता रखने वाले उम्मीदवारों को प्रवेश देते हैं। यह पात्रता नियमित पाठ्यक्रमों के समान ही होती है। पत्राचार शैक्षिक संस्थाएं छात्रों को पाठ्यक्रम सामग्री के साथ-साथ संपर्क कक्षाएं भी उपलब्ध कराती हैं और परीक्षाएं संचालित करती हैं।

अधिकांश विश्वविद्यालय मुद्रित अध्ययन सामग्री के अलावा अपने स्थानीय केंद्रों पर मल्टीमीडिया साधनों से भी छात्रों को शिक्षित करते हैं। ये विश्वविद्यालय ग्रैजुएशन पाठ्यक्रम, मास्टर डिग्री पाठ्यक्रम, एम.फिल पीएच.डी. तथा डिप्लोमा एवं सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम भी चलाते हैं जिनमें से अधिकांश पाठ्यक्रम करियर उन्मुखी होते हैं।

मंदिर ट्रस्ट के खिलाफ शुक्रवार से क्रमिक अनशन

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं.)। तिलस्वां महादेव मंदिर ट्रस्ट हटाओ संघर्ष समिति द्वारा उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन सौंप कर ट्रस्ट के खिलाफ तिलस्वां ग्रामवासियों व संघर्ष समिति द्वारा क्रमिक अनशन किए जाने की सूचना दी गई।ज्ञापन में बताया कि शुक्रवार से तिलस्वां महादेव मंदिर परिसर चौक में संघर्ष समिति द्वारा शांति पूर्वक क्रमिक अनशन किया जायेगा। जिसमें तिलस्वां और ऊपरमाल क्षेत्र के नागरिक हिस्सा लेंगें।ज्ञापन में बताया कि विगत कई दिनों से तिलस्वां महादेव मंदिर ट्रस्ट के कथित भ्रष्टाचार के विरुद्ध तिलस्वां महादेव के आम नागरिक आंदोलन कर रहे हैं।

अज्ञात वाहन की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत

जयपुर टाइम्स

बिजौलियाँ(निसं.)। थाना क्षेत्र के एनएच-27 पर किशननिवास के निकट सुबह अज्ञात वाहन की टक्कर से एक स्कूटी सवार युवक की मौत हो गई।वहीं पीछे बैठे साथी युवक को मामूली चोटें आई।जानकारी के मुताबिक लक्ष्मी खेड़ा निवासी योगेश धाकड़ उर्फ अन्ना (32) स्कूटी से डाबी की ओर जा रहा था।इस दौरान अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी।जिससे योगेश की मौके पर ही मौत हो गई।वहीं साथी अजय को मामूली चोटें आई।योगेश को एम्बुलेंस से उप जिला चिकित्सालय लाया गया।जहां

चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। मृतक योगेश पिता का इकलौता बेटा था और खनन व्यवसाय का कार्य करता था।मृतक के मामा पप्पू लाल धाकड़ ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई हैं।

फोरेवर एजुकेशन ग्रुप ने किया निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण का शुभारम्भ

जयपुर टाईम्स

चाकसू(निसं.) चाकसू उपखंड क्षेत्र के कोटखावदा तहसील की ग्राम पंचायत बड़ोदिया में चाकसू दौसा स्टेट हाइवे 2 सड़क मार्ग पर स्थित फोरेवर एजुकेशन ग्रुप पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित महिलाओं व बालिकाओं के लिए निशुल्क आर एस - सी आई टी प्रशिक्षण बैच का शुभारम्भ बुधवार 5 फ़रवरी 2025 को किया गया। इस बैच के अंतर्गत कुल 40 बालिकाओं को आर एस - सी आई टी का नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत बड़ोदिया उपसरपंच रामफूल सैनी, पूर्व सरपंच रामकिशोर गुर्जर रहे। तथा विशिष्ट अतिथि एम जी टेक्नो सेवी से रामप्रसाद चौधरी, ओम शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान से राजकुमार सारण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के निदेशक सीएम जांगिड़ ने सभी अथितियों का स्वागत राजस्थानी साफा व माला पहना कर किया। अतिथियों के द्वारा चयनित छात्राओं को किताबे बाँटकर तथा बायोमेट्रिक पंजीकरण करवा कर निशुल्क बैच का शुभारम्भ किया गया। इस दौरान राधेश्याम जांगिड़, मजीद खां, प्रहलाद जांगिड़, गिर्राज सैन, श्यामसुंदर शर्मा सहित अन्य सभी ग्रामवासी उपस्थित रहे। फोरेवर एजुकेशन ग्रुप की फेकल्टी कृष्ण कान्त, रिंकू देवी , पिन्टू जांगिड़ ने सभी अथितियों का आभार व्यक्त किया।

पेंशनर उप शाखा, बाली की मासिक बैठक संपन्न, मार्च में ब्लॉक स्तरीय अधिवेशन का निर्णय

जयपुर टाइम्स

बाली, पाली(निसं.)। पेंशनर उप शाखा, बाली की मासिक बैठक सहसचिव मूला राम जी चौधरी के बेरे कोयटा पर संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता वरदा राम जी चौधरी ने की। मीडिया प्रभारी सुरेंद्र सिंह सोनीगरा ने जानकारी दी कि बैठक में पेंशन से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गई। साथ ही, आगामी माह में 09 मार्च 2025 को ब्लॉक स्तरीय अधिवेशन चेतन बालाजी, भाटूंद में आयोजित करने का निर्णय लिया गया, जिस पर सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की। इस अवसर पर संरक्षक सुलेमान टांक, मोती लाल ,गहलोत, जयनारायण वैष्णव, हीरालाल रावलिया, सचिव अशोक कुमार वछेटा, मूल सिंह, कालू राम, मोहब्बत सिंह सहित कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्य उपस्थित रहे। बैठक के समापन पर सहसचिव श्री मूला राम जी चौधरी की ओर से स्नेह भोज का आयोजन किया गया।

फिरोजपुर फीडर के पुनर्निर्माण से गंगनहर में बढ़ेगा जल प्रवाहः जल संसाधन मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि गंगनहर परियोजना के क्षतिग्रस्त नहरों की रीलाइनिंग के तहत अब तक 10 नहरों का कार्य पूरा किया जा चुका है, जबकि 3 अन्य नहरों के लिए जाइका के तहत प्रस्ताव रखा गया है। उन्होंने बताया कि फिरोजपुर फीडर के पुनर्निर्माण के लिए 2024-25 में 200 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है, जिससे गंगनहर में जल प्रवाह क्षमता के अनुरूप सुनिश्चित हो सकेगा। मंत्री ने बताया कि फिरोजपुर फीडर की डीपीआर केंद्रीय जल आयोग में परीक्षणाधीन थी, जिसे 13 फरवरी 2024 को स्वीकृति मिली। इसके बाद पंजाब सरकार के सिंचाई विभाग के साथ समन्वय कर डीपीआर तैयार करवाई गई। उन्होंने कहा कि फिरोजपुर फीडर के क्षतिग्रस्त होने से गंगनहर में जल प्रवाह प्रभावित होता है, जिससे किसानों को पानी की आपूर्ति में अस्थिरता रहती है।

हर किसान को बाराबंदी के अनुसार मिलेगा पानी

विधायक रुपिंद्र सिंह कुन्नर के सवाल पर मंत्री ने स्पष्ट किया कि गंगनहर की सभी वितरिकाओं में पानी डिजाइन व क्षमता के अनुसार छोड़ा जा रहा है। सतरोजा बाराबंदी के तहत हर किसान को निर्धारित समय व वार पर पानी उपलब्ध कराया जा रहा है।

टेल तक पानी पहुंचाने के लिए नहरों की सफाई

उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में रबी और खरीफ की फसलों के लिए टेल तक पानी पहुंचाने के प्रयास किए गए हैं। एच, जी.जी. और समेजा वितरिका की टेल तक पानी नहीं पहुंचने की समस्या को दूर करने के लिए नहरों की सफाई करवाई गई है। मंत्री ने कहा कि समय-समय पर सफाई नहीं होने से टेल पर जल आपूर्ति प्रभावित होती है, लेकिन इसे दूर करने के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के अन्तर्गत आवेदन मांगे

आवेदन की अंतिम तिथि 10 फरवरी

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के अन्तर्गत विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स हेतु प्रवेश परीक्षाओं एवं सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उत्कृष्ट ढंग से करवाने और समान अवसर प्रदान करने के लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा ऑनलाइन पोर्टल पर सूचीबद्ध कोचिंग संस्थानों में नि:शुल्क कोचिंग करने हेतु इच्छुक अभ्यर्थियों से सत्र 2024-25 के लिए ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किये गए हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 10 फरवरी 2025 है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक मीना आर्य ने बताया कि आवेदक एसएसओ पोर्टल पर SJMS SMS APP (CM ANUPRATI COACHING ICON) पर क्लिक कर 10 फरवरी तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के संशोधित नवीनतम विस्तृत दिशा-निर्देश एवं मानक संचालन प्रक्रिया विभागीय वेबसाइट sje.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

बस्सी, कानोता और बांसखोह के कॉलेजों में 90% व्याख्याताओं के पद भरेः उच्च शिक्षा मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेम चंद बैरवा ने बुधवार को विधानसभा में बताया कि बस्सी विधानसभा क्षेत्र के बस्सी, कानोता और बांसखोह में संचालित राजकीय महाविद्यालयों में व्याख्याताओं के 90% पद भरे हुए हैं। उन्होंने कहा कि शेष रिक्त पदों को भरने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग को 1,936 सहायक आचार्यों की भर्ती के लिए अभ्यर्थना भेजी गई है, और प्रक्रिया जारी है।

बस्सी, कानोता और बांसखोह कॉलेजों में शिक्षक भर्ती की स्थिति

मंत्री ने बताया कि बस्सी राजकीय महाविद्यालय में 18 स्वीकृत पदों में से 16 पद भरे हुए हैं। बांसखोह कन्या महाविद्यालय में सभी 7 स्वीकृत पद भरे हुए हैं। वहीं, कानोता राजकीय महाविद्यालय में 7 स्वीकृत पदों में से 6 पद भरे जा चुके हैं।

विद्या संबल योजना से अध्यापन कार्य जारी

उन्होंने कहा कि राजकीय महाविद्यालयों में रिक्त पदों को भरने के लिए 'विद्या संबल योजना' के तहत शिक्षकों की नियुक्ति की जा रही है, ताकि छात्रों की पढ़ाई प्रभावित न हो। डॉ. बैरवा ने बताया कि राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक आचार्य भर्ती प्रक्रिया जल्द पूरी की जाएगी, ताकि प्रदेश के सभी राजकीय महाविद्यालयों में रिक्त पदों को नियमित रूप से भरा जा सके। इससे पहले विधायक लक्ष्मण के सवाल पर मंत्री ने बस्सी, कानोता और बांसखोह महाविद्यालयों में विषयवार शिक्षकों के स्वीकृत, कार्यरत और रिक्त पदों का पूरा विवरण सदन के पटल पर रखा।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा महिला छात्रावास स्वीकृत करने का प्रावधान नहींः मंत्री खराड़ी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने बुधवार को विधानसभा में स्पष्ट किया कि जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा महिला छात्रावास स्वीकृत करने का कोई प्रावधान नहीं है।

डूंगरपुर जिले में 6,020 की क्षमता, 5,817 विद्यार्थी नामांकित

विधायक गणेश घोगरा के सवाल पर मंत्री ने बताया कि डूंगरपुर जिले में संचालित विभिन्न छात्रावासों—बालक-बालिका आश्रम, खेल छात्रावास, कॉलेज छात्रावास, बहुउद्देशीय छात्रावास और आवासीय विद्यालयों की कुल छात्र क्षमता 6,020 है, जिनमें से 5,817 विद्यार्थी वर्तमान में नामांकित हैं। उन्होंने कहा कि यदि छात्रावासों की क्षमता बढ़ाने के लिए औचित्यपूर्ण प्रस्ताव प्राप्त होता है, तो बजट और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर परीक्षण किया जाएगा।

जनजाति बालिका आश्रम छात्रावासों में प्रशिक्षकों के 27 पद स्वीकृत

मंत्री खराड़ी ने बताया कि डूंगरपुर जिले में जनजाति बालिका आश्रम छात्रावासों में 22 कोच, कॉलेज छात्रावास में 1 कोच, और खेल छात्रावास में 4 खेल प्रशिक्षक सहित कुल 27 पद स्वीकृत हैं। हालांकि, बालक आश्रम छात्रावासों में खेल प्रशिक्षक या कोच के पद स्वीकृत नहीं हैं।

महिला छात्रावास को लेकर सरकार का रुख स्पष्ट

उन्होंने कहा कि विभाग की नीतियों के अनुसार फिलहाल महिला छात्रावासों के लिए अलग से स्वीकृति देने का कोई प्रावधान नहीं है। हालांकि, यदि भविष्य में आवश्यक संसाधनों और औचित्य के आधार पर जरूरत महसूस होती है, तो इस पर विचार किया जा सकता है।

निर्धारित मापदंड पूरे होने पर तहसील और उपतहसील का गठन संभवः राजस्व मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्व मंत्री हेमंत मीणा ने बुधवार को विधानसभा में स्पष्ट किया कि गोलूवाला को उपतहसील से तहसील में तथा गंधेली और जाखड़ांवाली को उपतहसील में क्रमोन्नत करने का प्रस्ताव फिलहाल संभव नहीं है, क्योंकि ये स्थान निर्धारित मापदंडों को पूरा नहीं करते।

तहसील और उपतहसील के लिए आवश्यक मापदंड

मंत्री मीणा ने बताया कि नई तहसील बनाने के लिए कम से कम 30 पटवार मंडल और 6-8 पटवार मंडलों पर एक भू-अभिलेख निरीक्षक होना आवश्यक है। इसी तरह, नई उपतहसील के लिए 15 पटवार मंडल और 6-8 पटवार मंडलों पर एक भू-अभिलेख निरीक्षक अनिवार्य है।

गोलूवाला, गंधेली और जाखड़ांवाली क्यों नहीं बने तहसील/उपतहसील

विधायक विनोद कुमार के सवाल के जवाब में मंत्री ने कहा कि गोलूवाला उपतहसील में फिलहाल 3 भू-अभिलेख निरीक्षक वृत्त और 12 पटवार मंडल ही मौजूद हैं, जो तहसील के लिए तय मानकों से कम हैं। वहीं, गंधेली और जाखड़ांवाली को उपतहसील बनाने का कोई प्रस्ताव राजस्व विभाग में विचाराधीन नहीं है।

भविष्य में हो सकता है पुनर्विचार

राजस्व मंत्री ने कहा कि यदि कोई क्षेत्र निर्धारित मानकों को पूरा करता है, तो सरकार तहसील या उपतहसील के गठन पर विचार कर सकती है। सरकार की प्राथमिकता प्रशासनिक इकाइयों को व्यवस्थित रूप से विकसित करना है, ताकि लोगों को राजस्व संबंधी सेवाएं आसानी से मिल सकें।

सीकर में सिलेंडर चोरी करने वाली गैंग पकड़ी

सीकर(निसं) सीकर शहर के अलग-अलग इलाकों में सिलेंडर चोरी होने के मामलों में उद्योग नगर थाना पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने सिलेंडर चोरी करने वाली गैंग के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 8 सिलेंडर और बाइक भी बरामद की है। पुलिस इन दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। उद्योग नगर सा॥ह इंस्पेक्टर मनोज कुमार भाटीवाड़ के अनुसार 2 फरवरी को इलियास अली ने पुलिस थाने पर रिपोर्ट दर्ज करवाई कि उनका पिपराली रोड पर प्रतिष्ठान है। जहां सीढ़ियों पर रखे एक सिलेंडर को 1 फरवरी की दोपहर को मोटरसाइकिल पर आए दो चोर चुराकर ले गए। पुलिस ने इस रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज करके इन्वेस्टिगेशन शुरू किया। थानाधिकारी मनोज कुमार के निर्देशन में आरोपियों को पकड़ने के लिए टीम का गठन किया। टीम ने शहर के अलग-अलग इलाकों में लगे करीब 100 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों की फुटेज के आधार पर 4 फरवरी को दो आरोपियों को राधाकिशनपुरा इलाके से पकड़ा। वहां दोनों आरोपी वापस किसी चोरी की वारदात को अंजाम देने की फिराक में थे।

बेकाबू ट्रेलर ने भाई-बहन को कुचला

दौसा(निसं.) दौसा में जयपुर-आगरा नेशनल हाईवे-21 पर सड़क क्रॉस करने के लिए खड़े बाइक सवार शख्स व उसके बेटा-बेटी को ट्रेलर ने टक्कर मार दी। घटना बालाहेड़ी थाना क्षेत्र में पाटोली गांव के पास बुधवार सुबह करीब साढ़े 11 बजे हुई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों को लहूलुहान हालत में महवा जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद भाई-बहन को मृत घोषित कर दिया। जबकि घायल पिता का इलाज चल रहा है। रसीदपुर सरपंच मोतीलाल ने बताया कि महेश बैरवा अपने परिवार के साथ मंगलवार को साले की बेटी की शादी में मेहंदीपुर बालाजी गया था। जहां से बुधवार सुबह अपने गांव लौटते वक्त नेशनल हाईवे किनारे क्रॉसिंग पर खड़ा था। इस दौरान बेकाबू ट्रेलर ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार भाई-बहन व उनका पिता घायल हो गया। जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने बताया कि ट्रेलर की टक्कर से हुए हादसे में पूजा बैरवा (18) और उसका भाई रोशन बैरवा (16) पुत्र महेश रसीदपुर गांव थाना मंडावर की मौत हो गई। जबकि महेश बैरवा भी घायल हो गया। जिसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। हादसे की सूचना मिलते ही अस्पताल पहुंचे परिजनों की चीख पुकार से माहौल पूरी तरह गमगीन हो गया। पोस्टमॉर्टम की कार्रवाई के बाद शव सुपुर्द किए जाएंगे। पुलिस हादसे के कारणों की जांच में जुट गई है। सरपंच मोतीलाल ने ने बताया कि मृतक पूजा और उसका भाई रोशन 10वीं क्लास में पढ़ते थे। मृतक रोशन परिवार में सबसे छोटा और पांच बहनों के बीच इकलौता भाई था।

लोको पायलट की ट्रेन से कटकर मौत

कोटा कोटा में लोको पायलट की ट्रेन से कटने से मौत हो गई। उनके शरीर के दो टुकड़े हो गए। शव के पास मिले पर्स में आईडी से उनकी पहचान हुई। जीआरपी पुलिस ने शव को एमबीएस हॉस्पिटल की मॉर्च्युरी में रखवाया है। कोटा जीआरपी थाना के हेड कॉन्स्टेबल डालचंद ने बताया- मनीष शर्मा (50) रेलवे में लोको पायलट के पद पर तैनात थे। कोटा के कुन्हाड़ी इलाके में रहते थे। उनका परिवार अजमेर का है। कोटा में उनकी पत्नी ही रहती है। परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंपा।

भगवान कृष्ण के जन्म पर बधाइयां बांटी

कथा में श्री कृष्ण जन्म, राम जन्म व वावन अवतार की सजीव नृत्य रासलीला व कथा सुनाई

जयपुर टाइम्स

चौमूं(निसं.)। शहर के सब्जी मंडी के पास अग्रवाल धर्मशाला स्थित सत्यनारायण मंदिर परिसर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह के चौथे दिन बुधवार को कथावाचक पंडित रामबाबू शास्त्री ने कथा में श्री कृष्ण जन्म, राम जन्म व वावन अवतार की सजीव नृत्य रासलीला व कथा सुनाई। भगवान कृष्ण के जन्म पर कथा आयोजक सत्यनारायण व यज्ञदत सर्राफ ने श्रद्धालुओं के साथ भजनों पर नृत्य कर लोगों को खिलौने, टोफिया, बिस्कुट आदि बधाइयां बाटी। साथ ही यज्ञदत सर्राफ ने व्यापार मंडल के अध्यक्ष पवन सैनी व अन्य सदस्यों का पगड़ी व दुपट्टा पहना कर स्वागत किया। कथा आयोजक सत्यनारायण व अंबिका प्रसाद सर्राफ ने श्रीमद् भागवत पोथी की महा आरती की। अंत में श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया गया। गुरुवार की कथा में नन्दोत्सव, श्रीकृष्ण बाललीला, गोवर्धन पूजा, छप्पन भोग झांकी सजाई जाएगी।

जयपुर रत्न अवार्ड समारोह के पोस्टर का विमोचन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(निसं.) जीवन सुरक्षा एवं पर्यावरण रक्षा संस्था के तत्वावधान में 9 फरवरी 2025 को पिंक सिटी प्रेस क्लब जयपुर में आयोजित होने वाले जयपुर रत्न अवार्ड समारोह - 2025 के पोस्टर का विमोचन सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा एवं कर्मचारी चयन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष हरिप्रसाद शर्मा के द्वारा किया गया, इस अवसर पर , संस्था अध्यक्ष पुरुषोत्तम शर्मा, प्रमोद शर्मा घनश्याम शर्मा जेपी शर्मा ओम प्रकाश शर्मा संयोजक मोहनलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे, संस्था अध्यक्ष पुरुषोत्तम शर्मा एवं संयोजक मोहनलाल शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर मानवसेवा ,गौ सेवा, जल संरक्षण, प्रकृति संवर्धन, कृषि नवाचार, शिक्षा ,चिकित्सा ,खेलकूद सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले नागरिकों का अभिनंदन किया जाएगा।

कार्यालय नगरपरिषद सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

क्रमांक- न.प.सु./भूमि शाखा/2025 / 6555 — दिनांक- 05/02/2025

आपत्ति आमंत्रण सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नीचे अंकित निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा 69ए के अन्तर्गत पट्टा नियमन हेतु आवेदन किया हुआ है। उक्त के संबध में किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो आपत्ति प्रकाशन के 07 दिवस में मय दस्तावेज इस कार्यालय में प्रस्तुत करे। बाद मियाद गुजरने पश्चात किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा, और इकतरफा कार्यवाही की जावेगी।

क.सं.	आवेदक का नाम व पता	कस्बा	पता	क्षेत्रफल वर्गमीटर	आवासीय/ व्यावसायिक
01	श्री नवीन कुमार पुत्र श्री पवन कुमार अग्रवाल	सुजानगढ़	जाजोदिया मार्ग, वार्ड नं.33 सुजानगढ़	242.72	आवासीय

आयुक्त
नगर परिषद् सुजानगढ़

नाम परिवर्तन

गोविंद पुत्र. मदन लाल भामू पता- वार्ड नंबर 03 दूंकर, पो. दूंकर तेह.बिदासर, जिला- चूरू ने भविष्य के सभी उद्देश्यों के लिए मेरा नाम गोविंद से बदलकर गोविंद चौधरी कर दिया है तथा मुझे भविष्य में गोविंद चौधरी के नाम से जाना व पहचाना जाए

OFFICE OF THE PRINCIPAL S. M.S.MEDICAL COLLEGE & CONTROLLER OF THE ATTACHED HOSPITALS, JAIPUR

No-F/MC/Store /2024-25/ 6724-27 — Dated- 23/1/2025

Notice Inviting Bid

Bid for Single-Plane Cath Lab On Turnkey Basis for Cardiology Department, Institute Of Cardiology SMS Medical College, Jaipur, are invited from interested bidders as per schedule in NIT Notice. Other particulars of the bid may be visited on the Procurement portal (http:// eproc. rajasthan. gov.in, https://sppp. rajasthan.gov.in) of the state; and SMS Medical College, Jaipur department website.
UBN- SMS 2425 GLOB00437

DIPR/C/1096/2025 — **PRINCIPAL & CONTROLLER**

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड-सुजानगढ़

E-Mail :- eesuj.chu.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक-अअ/जनस्वा/निविदा/2024-25 2426 - 2432 — दिनांक- 23/01/2025

निविदा सूचना संख्या 47 / 2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पी.डब्ल्यू. एफ. एण्ड ए.आर पार्ट- अपेंडिक्स दिनांक 01.07.1999 से लागू एवं समय - समय पर वित्त विभाग द्वारा जारी संशोधित परिपत्रों (आज तक) के अनुरूप विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के विभागों में राक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों एवं संबंधित कार्यों में अनुभव रखने वाली फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्युरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

निविदा फर्म ऑनलाईन वेबसाईट http://oproc.rajasthan.gov.in से कॉलम संख्या 06 में अंकित तिथि तक सांय 6.00 बजे तक डाउनलोड / अपलोड किये जा सकते है। चैब साईट पर तकनिकी बिड कॉलम संख्या 08 में अंकित तिथि को इस कार्यालय में प्रातः 11.30 बजे खोली जायेगी। यदि किसी कारणवंश उस दिन अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर तकनिकी बिड खोली जायेगी।

निविदा शुल्क / धरोहर राशि निविदादाताओं द्वारा डिमाण्ड ड्राफ्ट / बैंकर चैक द्वारा जो कि अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड-सुजानगढ़ के नाम देय हो एवं ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया शुल्क रू0 50.00 लाख तक 500 /- रूपये तथा 50.00 लाख से अधिक 1000/- रूपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट / बैंक MD, RISL Payable At Jaipur के नाम से एवं अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा अभि विभाग, खण्ड सुजानगढ़ (डीडीओ कोड 13128) की निविदा शुल्क राशि रू. 500/- देय होगी। इस कार्यालय में कॉलम संख्या 07 में अंकित तिथि एवं समय प्रातः 11.00 बजे तक जमा करवाना आवश्यक है। निर्धारित समय उपरान्त डी.डी. जमा नहीं ली जावेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल (MSC) हस्ताक्षर के माध्यम से वैब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB No.	UBN No.
47/2024-25	PHE 2425WSRC08916

(कैलाशचन्द माली)
अधिशाषी अभियन्ता,
जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड-सुजानगढ़

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
06 फरवरी, 2025

जनसुरक्षा व जागरूकता अभियान

विद्यार्थियों ने जीवन सुरक्षा के लिए ली सावधानी बरतने की शपथ

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। वंश फाउन्डेशन और मुनिराज सेवा संस्थान के तत्वाधान में चलाए जा रहे जनसुरक्षा व जागरूकता अभियान के तहत सोमवार को शहर में कार्यक्रम आयोजित हुआ। एक नंबर रोड़ पर प्रभात टॉकीज के पास स्थित आजाद हिन्द पब्लिक माध्यमिक स्कूल में बच्चों को जीवन सुरक्षा के लिए सावधानी बरतने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामगोपाल महमिया ने जीवन की सुरक्षा को महत्वपूर्ण बताते हुए पूरी सावधानी से अपने काम करने व जिम्मेदार नागरिक के रूप में हादसों में घायलों की यथासंभव मदद कर उनका जीवन बचाने की बात कही। वंश फाउन्डेशन के रमाकांत पारीक ने बच्चों को रोजमर्रा के कार्य करते समय जरूरी सतर्कता बरतने के साथ सुरक्षित जीवन शैली के मूल मंत्र को पूरी गंभीरता से अपनाने पर बल दिया। बच्चों को शपथ भी दिलवाई गई। इस दौरान संस्था निदेशक सुभाष डिगरवाल, संस्थान प्राचार्य सुशीला डिगरवाल, पूजा शर्मा, सरिता कुमावत, कविता शर्मा, नजमा बानो, आदिल चौहान, मधु डिगरवाल, जियाउल हक, मीनाक्षी सहित शिक्षक व विद्यार्थी मौजूद रहे।

टांई प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर दवाइयों का टोटा

दो माह से नहीं है दवाईयां, मरीज परेशान

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। ग्राम टांई के राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर पिछले ढेड साल से चिकित्सा अधिकारी का पद रिक्त पड़ा हुआ है। वहीं अब टांई हॉस्पिटल मे चिकित्सा अधिकारी नहीं होने की वजह से व मौजूदा चिकित्सा स्टॉफ की आपस में कहासुनी व मनमुटाव होने की वजह से कोई भी चिकित्साकर्मी झुंझुनू से दवाई लाने को तैयार नहीं है। टांई हॉस्पिटल के चिकित्साकर्मी मुख्यालय से दवाई लाने की जिम्मेदारी एक दूसरे पर डाल रहे है जिसकी वजह से टांई के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर पिछले दो माह के लगभग से मरीजों को खांसी, शुगर व एंटीबायटिक दवाईया उपलब्ध नहीं हो पा रही है व मरीजों को 30 से 40 किलोमीटर दूर झुंझुनू या चूरू जाना पड़ रहा है। टांई के आरटीआई कार्यकर्त्ता अमानत अली ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत भेजकर टांई हॉस्पिटल मे अविलम्ब दवाई उपलब्ध करवाने की मांग की है। इस बारे मे बीसीएमओ मंडावा डॉक्टर संजीव कुमार कुलहरी का कहना है कि फार्मासिस्ट तो कहता है कि मै तो नहीं लाऊंगा व स्टॉफ कहता है कि हमारा काम नहीं है, मैंने सीएमएचओ साहब को अवगत करवा दिया है।

नालोट को ग्राम पंचायत बनाने की मांग

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। ग्राम नालोट में सभी प्रबुद्ध जन एकत्रित होकर ग्राम पंचायत जोरावर नगर से ग्राम नालोट को पंचायत बनाने की प्रशासन व जनप्रतिनिधियों से मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि हाल ही राजस्थान सरकार पंचायत राज में हो रहे परिसिमन को लेकर श्रीमाधोपुर पंचायत समिति की ग्राम पंचायत जोरावारनगर के राजस्व ग्राम नालोट को ग्राम पंचायत बनवाने की एक स्वर में मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम नालोट ग्राम पंचायत बनने की सभी शर्ते पूर्ण करता है तथा यातायात व स्वास्थ्य समन्धित सेवाओं से पिछड़ा हुआ ग्राम है। लोगों ने बताया कि ग्राम पंचायत बनने से ग्राम में कई सुविधाओ का लाभ मिलेगा तथा ग्राम के वरिष्ठ जन कैप्टन हरसाय भड़ाणा, कैलाश मीणा, राधेश्याम मीणा, मूलचंद सैन, शंकर नरूका, किशोर नरूका, महेश, जगदीश वर्मा, बंशीधर वर्मा, श्रवण वर्मा, दौलत धानका, मूलचंद धानका, भाजयुमो मंडल अध्यक्ष कनिष्क गुर्जर, भगीरथ गुर्जर, पूर्ण गुर्जर, सुभाष गुर्जर, सुगा राम योगी, राकेश डोई पंच, राजेंद्र शर्मा, ओमजी पंच, हजारी लाल पंच, धर्मेंद्र रावत व सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण उपस्थित हुए व् ग्राम वासियो ने तय किया की एक प्रतिनिधि मंडल एसडीएम श्रीमाधोपुर व् विधायक श्रीमाधोपुर यूडीएच मंत्री राजस्थान सरकार झाबर सिंह खर्रा से मिलकर अपनी मांग रखेंगे। यह जानकारी धर्मवीर सिंह गुर्जर प्रदेश भाजपा राजस्थान किसान मोर्चा जयपुर सम्भाग मीडिया प्रभारी ने दी।

रोडवेज बस में बिना टिकट मिले तो 10 गुना पेनल्टी

अब सवारी से भी वसूली जा रही पेनल्टी,पहले केवल परिचालक पर ही होती थी कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। रोडवेज बसों में बिना टिकट मिलने पर 10 गुणा पेनल्टी वसूल की जा रही है। साथ ही परिचालकों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। केवल परिचालक के खिलाफ ही गाज नहीं गिर रही है, बल्कि जो यात्री बिना टिकट मिल रहे हैं, उनसे भी वसूली की जा रही है। इस की शुरुआत की जा चुकी है और झुंझुनूं रोडवेज प्रबंधन की ओर से पिछले दो माह में 50 से अधिक सवारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। झुंझुनूं रोडवेज प्रबंधन की ओर से दिसंबर 2024 में 1 हजार 650 रुपए की पेनल्टी बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों से वसूली गई थी। जनवरी माह में अभियान में तेजी लाई गई है। जनवरी माह में 33 हजार 810 रुपए की पेनल्टी वसूली जा चुकी है। अब तक 33 हजार 330 रुपए की वसूली की जा चुकी है। रोडवेज प्रबंधक गणेश कुमार शर्मा का कहना है कि अक्सर यह देखा गया है कि बसों में कई बस परिचालक यात्रियों को बिना टिकट यात्रा करवाते थे। इस स्थिति में परिचालक के खिलाफ कार्रवाई होती थी, लेकिन इस तरह के हालातों में हिस्सेदारी निभाने वाले यात्री पर किसी तरह की कार्रवाई नहीं होती थी, अब कार्रवाई के तरीके में बदलाव के साथ बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों से भी पेनल्टी वसूली जा रही है।

टिकट राशि का 10 गुना वसूली

रोडवेज बस में दो या इससे अधिक यात्री बिना टिकट यात्रा करते पाए जाने पर परिचालक को निलंबित करने के साथ यात्री से टिकट की 10 गुना राशि वसूली का प्रावधान किया गया है। बस में अधिकतम दो यात्री बिना टिकट है तो संबंधित यात्री से 10 गुना राशि वसूलने का प्रावधान है।

अलर्ट हुआ निगम

निर्देशों की पालना में अब निगम की फ्लाइंग टीम अलर्ट मोड पर है। टीम की ओर से बसों के रूट पर सघन जांचअभियान चलाया जा रहा है। यात्रियों को टिकट लेने के प्रति सजग भी किया जा रहा है।

राजस्व में होगा इजाफा

मुख्य प्रबंधक रोडवेज ओम गणेश कुमार शर्मा का कहना है कि प्रबंध निदेशक जयपुर की ओर से बिना टिकट यात्रा करने पर दोहरी कार्रवाई के लिए मुख्यालय स्तर से पहली बार विशेष निर्देश जारी किए गए हैं। निश्चित तौर पर इससे यात्री टिकट राशि देने के साथ टिकट पर यात्रा करने के प्रति सजग होंगे। इससे राजस्व में भी इजाफा होगा।

ऑनलाइन गिरदावरी ने बढ़ाई परेशानी

पटवारियों को खेतों के अंदर घुसकर करनी पड़ रही गिरदावरी, ताराबंदी भी बन रही बाधा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। पटवारियों को ऑनलाइन गिरदावरी को लेकर परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोकेशन का एरिया घटाने से गिरदावरी नहीं हो पा रही है। खेत में घुसकर ही गिरदावरी करनी पड़ रही है। लेकिन खेतों के ताराबंदी होने से पटवारियों के सामने परेशानी खड़ी हो गई है। पटवारियों का कहना है कि अधिकांश खेतों के तारबंदी हो चुकी हैं। अनेक किसानों ने खेत का गेट बनाकर ताला भी लगा दिया, ऐसे में खेत में घुसकर गिरदावरी करना मुश्किल हो रहा है। पहले खेत से दूर की लोकेशन से भी गिरदावरी हो जाती थी, अब ऐप का लोकेशन क्षेत्र घटाकर करीब बीस मीटर कर दिया गया है। अब ऐसा कर दिया कि खेत में घुसने पर ही गिरदावरी हो सकती है। पहले बाहर से भी फोटो खींच लेते थे। नई व्यवस्था के कारण अब ऐप गिरदावरी नहीं हो पा रही है। ऐप भी सही से काम नहीं करता है। लोकेशन पर जाकर गिरदावरी करने में महिला पटवारियों को सुरक्षा की दिक्कतें आ रही हैं। ऐप खुलने में समय लगता है। ऐप में कुआं, रास्ता या गैर-मुमकिन खसरों की जानकारी अपडेट नहीं है। इस कारण गिरदावरी ऐप से यह कार्य नहीं हो पा रहा है। झुंझुनूं पटवार संघ के जिलाध्यक्ष होशियार सिंह ने बताया कि गिरदावरी को लेकर कई तरह की परेशानियां को सामना करना पड़ रहा है। लोकेशन एरिया भी घटा दिया। खेतों के अंदर घुसना पड़ रहा है। विभाग के उच्चाधिकारियों को ऐप में हो रही तकनीकी खामी से अवगत करवा दिया गया है, लेकिन अभी तक इस समस्या का समाधान नहीं किया गया है।

खाद्य सुरक्षा योजना से 28 तक हटवा सकेंगे नाम

स्वेच्छा से नहीं हटवाने पर होगी कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। खाद्य सुरक्षा योजना से स्वेच्छा से नाम हटाने के लिए चलाए जा रहे गिव अप अभियान की डेट बढ़ा दी गई है। अब अपात्र परिवार 28 फरवरी तक नाम हटवा सकते हैं। पहले 31 जनवरी अंतिम तारीख थी। अभियान के तहत झुंझुनूं जिले में लगभग पांच हजार से ज्यादा लोगों ने अपने नाम पात्रता सूची से हटवाए हैं। इनके स्थान पर अब उन लोगों के नाम राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में जोड़े जाएंगे, जो पात्र होते हुए भी मुफ्त राशन की सुविधा से वंचित थे। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में पात्रता के मापदण्ड तय हैं। इसके बावजूद कई ऐसे लोगों ने अपने नाम पात्रता सूची में जुड़वा लिए जो मुफ्त राशन की सुविधा लेने के पात्र नहीं हैं। राज्य सरकार ने ऐसे ही लोगों के लिए गिव अप अभियान शुरू किया है। जिला रसद अधिकारी डॉ. निकिता राठौड़ ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना का गेहूं वंचितों और पात्र लोगों को मिले, इसके लिए राज्य सरकार की ओर से शुरू किए गए गिव अप अभियान की अंतिम तिथि 28 फरवरी तक बढ़ा दी गई है। अपात्र लाभार्थी जो लाभ ले रहे हैं वे 28 फरवरी तक अपना नाम हटवा सकते हैं। इस तारीख के बाद राज्य सरकार अपने स्तर पर नाम हटाएगी और ऐसे लोगों के खिलाफ अपने स्तर पर नाम नहीं हटाने को लेकर कार्रवाई भी की जाएगी।

बठोठ के परिसीमन को लेकर ग्रामीणों ने किया विरोध प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। उपखंड की ग्राम पंचायत बठोठ के परिसीमन को लेकर स्थानीय ग्रामीणों ने एकजुट होकर उपखंड कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया। बुधवार को सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण उपखंड कार्यालय लक्ष्मणगढ़ पंहुचे और अपना विरोध दर्ज कराते हुए ज्ञापन सौंपा। इस दौरान पूर्व पंचायत समिति सदस्य नरेन्द्र बाटड़ का कहना है कि राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज ढाका की ढाणी तन बठोठ गांव का विभाजन पूरी तरह राजनीतिक कारणों से किया जा रहा है। पंचायत को एक इकाई के रुप में बरकरार रखा जाए और समस्त ग्राम वार्ड एक साथ ही रहना चाहते हैं और गांव की मूलभूत सुविधाओं के साथ किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ स्वीकार नहीं की जाएगी। पूर्व सरपंच ओंकारमल कलवानियां और सोसायटी अध्यक्ष राधेश्याम पारीक ने कहा कि बठोठ पंचायत की पंचायत समिति लक्ष्मणगढ़ जिसकी गांव से दुरी 16 किलोमीटर है, जिसे परिसीमन में नेछवा पंचायत समिति जिसकी दूरी ओफ रुट 25 किलोमीटर से जोड़ने तथा पंचायत के टुकड़े करने की साजिश का समस्त गांव बठोठ मुखर होकर एक सूर में विरोध दर्ज किया है और बठोठ पंचायत के साथ जरा सी भी छेड़छाड़ की तो गांव में भाजपा सरकार के एक भी प्रशासन को घुसने नहीं देंगे, इसके लिए आर पार की लड़ाई लड़ने की रणनीति बनाई गई है। इस दौरान पंचायत समिति सदस्य राकेश वर्मा,रामावतार पारीक, महेश सोनी, नेमीचंद निठारवाल, रफीक मास्टर भागचन्द बिसु,पंच प्रहलाद निठारवाल, रामेश्वरलाल खेजड़ोलिया, रूघाराम खीचड़, भागीरथ धानियां, हरिराम ढाका, त्रिलोक ख्यालिया, गणपत खीचड़,महेश खीचड़, सिताराम ढाका, तुलक्षाराम बलाई, हंसराज ढाका, गिरधारी पलम्बर, सोहनलाल खीचड़,ओमप्रकाश ढाका, रमेश सेपट, सोहनलाल कलवानियां, नानकराम ढाका, केदार बिसु, भंवरलाल बिजारणियां, भींवाराम खीचड़,दिनदयाल ढाका, बलवीर कलवानियां, फारुख सांखला, एजदेवाराम कलवानियां, मनोज सामोता सहित सैकड़ों लोग उपस्थिति रहे।

गरीब जनता को जीएसटी से मुक्त नहीं कर किया अन्याय: न्यौल

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अखिल राजस्थान में किसान मजदूर कर्मचारी संयुक्त महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष व कांग्रेस जिलाउपाध्यक्ष किसान नेता आदूराम न्यौल ने बताया कि केंद्र की भाजपा सरकार ने आयकर सीमा 12 लाख रुपए तक बढ़ा दी परंतु जीएसटी को गरीब और मध्यम वर्ग से नहीं हटाकर घोर न्याय कर रही है। किसान नेता न्यौल ने कहा कि आजादी के बाद पहली सरकार है जिसेने आटा, नमक तथा दही पर जीएसटी लगा रखी है। गरीब जनता तो आस लगाए बैठी थी कि इस बजट में गरीब जनता पर से रोटी, नमक से जीएसटी हटेगी परंतु गरीबों को निराशा की हाथ लगी। न्यौल ने आरोप लगाया कि 72% प्रतिशत देश की जनता कृषि कार्य कर अनाज, फल, सब्जी का उत्पादन कर देश का भरण पोषण कर रही है। तदोपरांत भी कृषि के आधुनिक संयंत्रों पर जीएसटी लगा रखी है किसान बेहाल है। वह अपनी उपज मजबूरी में औने पौने दामों पर बेचने को विवश है। जीएसटी गारंटी कानून नहीं बनाया, न्यौल ने प्रधानमंत्री को आज ज्ञापन भेजकर मांग की है कि वह गरीब मजदूर मध्यम वर्ग अन्नदाताओं के नए कृषि संयंत्रों पर से जीएसटी अविलंब हटाए अन्यथा देश प्रदेश का कृषि आधारित गरीब और मध्यम तबका विवश होकर आंदोलन करने पर मजबूर होगा। न्यौल ने कठोर चेतावनी देते हुए कहा कि लोकतांत्रिक प्रणाली में गरीब जनता को रोटी नमक पर जीएसटी देनी पड़ रही है। ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालों में भंवर सिंह झरिया, रामेश्वर नायक,किशनाराम बबाल, हरिराम पूनिया, श्रवण बसेर, दुलाराम मेघवाल, खेमचंद माली, मुकनाराम जाट, राजूराम श्योल्डा, शेराराम रोलन, दीपक न्यौल, देवेंद्र सिहाग आदि रहे।

भगवान का नाम नास्तिक को भी बना देता है भक्त

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर के हनुमान पार्क के पास चल रही भागवत कथा में बुधवार को कथा वाचक ने भक्त ध्रुव, अजामिल, प्रहलाद, गजेंद्र मोक्ष एवं राजा बली के प्रसंग पर विस्तार से प्रकाश डाला। व्यासपीठ पर विराजमान कृष्णानंद महाराज ने कहा कि भगवान के नाम स्मरण करने से जीवन में निखार आता है तथा इससे हमारे सभी संकट दूर हो जाते हैं। रोगी के रोग मिट सकते हैं, पापियों के पास मिट जाते हैं और मुर्दे में प्राणों का संचार कर सकता है। नारदजी पिछले जन्म में विद्याहीन, बलहीन व दासी पुत्र थे, लेकिन साधु संतों के संग व भगवान नाम के जप के प्रभाव से वे आगे चलेकर देवर्षि नारद बन गए। श्रद्धापूर्वक भगवान का नाम गुणगान करें, तो जीव ब्रह्ममय हो जाता है। कलियुग में केवल भगवान के नाम का जप ही भव सागर पार कराने वाला है। कथा के प्रारंभ में सुशील कुमार संदीप कंदोई ने व्यासपीठ की पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर संदीप महणसरिया, दलिप कंदोई, पवन कंदोई, पूनम पौद्दार, सत्यनारायण माटोलिया, महावीर सेवदा, बालकिशन पंसारी, बजरंग चोटिया, राजकुमार मुरारका, भगवत सराफ, मातेश्वरी अजीतसरिया, भंवरलाल शर्मा, लक्ष्मणप्रसाद कंदोई, गिरधारी बाजोरिया, प्रदीप धई सहित काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सरस्वती विद्यालय में मनाया वार्षिकोत्सव

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम आबसर के सरस्वती बाल विधा मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय आबडसर का वार्षिकोत्सव मनाया गया। सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। धनराज शर्मा उपसरपंच भरपालसर अध्यक्षता में शुरू हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उमेश जाखड सीबीइओ, हिम्मत सिंह मालासी, सवाई सिंह जेगणिया, अर्जुनसिंह फ्रासा, गजेन्द्र सिंह, रामसिंह आबसर, मनफुल टाण्डी, एडवोकेट गोविन्द सिंह कठोड विशिष्ठ अतिथि सांवरमल ढाका, हंसराज ढेनवाल के आतिथ्य में शुरू हुए कार्यक्रम में बालिकाओं ने शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। 40 विधार्थियों को उत्कर्ष परिणाम के लिए सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले 56 विद्यार्थियों को अतिथियों की ओर से सम्मान किया गया। वीर व्रिक्रम सिंह ने पधारे सभी अतिथियों का स्वागत किया गया।

गुर्जर समाज ने जिला कलक्टर को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। जिला कलेक्टर रामावतार मीना को देवसेना के पदाधिकारी व गुर्जर समाज के लोगों ने मुख्य मांगों को लेकर के ज्ञापन सौंपा। देवसेना के प्रदेश सचिव धर्मपाल गुर्जर ने कहा कि गुर्जर समाज के लोक देवता देवनारायण भगवान की जयंती पर निजी स्कूल संचालकों ने राज्य सरकार की ओर से घोषित अवकाश के दिन भी स्कूल में अवकाश घोषित नहीं किया जिसमें गुर्जर समाज के लोगों को ठेस पहुंची है। संपूर्ण गुर्जर समाज आक्रोश में है झुंझुनू जिला शिक्षा प्रशासनिक अधिकारी को भी ज्ञापन सौंपा। गुर्जर समाज के युवाओं ने कहा कि निजी संचालकों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही हो गुर्जर समाज से निजी स्कूल संचालक जिन्होंने नियमों की अवहेलना की है वह माफी मांगे। मौके पर जाकर सभी स्कूल बंद करवाई गई। अगर जल्दी निजी स्कूल संचालन पर कार्यवाही नहीं हुई तो पूरा गुर्जर समाज बड़ा आंदोलन करेगा। इस मौके पर देवसेना के प्रदेश सचिव धर्मपाल गुर्जर केसरीपुरा, अखिल भारतीय गुर्जर देवसेना के जिलाध्यक्ष राजवीर कसाना, राष्ट्रीय गौ रक्षक प्रदेश अध्यक्ष सुल्तान सिंह गुर्जर, अखिल भारतीय देवसेना के नीमकाथाना जिला अध्यक्ष राजेश खटाना किशोरपुरा, विजेंद्र भड़ाना, राहुल भड़ाना, राकेश कसाना सहित लोगों ने ज्ञापन सौंपा।

कैरियर काउंसलिंग में परिक्षाओं की तैयारियों पर चर्चा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के आईएएसई डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी गांधी विद्या मंदिर के शिक्षा संकाय में कैरियर काउंसलिंग वार्ता का आयोजन किया गया। विशेषज्ञ नरेन्द्र सिंह शेखावत ने प्रशिक्षणार्थियों को कैरियर से संबंधित वार्ता की। उन्होने प्रतियोगी परीक्षाओं के विविध प्रकार स्पष्ट करते हुए उनकी तैयारी से लेकर परीक्षा तक की व्यूह रचना को बताया। कौनसी परीक्षाएं सरकार आयोजित करती है उनकी क्या योग्यताएं है। तैयारी करने के लिए कौनसी किताबे पढ़नी चाहिए व किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए। कितने घंटे की पढ़ाई पर्याप्त है। परीक्षा में जाने से पूर्व कौनसी तैयारियां आवश्यक है। परीक्षा के दौरान प्रश्नों के उतर किस प्रकार चयन करें आदि के बारे में बताया। कार्यक्रम में डॉ पूराराम मेघवाल अधिष्ठाता शिक्षा संकाय, डॉ कैलाश पारीक अधिष्ठाता, कला व सामाजिक विज्ञान संकाय उपस्थित रहे। संकाय के प्राध्यापक व प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। संचालन डॉ अल्पना शर्मा निर्देशन व परामर्श विभाग ने किया।

नैत्र रोग चिकित्सा शिविर में 150 लोगों की जांच

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय श्री दिगम्बर जैन समाज सुजानगढ़ के पूर्व अध्यक्ष मां सुपार्श्वमती गौशाला ग्राम सडू बडी के संस्थापक सेठ मोहन लाल बगड़ा की 8 वीं पुण्य तिथि पर ग्राम सडू बड़ी में मैना देवी, गजराज, संतोष कुमार, जयप्रकाश, संजय कुमार बगड़ा की ओर से निःशुल्क नेत्र जांच परामर्श व शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर संयोजक पूर्व जिला परिषद सदस्य जय प्रकाश बगड़ा ने बताया कि शिविर में नैत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अपूर्व कोटिया एवं पूसाराम भाकर ने अपनी सेवाएं प्रदान की। शिविर में 150 रोगियों ने लाभ प्राप्त किया, जिसमें से 35 रोगियों को शल्य चिकित्सा के लिए चयनित किया गया, जिनका निःशुल्क ऑपरेशन हॉस्पिटल में किया जाएगा। शिविर के प्रारम्भ में ग्रामवासियों ने सेठ मोहन लाल बगड़ा को श्रद्धांजलि देकर उनकी ओर से ग्राम सडू के विकास में किए गए कार्यों को याद किया गया। शिविर में पूर्व सरपंच कान सिंह, रूप सिंह, हनुमान महिया, बाबूलाल नाई, किशोर सिंह, जैन समाज सुजानगढ़ के पूर्व कोषाध्यक्ष अशोक कुमार जैन, जगदीश ढाका, प्रेम सिंह, नूतन जैन, संगीता जैन, चांदनी जैन, नितिन जैन, आपणो सुजला संस्थान के अध्यक्ष तपन जैन सहित अनेक ग्रामवासियों ने सहयोग प्रदान किया।

नौरंगसर में लगा किसान रजिस्ट्री शिविर

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव नौरंगसर में किसान रजिस्ट्री शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें शिविर प्रभारी भू अभिलेख निरीक्षक दिलीपसिंह ने बताया कि शिविर का निरीक्षण उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने किया। शिविर में ग्रामीणों को रजिस्ट्री नियमावली के कैलंडर वितरत किए गए। नायब तहसीलदार अमरसिंह ने रजिस्ट्री के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। ग्रामीण विकास व पंचायती राज योजनाओं के बारे में भी ग्रामीणों को जानकारी दी गई। रामानंद फलवाड़िया ने मंगला पशु बीमा योजना के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर ग्राम विकास अधिकारी जितेंद्रसिंह, सीताराम ढ़ाका, जितेंद्र मीणा, पूजा मीणा आदि मौजूद रहे।

देवनारायण भगवान का मनाया जन्मोत्सव

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निसं.)। शहर के वार्ड संख्या 43 में नवनिर्मित भगवान देवनारायण मंदिर में श्रीदेवनारायण का जन्मोत्सव मंगलवार को मनाया गया। इस अवसर पर मोहल्ले के लोगों ने भगवान के दर्शन कर मन्नौतियां मांगी। मंदिर कमेटी के संयोजक तेजपालसिंह गुर्जर ने ज्योत ली व प्रसाद चढ़ाया। रात्रि में जागरण का आयोजन हुआ, जिसमें सुजानगढ़, छापर व स्थानीय गायक कलाकारों ने भजनों की प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर देवकीनंदन रिणवां, प्रमोद रिणवां, लालचंद कटारिया, मेगराज, भंवरलाल, पप्पू, ओमप्रकाश कसाना, कमल, राजकुमार कसाना, महेंद्र, हरिप्रसाद डोई, राजकुमार डोई, रिंकू, रूपाराम जाट, नानू भक्त, पीथाराम गौड़, रूकमानंद गौड़, गजानंद गौड़, अमरचंद, बैगाराम गौड़, राजकुमार प्रजापत, लक्ष्मीनारायण जांगिड़, राजकुमार स्वामी, देवकी सारस्वत, सांवरमल तंवर, विनोद तंवर, नथुराम तंवर सहित कई लोग उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने आसपालसर फार्मर रजिस्ट्री शिविर का किया निरीक्षण

किसानों का डिजिटल डाटाबेस बनेगा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के आसपाससर गांव में बुधवार को फार्मर रजिस्ट्री शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में एग्रीस्टैक योजना के तहत किसानों का डिजिटल डाटाबेस तैयार किया जाएगा। शिविर का बुधवार को जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा ने निरीक्षण किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने किसानों को बताया कि इस योजना से किसानों को फसल बीमा और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए बार-बार सत्यापन या रजिस्ट्रेशन नहीं कराना पड़ेगा। यह योजना केंद्र सरकार की डिजिटल कृषि पहल का हिस्सा है। इसमें हर किसान को 11 अंकों की फार्मर आईडी दी जाएगी। योजना के तहत किसान का नाम, पिता का नाम, खेत का खसरा नंबर, मोबाइल और आधार नंबर जैसी जानकारी एकत्र कर फार्मर रजिस्ट्री आईडी तैयार की जाएगी। सरदारशहर उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत आसपालसर में तहसीलदार रतनलाल मीणा, नायब तहसीलदार प्रहलादराय पारीक, गिरदावर मनफूल सारण, डॉ प्रवीण शर्मा, ख्यालीराम सांडेला, सरपंच मनीराम मेघवाल आदि उपस्थित रहे। एसडीएम डॉ दिव्या चौधरी ने बताया कि इन शिविरों का उद्देश्य कृषि और संबंधित विभागों के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (एग्रीस्टैक) उपलब्ध कराना है। प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर सुबह 9.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक शिविर लगेगा। उन्होने बताया कि यह शिविर 5 फरवरी से 30 मार्च तक अलग-अलग ग्राम पंचायतों में लगेगें। पंचायत क्षेत्र के किसान यहां अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। डिजिटल डाटाबेस बनने के बाद किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि की किस्त आसानी से मिलेगी। फसल बीमा का लाभ और खराबे की स्थिति में किसानों का चिन्हीकरण भी सरल होगा। न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद के लिए किसानों का स्वत रजिस्ट्रेशन हो जाएगा। अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए भी बार-बार सत्यापन की जरूरत नहीं होगी। एग्रीस्टैक योजना के तहत फार्मर रजिस्ट्री आईडी बनाने के लिए किसानों को आधार कार्ड, जमाबंदी और आधार लिंक मोबाइल नंबर जैसे दस्तावेज शिविर में लाने होंगे। इन दस्तावेजों के बिना आईडी नहीं बन पाएगी।

देव जन्मोत्सव में सर्वसमाज की हो भागीदारी होः किलक

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। लोक देवता भगवान श्री देवनारायण भगवान का 1113वां जन्मोत्सव पथिक सेवा आश्रम संस्था में मनाया गया। कार्यक्रम में बतौर अतिथि पधारे राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र किलक, साहित्यकार डॉ घनश्याम नाथ कच्छावा, शिक्षाविद रतन सेन, पथिक सेना संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष महावीर पोसवाल ने भगवान की ज्योत जला कर महाआरती की। कार्यक्रम में पोसवाल ने देवनारायण के अवतरण ओर उनके दिए सन्देश पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने ग्यारहवीं सदी में नशा, सतीप्रथा व छुआछुत के खिलाफ और गाय, पर्यावरण और आयुर्वेद के सन्दर्भ में बड़े काम किए। प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्र कीलक ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान देव के अद्भुत पर्चे हैं, जाट समाज के साथ 36 बिरादरी इनको मानती है, वर्तमान परिपेक्ष में इनकी गाथा फड़ सार्वजनिक स्थानों पर सर्वसमाज की तरफ से रखी जाए, तो आम जन तक उनके सन्देश पहुंचेगे। शिक्षाविद रतन सेन ने कहा कि देव के सन्देश महान हैं, यदि ये सरकारी पाठ्यक्रम में शामिल हों और स्कूल स्तर पर इनकी जयन्ती मनाई जावे, तो बुराइयों पर रोक लगाना बच्चे बाल्यकाल से सीख सकते हैं। कार्यक्रम में समाजसेवी भगवान घोड़ेला, श्रवण भार्गव, लालचंद गुर्जर, बंशीलाल पोसवाल, कैलाश पारीक, प्रताप मासी, गिरधारी कसाना, मांगीलाल स्वामी, सुरेश प्रजापत, मुकेश पोसवाल, गौरव गुर्जर, भीमचन्द सेन, मांगीलाल, शंकर तंवर, आसुलाल प्रजापत, कैलाश रावत, सुभम पोसवाल सहित बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने ज्योत में आहुति दे भगवान को नमन किया। इस अवसर पर खीर का प्रसाद वितरण किया गया।

चोरी और सीना जोरीः चोरी करते पकड़ा तो कर डाली मारपीट

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर के वार्ड संख्या 36 में मारपीट के परस्पर मुकदमे मंगलवार को दर्ज हुए हैं। पुलिस ने बताया कि किरणदेवी पत्नी भवानीशंकर प्रजापत ने लिखित रिपोर्ट दी कि मंगलवार की शाम उसके घर में एक महिला संजू पत्नी कान्हा चोरी के उद्देश्य से घुस गई। जैसे ही संजू को देखा, तो वह उसकी ओर झपटा मारकर सोने की चैन तोड़कर भागने लगी। पड़ौसी घनश्याम पुत्र पवनकुमार शर्मा ने उसे देख लिया, तो पीछे भागकर उसे पकड़ लिया। जब वह छुड़ाकर भागने लगी, तो उसका पति कान्हा व उसके साथ गोपी, विनोद व 15 से 20 लोग एकत्रित हो गए और उसके साथ मारपीट की और सोने की चैन खुर्द-बुर्द कर दी और कान की बाली भी तोड़ ली। शोर सुनकर मोहल्ले के लोग एकत्रित हो गए तथा बीच बचाव कर उसे छुड़ाया। परस्पर मुकदमा दर्ज करवाते हुए संजू ने रिपोर्ट दी है कि वह गौरीसर में सफाई का कार्य करती है। मंगलवार की शाम चार बजे वह गौरीसर से रतनगढ़ आ गई। चुंगी बस स्टैंड पर उतरकर अपने घर जा रही थी। जब किरण प्रजापत के घर के पास पहुंची, तो उसका पालतु कुत्ता उसके पीछे दौड़ा। जब उसने सड़क के किनारे पड़े पत्थर को बचाव के लिए कुत्ते की तरफ फैंका, तो इतने में ही किरण प्रजापत व चार-पांच अन्य महिलाएं आ गई और उसे जाति सूचक गालियां दी और मारपीट की। शोर मचाने पर उसका पति कन्हैयालाल व जेठ का लड़का रवि गोपीकिशन व अन्य लोग मौके पर पहुंचे, तो इनके साथ भी मारपीट की। पुलिस ने विभिन्न धाराओं में परस्पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

श्री श्याम नेचुरोपैथी व फिजियोथेरेपी सेंटर का शुभारम्भ

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। नया बास में बुधवार को श्री श्याम नेचुरोपैथी व फिजियोथेरेपी सेन्टर का शुभारम्भ पूलासर धाम के श्याम पारीक व भाजपा जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आगंतुक अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष शर्मा ने कहा कि इस प्रकार के सेन्टर से चूरू में रोगियों को न केवल रोगों से छुटकारा मिलेगा। वहीं चूरू वासियों को अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिये एक नया प्लेटफार्म मिलेगा। वर्तमान समय में प्राकृतिक चिकित्सा अत्यधिक कारगर सिद्ध हो रही है। सेंटर के संचालक डॉ. सज्जन जांगिड़ ने बताया कि विभिन्न प्रकार के रोगों का प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से सफलता पूर्वक ईलाज किया जायेगा। चिकित्सा व फिजियोथेरेपी की अत्याधुनिक तकनिकी मशीनों से कमर, गर्दन, घुटनों के दर्द व टेनिस एल्बो जैसे अनेक प्रकार की बीमारियों का इलाज पूर्ण संतुष्टि के साथ किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसमें हिजामा थैरेपी, स्टीम थैरेपी, कांसी थाल, वेक्स बाथ, पोटली मसाज, मिट्टी लेपन सहित अनेक प्रकार की पद्धति से मरीजों का इलाज किया जाएगा। सेन्टर के सहायक रोहित जांगिड़ ने बताया कि प्राकृतिक चिकित्सा के लिए चूरू से बहार नहीं जाना पड़ेगा। ये सभी सुविधाएं चूरू में मिलेगी। इस अवसर पर सत्य नारायण सैनी, लक्ष्मण सिंह राठौड़ चलकोई, सुरेश रक्षक, नीरज रोलीवाल, देवकीनंदन स्वामी, दिलीप जांगिड़, डॉ. आशोक शर्मा, अरविन्द एडवोकेट, लिखमी चंद प्रजापत, राजपाल जांगिड़ सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महेंद्र जांगिड ने किया।

शाकद्वीपीय मग ब्राह्मण समाज ने मनाई सूर्य सप्तमी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय नयाबास स्थित खांडल विप्र मंडल भवन में गत रात्रि को सूर्य सप्तमी महोत्सव के तहत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतिभा सम्मान समारोह व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित हुए। योगिता व मानवी की ओर से प्रस्तुत गणेश वंदना, भगवान भास्कर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन से आरम्भ हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता सुमित्रा देवी भोजक ने की। वहीं मुख्य अतिथि दानमल शर्मा व विशिष्ट अतिथि रमाकांत सेवग रहे। आयोजन में शिक्षा सत्र 2023 -24 में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले 23 प्रतिभावान विद्यार्थियों को आदर्श खेल प्रशिक्षक दीनाराम शर्मा की स्मृति में उनके पुत्र समाजसेवी गिरधर शर्मा के सौजन्य से स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रतिभाशाली विद्यार्थी शिवांगी, रिया, निश्चल, गुंजन, पूर्वी, सावी, मानवी,लक्ष्य, यश, योगिता, हिमानी,यतिका, चंचल, उत्कर्ष, प्रिंस,शताक्षी, मान्यता, विनय, सिद्धार्थ, नितिन, अनमोल, हर्षित, गुंजन सम्मानित हुए। सांस्कृतिक आयोजन के तहत एकल नृत्य में गुंजन व बीजू, सामूहिक नृत्य प्रस्तुति में शताक्षी, मान्यता, शावी, उत्कर्ष, उर्वी, शिवांगी, कविता पाठ प्रस्तुति में सिद्धार्थ विनय, उत्कर्ष, सावी, यतिका हिमांश को डॉ कृष्ण गोपाल- नीरजा शर्मा के सौजन्य से उनके पुत्र मोहित शर्मा की स्मृति में पुरस्कृत किया गया। खेल व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को शिक्षक स्व. सांवरमल भोजक की स्मृति में उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सीता देवी भोजक के सौजन्य से पुरस्कृत किया गया। इससे पूर्व मुख्य यजमान गिरधर प्रकाश भोजक सपत्नीक सहित समाज के दम्पति, जोड़ो ने पंडित सुभाष के सानिध्य में हवन कुंड मे समाज के सुख- समृद्धि व उत्थान के लिए आहुतियां दी। समाज के महिला पुरुषों की ओर से सूर्य अर्ध्य व सूर्य नमस्कार का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। आयोजन को सफल बनाने में गिरधर भोजक, लक्ष्मी प्रकाश, मनीष, योगेन्द्र, दुर्गेश, कालीचरण, जितेंद्र भोजक आदि समाजबंधुओं ने योगदान दिया। संचालन वीणा भोजक व अशोक भोजक ने किया।

जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर के वार्ड संख्या दो में जरूरतमंद लोगों को कंबलों का वितरण बुधवार को किया गया। सरिता पड़िहार ने अपनी मां दुर्गादेवी व पिता हजारीलाल की स्मृति में जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित की। पड़िहार ने 50 जरूरतमंद लोगों को कंबलों का वितरण किया। इस अवसर पर मगन कंवर, कस्तूरी देवी, सानू देवी, अजीज बानो, समन देवी, नाजिया, मंजू देवी, शबिना बानो, आयशा बानो सहित कई लोग उपस्थित रहे।

प्राचार्य डीपीसी में वंचित वरिष्ठ कार्मिकों को न्याय दिलाने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। प्राचार्य संघर्ष समिति की ओर से धर्मसिंह मीणा के नेतृत्व में निवाई-पीपलू के भाजपा विधायक रामसहाय वर्मा को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नाम ज्ञापन सौंपकर न्याय दिलाने की मांग की गई है। ज्ञापन में मांग की गई है कि आरक्षित वर्ग के वरिष्ठ कार्मिकों को पदौन्नति से वंचित कर सामान्य वर्ग के कनिष्ठ कार्मिकों का चयन किया गया है। जिसके कारण एसी के 385 व एसटी के 156 वरिष्ठ कार्मिक पदौन्नति से वंचित रह गए है। इन वरिष्ठ कार्मिकों को पदौन्नति चयन सूची में शामिल करने की मांग मुख्यमंत्री से की गई है। ज्ञापन में संघर्ष समिति ने उल्लेख किया है कि अभी हाल में आरपीएससी अजमेर की ओर से 17 जनवरी 2025 को उप प्राचार्य से प्राचार्य डीपीसी 2023-24 की सूची जारी की गई है, जिसमें कुल 5012 उप प्राचार्य को प्राचार्य के पद पर पदौन्नत किया गया है। जिसमें अंतिम क्रम संख्या 5005, अंतिम वरिष्ठता क्रमांक 7851 तक, सामान्य वर्ग के 3746, क्रम संख्या 3830, वरिष्ठता क्रमांक 6119 तक एससी के 680 और क्रम संख्या 4249 वरिष्ठता क्रमांक 6684 तक एसटी के 586 का चयन किया गया है। जबकि निर्धारित आरक्षित 16 प्रतिशत अनुपात से एससी के 802 से अधिक और एसटी के 12 प्रतिशत अनुपात से 601 से अधिक प्रधानाचार्य/प्राचार्य के पद पर चयन होना चाहिए था। संघर्ष समिति के धर्मसिंह मीणा ने बताया की 5551 की पात्रता सूची में से कुल एससी के 1035 और एसटी के 742 से अधिक उप प्राचार्यों की पदौन्नति प्रधानाचार्य के पद पर होनी चाहिए थी। प्राचार्य डीपीसी 2023-24 की पात्रता सूची में सम्मिलित कुल 5551 कार्मिकों में से 5551 तक सामान्य वर्ग के सभी पात्र 3746 कार्मिकों को पदौन्नत कर दिया गया है। जबकि एससी- के 680 और एसटी के 586 कार्मिकों को ही पदौन्नत किया गया है और सामान्य से वरिष्ठ एसी-एसटी के कार्मिकों को पदौन्नति वंचित कर दिया गया है। इसके लिए संघर्ष समिति ने अब तक शिक्षा मंत्री, शिक्षा सचिव, अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को ज्ञापन सौंपकर एससी-एसटी के पात्र वरिष्ठ कार्मिकों को पदौन्नति में शामिल करने की मांग की है। संघर्ष समिति के प्रतिनिधि मंडल में चुरू जिला सह संयोजक धर्मसिंह मीणा, दौसा जिला सह संयोजक अशोक कुमार बैरबा, सवाई माधोपुर जिला सह संयोजक नेमराज बाकोलिया, अलवर से गायत्री व जितेन्द्र कुमार, सुजानगढ से भोमाराम मीणा सहित अनेक जिलों से आये कार्मिक मौजूद रहे। विधायक वर्मा ने निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी से बात की और समस्या के समाधान का भरोसा दिलाया।

CMYK

चूरू के पवन तंवर बने वरिष्ठ संयुक्त विधि परामर्शी

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जल संसाधन विभाग में संयुक्त विधि परामर्शी के पद पर पदस्थापित चूरू के पवन कुमार तंवर ने बुधवार को जयपुर शासन सचिवालय में बतौर वरिष्ठ संयुक्त विधि परामर्शी कार्यभार ग्रहण किया। उल्लेखनीय है कि मंगलवार रात्रि को विधि व विधिक कार्य विभाग के प्रमुख शासन सचिव बृजेन्द्र जैन की ओर से जारी आदेश के अनुसार पवन तंवर सहित 7 संयुक्त विधि परामर्शी को वरिष्ठ संयुक्त विधि परामर्शी पर पर पदोन्नत किया गया है। विधि सहायक के तौर पर अपना कैरियर शुरू करने वाले पवन तंवर राज्य के अनेक जिलों में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। तंवर की पदोन्नति पर उनके शुभचिंतकों, मित्रों, परिजन व अधिकारियों ने प्रसन्नता जाहिर की है।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका आज सालासर आएंगे

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका गुरुवार को सालासर आएंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राज्यपाल डेका गुरुवार को दोपहर 01 बजे सीकर सर्किट हाउस से प्रस्थान कर दोपहर 2 बजे सालासर बालाजी मंदिर पहुंचेंगे। सालासर बालाजी मंदिर में दर्शन कर लंच के बाद सांय 3.30 बजे सालासर गौशाला में गौ पूजा व गायों को चारा खिलाने के बाद सांय 3.40 बजे महरिया फार्म, लक्ष्मणगढ़, सीकर के लिए प्रस्थान करेंगे।

स्पोर्टस मीट विजेताओं सम्मानित

जयपुर टाइम्स

बिसाऊ(निस)। न्यू राजस्थान पब्लिक स्कूल बिसाऊ में आज स्पोर्टस मीट प्रतियोगिता जिसमें अंडर 16 व 18 वर्ग में एथेलेटिक्स (100, 200 मीटर दौड)जैवलिन थ्रो आदि प्रतियोगिता में विजेताओं को सम्मानित किया। इस मौके पर संस्था निदेशक डॉ प्रताप सिंह ने बताया कि विद्यालय में न्यू राजस्थान पब्लिक स्कूल में सुबह व सायंकाल में स्पोर्टस एकेडमी में बच्चे तैयारी करने आते है। इस मौके पर प्रधानाचार्या भंवरी शर्मा ने बताया कि विद्यालय के साथ स्पोर्टस एकेडमी भी संचालित की गई है। इस मौके पर शारीरिक शिक्षक सुरेन्द्र कुमार, कॉच रणजीत सिंह, रमेश कुमार, ओमप्रकाश, शैलेन्द्र, राकेश सैनी, विकास जांगीड,अरुण जांगीड, भरत कौशिक आदि मौजूद रहे।

नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय वार्ड 28 स्थित संतोष भवन में बुधवार को नवनिर्वाचित भाजपा जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा का भव्य अभिनंदन किया गया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने मार्ल्यापण कर, षॉल ओढ़ाकर, साफा पहनाकर, मिठाई खिलाकर व आतिशबाजी कर स्वागत किया गया। विकास बांठिया ने बताया कि इस अवसर पर जिला महामंत्री अभिषेक चोटिया, भाजपा नेता सुरेश सारस्वत व दीनदयाल सैनी का भी स्वागत किया गया। इस दौरान हुकमीचन्द लोहिया, विमल चमड़िया, सुभाष चुलेट, मेहनलाल पूर्वा, अफजल गौरी, सुरेश मिश्रा, गिरधारी शर्मा, कमल शर्मा, नवरतन कोठारी, जाकीर गौरी, बुलजी शर्मा, राकेश ओझा, नितेश कुमावत, राकेश शर्मा, संदीप जैन, रधुनाथ खेमका, एडवोकेट अभिषेक सैन, ज़ानराम सुराणा, कमल कोठारी, श्रवण शर्मा महेश शर्मा, पंकज बिहाणीवाला, दिनेश शर्मा, लोकेश पूर्वा, सुनील जालान, रामावतार लोहिया, मुकेश महर्षि, विनोद नाई, जयपाल सिंह टकणेत, राजू ओझा, छोटू नाई ने मार्ल्यापण कर नव नियुक्त जिलाध्यक्ष का स्वागत किया। इस अवसर पर सभी कार्यकर्ताओं ने प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण व जिले के जन प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर बसंत शर्मा ने कहा कि प्रदेश नेतृत्व ने मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी है। मैं उसे सब को साथ लेकर बखूबी निभाउंगा। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर सुमन सैन, सुनिता कालोया, करिश्मा सैन, चंदा सेन, रेखा सेन, विनीत सुराणा, केशरदेव तंवर, कमल शर्मा सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सुजानगढ़ का अजब- गजब बाबूजी बना चर्चा का विषय

सहायक लेखाधिकारी सीबीईओ कार्यालय में ज्वाइनिंग की बजाय अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण के लिए पहुंच गया नगर परिषद

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। एक सहायक लेखाधिकारी को अगर शिक्षा विभाग में लगाया जाता है, तो वहां पर पद का कार्यभार ग्रहण करने की बजाय सीधे ही वह अतिरिक्त कार्यभार को ग्रहण करने के प्रति अपनी रूचि दिखाते हुए वहां कार्यभार ग्रहण करने पहुंचा है, जो यह सुनने में अजीब तो लगता ही है, साथ ही साथ हास्यास्पद भी लगता है। लेकिन सुजानगढ़ में यह गजब का कारनामा साकार रूप लेता नजर आया है। जी हां हम बात कर रहे हैं, सुजानगढ़ के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में लगाए गए सहायक लेखाधिकारी प्रथम रतनलाल मेघवाल की। जिनको निदेशक कोष व लेखा राजस्थान की ओर से 15 जनवरी 2025 को क्रम संख्या 177 के जरिये जारी आदेश से सीबीईईओ ऑफिस में लगाया गया था। लेकिन उन्होंने आज तक सीबीईईओ कार्यालय में अपने पद का कार्यभार ग्रहण नहीं किया, जिसके चलते इस कार्यालय में पेंशन, समसा आदि से सम्बंधित सारे काम रूके हुए हैं।

अतिरिक्त कार्यभार लेने पहुंचे नगरपरिषद

हालांकि सहायक लेखाधिकारी प्रथम रतनलाल मेघवाल ने सीबीईईओ कार्यालय में अपना कार्यभार ग्रहण नहीं किया, इसी दौरान चूरू जिला कलक्टर ने एक आदेश जारी कर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सुजानगढ़ के कार्यालय के साथ अतिरिक्त कार्यभार देते हुए नगरपरिषद कार्यालय सुजानगढ़ का लेखाधिकारी भी लगा दिया। लेकिन रतनलाल मेघवाल इतने चतुर निकले कि जहां शिक्षा विभाग में लगाया गया था, वहां उन्होंने जोईन नहीं किया। सीधे ही नगरपरिषद आयुक्त के पास जाकर कार्यभार ग्रहण करने का प्रार्थना पत्र दे दिया। इस बारे में सभापति निलोफर गौरी ने बताया कि दो दिन पहले ही रतनलाल मेघवाल ने कार्यभार संभाल लिया है। जबकि नियमानुसार रतनलाल मेघवाल शिक्षा विभाग के कार्यालय में जोईन किए बिना, नगरपरिषद का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण नहीं कर सकते। इस बारे में खुद रतनलाल मेघवाल से बात करने पर उन्होंने कहा कि मैंने शिक्षा विभाग में पद का कार्यभार नहीं संभाला है, मैं तो सीधा सीडीपीओ ऑफिस से आया हूं, मेरे लिए जो आदेश जिला कलक्टर ने जारी किए हैं, उनमें स्थानान्तरणाधीन लिखा होना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं है, परन्तु इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। दूसरी ओर बुधवार की शाम को जब इस बारे मुख्य ब्लॅाक शिक्षा अधिकारी सुजानगढ़ सुनीता पूनिया से बात की गई, तो उन्होंने बताया कि सहायक लेखाधिकारी रतनलाल ने अब तक जोईन नहीं किया है। वहीं जानकारी के अनुसार जिला कलक्टर की ओर से रतनलाल मेघवाल को अतिरिक्त कार्यभार दिए जाने के आदेश सामने आते ही सीबीईईओ की ओर से इस बारे में चूरू जिला कलक्टर को सूचना दे दी गई थी। लेकिन फिर भी सहायक लेखाधिकारी प्रथम की ओर से सीबीईईओ ऑफिस में कार्यभार ग्रहण करने की बजाय सीधे ही नगरपरिषद में कार्यभार ग्रहण किया गया, जो इन दिनों राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय भी बन गया है। हालांकि रतनलाल मेघवाल गोल मोल बातें करते नजर आए और उन्होंने पहले तो कहा कि मैंने कल जोईन कर लिया था, फिर कुछ देर बाद कहा कि मैंने आयुक्त साहब के पास प्रार्थना पत्र दिया है। दूसरी ओर रतनलाल मेघवाल नगरपरिषद परिषद में लेखाधिकाररी की कुर्सी पर भी दिनभर आराम से लोगों से मिलते नजर आए। देखने वाली बात ये है कि क्या एक कर्मचारी के लिए सरकारी नियम कादये कोई मायने नहीं रखते।

किसान जागरूक होकर सरकार की योजनाओं का लाभ उठाएंः सुराणा

जिला कलक्टर ने फॉर्मर रजिस्ट्री शिविर का किया अवलोकन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस) जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने बुधवार को जिले की रतनगढ़ तहसील के हुडेरा अगुणा व सरदारशहर तहसील की आसपालसर बड़ा ग्राम पंचायत में एग्रीस्टैक योजना अंतर्गत आयोजित फार्मर रजिस्ट्री शिविर का अवलोकन किया। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप किसान जागरूक होकर सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाएं। प्रदेश सरकार की मंशानुरूप प्रत्येक ग्राम एग्रीस्टैक योजना अंतर्गत शिविरों में किसान अपनी फार्मर आईडी बनाएं व विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी भी प्राप्त करें। सुराणा ने कहा कि मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना में पशुपालक आवेदन कर अपने पशुधन का बीमा करवाएं। योजनांतर्गत आवेदन पूर्णतया निःशुल्क है और आवेदन की अंतिम तिथि 11 फरवरी है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि किसानों को शिविरों की समुचित जानकारी दी जाए व प्रयास करें कि शिविरों के दौरान आने वाले किसानों से उनकी समस्याएं भी सुनें व निस्तारण के प्रयास करें। उन्होंने ग्रामीणों को फार्मर रजिस्ट्री के उपयोग व महत्व, ठोस व तरल कचरा प्रबंधन, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना, आभा आईडी, डिजीटल सखी, कोड चूरू सहित जिले में चल रहे नवाचारों के बारे में ग्रामीणों को जानकारी दी और शिविर में किसानों को फार्मर रजिस्ट्री सत्यापन प्रमाण -पत्र प्रदान किए। हुडेरा अगुणा में एसडीएम रामकुमार वर्मा ने व्यवस्थाओं की जानकारी देते हुए किसानों को शिविरों व योजना के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस दौरान तहसीलदार सज्जन कुमार लाटा, बीडीओ जगदीशप्रसाद व्यास, सरपंच अनिता सोढ़ा, पंचायत समिति सदस्य बाबूलाल, सहायक विकास अधिकारी दिलीप कुमार सोनी, भू-अभिलेख निरीक्षक संजय कुमार जोशी, ग्राम विकास अधिकारी मुकेश कुमार स्वामी, पटवारी पन्नालाल, कनिष्ठ सहायक राजूराम श्योराण सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। आसपालसर बड़ा में तहसीलदार रतनलाल मीणा ने व्यवस्थाओं की जानकारी दी। इस दौरान नायब तहसीलदार प्रहलाद पारीक, बीडीओ महेन्द्र, डॉ प्रवीण सहित अधिकारी उपस्थित रहे।

मूंगफली तूलाई का समय बढ़ाने की मांग, किसानों ने किया प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के कृषि उपज मंडी में चल रही समर्थन मूल्य पर मूंगफली तुलाई का समय बढ़ाने की मांग को लेकर किसान नेता बीरबल नाथ सिद्ध और दौलत राम सारण के नेतृत्व में बड़ी संख्या में किसानों ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। किसान दौलतराम सारण ने बताया कि कृषि उपज मंडी में सरकार की ओर से समर्थन मूल्य पर मूंगफली की खरीद की जा रही है। बाजार भाव से किसानों को प्रति क्विंटल करीब 2 हजार रुपये का फायदा होने के चलते किसान समर्थन मूल्य पर मूंगफली बेचकर खुश नजर आ रहे हैं। लेकिन अगर तुलाई का समय नहीं बढ़ाया गया तो करीब 2000 किसान तुलाई से वंचित रह जाएंगे और उन किसानों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ेगा। कृषि उपज मंडी व्यापार मंडल मंत्री श्यामलाल तावनिया ने बताया कि कुल 6 हजार 520 किसानों ने मूंगफली तुलाई के लिए पंजीयन करवा रखा है। अब तक कुल करीब 3500 किसानों की मूंगफली तूलाई हो पाई है। सरकार की ओर से समर्थन मूल्य पर तुलाई की अंतिम 18 फरवरी है। 18 फरवरी तक करीब 4500 किसानों की ही मूंगफली तुलाई हो पाएगी। ऐसे में करीब 2 हज़ार किसान मूंगफली तुलाई करवाने से वंचित रह जाएंगे और किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ेगा। किसान नेता बीरबलनाथ सिद्ध ने बताया कि सरकार की ओर से प्रति किसान 40 क्विंटल मूंगफली की खरीद की जा रही है और किसान को समर्थन मूल्य पर 6 हजार 783 रुपए प्रति क्विंटल मिल रहे हैं। ऐसे में किसान को बाजार भाव से 2 हज़ार रुपये प्रति क्विंटल का फायदा हो रहा है। किसानों के हित को देखते हुए सरकार को समर्थन मूल्य पर तुलाई का समय बढ़ाना चाहिए ताकि वंचित किसान आराम से अपनी मूंगफली तुलाई करवा सके। बता दे कि तुलाई के बीच में काफी दिन तक वारदाना नहीं आने के चलते तुलाई का कार्य ठेकेदार को बंद करना पड़ा था। जिसके चलते समय पर तुलाई का कार्य नहीं हो पाया। वहीं अब भी प्रतिदिन करीब करीब 200 किसानों की मूंगफली तुलाई का कार्य चल रहा है। किसानों की मांग है कि सरकार मूंगफली तुलाई के समय को बढ़ाएं अन्यथा किसान मजबूरन आंदोलन करने को मजबूर होगा।

धरना प्रदर्शन कल, रणनीति तैयार, पोस्टर का विमोचन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर अपनी 11 सूत्री मांगों को लेकर प्रदेश भर में 7 फरवरी को प्रदेश के प्रत्येक जिला मुख्यालय पर आयोजित किए जाने वाले धरना प्रदर्शन को लेकर बैठक की गई। महासंघ के जिलाध्यक्ष रिछपाल सिंह चारण ने बताया कि आज राजकीय डीबी चिकित्सालय चूरू में 7 फरवरी को आयोजित होने वाले धरना प्रदर्शन को लेकर रणनीति तैयार की गई व महासंघ की 11 सूत्री मांगों को लेकर पोस्टर का विमोचन किया गया। महासंघ के जिला महामंत्री फूलेसिंह बुरड़क ने बताया कि बैठक में अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर आपनी योजना चूरू स्थित जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के सामने 7 फरवरी को धरना प्रदर्शन किया जाएगा प्रदर्शन को सफल बनाने पर विचार विमर्श किया गया। राजस्थान नर्सिंग एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष सुमेर सिंह ने बताया कि 7 फरवरी को धरना प्रदर्शन के साथ ही 11 सूत्री मांगों पर चर्चा हुई। इस दौरान धरने को सफल बनाने के लिए पोस्ट का विमोचन किया गया। महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल वर्मा, बाबू खां, प्रमोद शर्मा, ने महासंघ की 11 सूत्री मांगों को लेकर महासंघ से संबद्धता प्राप्त घटक संगठनों से धरने में शामिल होने की अपील की। इस अवसर पर राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के जिला कोषाध्यक्ष रामगोपाल, नर्सेज एसोसिएशन के जिला कार्यकारी अध्यक्ष महेंद्र भामू, नर्सिंग आफिसर संदीप भाकर, संदीप डेडवाल, रोहिताश रणवां, महासंघ की जिला कार्यकारिणी के सदस्य प्रदीप चौधरी, पन्नालाल आदि एवं विभिन्न संगठनों से जुड़े पदाधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीकर में पत्रकार पर हमले का विरोध पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन राजस्थान ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर अर्पिता सोनी के माध्यम से मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा को पत्र भेजकर सीकर में देर रात्रि को पत्रकार अजय कुमार डारा पर हमला करने वालों को तुरंत गिरफ्तार करके कठोर कार्यवाही करने और शीघ्र ही पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग की है। यहां मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन राजस्थान के प्रदेश उपाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि चौथे स्तंभ पर हमला कतई बर्दाश्त नहीं होगा, पुलिस हमलावरों को तुरंत गिरफ्तार करे। शेखावत ने कहा कि राजस्थान सरकार को चाहिए कि शीघ्र ही पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करे। ताकि इस प्रकार आए दिन पत्रकारों के साथ हो रही घटनाओं पर अंकुश लग सके। शेखावत ने कहा कि गाँव देहात की रूह से निकल कर बिना किसी के दबाव के स्वच्छ पत्रकारिता करने वाले पत्रकार पर रात्रि के समय हमला करके डराने की कोशिश करना बहुत ही शर्मनाक व निंदनीय है। अब सरकार पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने में देर न करे।

राठौड़ के निवास पर नवनियुक्त जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा का स्वागत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अख्तर खान के नेतृत्व में नव नियुक्त जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा का चुनरी व शॉल ओढाकर सम्मान किया। इसी क्रम में जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा ने बताया कि मेरे लिए यह बड़े ही सौभाग्य की बात है कि अल्पसंख्यक समाज जो हमेशा मेरे साथ जुड़ा हुआ है और आज मेरा जिलाध्यक्ष बनने पर सम्मान कर रहे है। भारतीय जनता पार्टी सदैव 36 कोम व बिरादरी को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। उन्होने पूर्व नेताप्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ का जिक्र करते हुए बताया कि वोट मिले या ना मिले लेकिन राठौड़ हमेशा अल्पसंख्यक हितो के बारे में सौचते है। हमेशा उन्हे हमेशा विकास की भागीदारी का कार्य किया है। उन्होने पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन व एपीजे अब्दुल कलाम को महान बताया उन्होने बताया कि भारतीय जनता ने एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाकर अल्पसंख्यक समाज को हमेशा आगे रखा। बसंत शर्मा ने बताया में सदैव अल्पसंख्यक समाज का आभारी रहुगा जो मुझे आज मान सम्मान दिया है। उन्होने बताया कि आने वाले चुनावो नगरपरिषद् चूरू में अल्पसंख्यक समाज की भागीदारी रहे, ऐसी आशा करता हूॅ। अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अख्तर खान ने बताया कि मैंने हमेशा बसंत शर्मा के काम करने की लगन को देखा है और उन्होने कभी भी जाती बिरादरी की बात नही क, हमेशा हर वर्ग को साथ लेकर चलते है में शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करता हूॅ कि उन्होने बसंत शर्मा को पुनः जिलाध्यक्ष बनाकर हमारे बीच में भेजा हैं, हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है और इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करेगे। कार्यक्रम में मोर्चा के प्रभारी हाजी अब्दुल हबीब धांधू, मोर्चा के सहप्रभारी असगर अली जोईया, मोर्चा के संयोजक हाजी सरीफ सोलंकी, आमीन खांन एलमाण, उत्तर व दक्षिण के मण्डल अध्यक्ष बाबू टेलर व इरशाद भाटी, रमजान खां जोईया, रमजान खान बिजली विभाग, पूर्व पार्षद बाबू इस्मायल, सराफत अली खान एलमोण आदी ने कार्यक्रम में संबोधित किया। इस कार्यक्रम में जिला मीडिया सहसंयोजक नीरज जांगिड़, मोर्चा के महामंत्री साजीद तुगलक, इमरान खांन दिलावरखानी, उपाध्यक्ष अजीज खांन सलेमखानी, असरफ गोरी, हमीद गोरी, अदरीश सोलंकी, दाउद थीम, सलीम गोरी, सलीम खिलजी रतननगर, अनवर खिलजी रतननगर, हमीब डायर, मांगू खां, मौसिन काजी, समीर भाटी, मोनू सामदखानी, महबूब डायर, मुस्ताक लुहार, आमीन काजी, सिकन्दर लुहार, सरवर खांन, फरीयाद दौलतखानी सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।

CMYK